मुस्लिम तंत्र

तांत्रिक 'बहल'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بسم الله الرحمن الرحيم





मुस्लिम तन्त्र

यह एक आम विश्वास है कि हमारे वैदिक मन्त्र कीलित हैं, इसलिए इन्हें प्रयोग में लाने से पूर्व इनका उत्कीलन आवश्यक होता है। लेकिन इस्लामी मन्त्र कीलित नहीं हैं, इसलिए इनके उत्कीलन की बिल्कुल आवश्यकता नहीं होती है। इस्लामी मन्त्र की प्रमुख भाषा अरबी अथवा फारसी होती है। यह भाषा उच्चारण में तो क्लिष्ट हो सकती है, लेकिन इसका प्रयोगात्मक रूप एकदम सरल और शीघ्र प्रभावी है।

रोजमर्रा की जिन्दगी में आप भी इस तन्त्र से लाभ उठायें। इसी उद्देश्य को लेकर सुप्रसिद्ध लेखक ''तांत्रिक बहल'' ने यह ''मुस्लिम तन्त्र'' आपके लिए प्रस्तुत की है।

अल्लाह के रहम-ओ-करम पर भरोसा रखने वालों और नेक-नीयत से खुदा के बंदों की खिदमत करने वाले इन्सानों के हाथ में ही यह इल्म (तन्त्र) मुहाफिज (सुरक्षित) रह सकता है।

रणधीर प्रकाशन की उत्कृष्ट प्रस्तुति

एक सफल और उत्कृष्ट कृति—

मुस्लिम तन्त्र

इस्लामी मन्त्रों-यन्त्रों, ताबीज और हाजरात तथा अंकों व शब्दों के पारम्परिक मुस्लिम तन्त्र प्रयोगों का संग्रह

प्रस्तुति :
तांत्रिक बहल

मूल्य : 50-00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

जम्मू विक्रेता : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

संस्करण : **सन्:2007**

मुद्रक : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

MUSLIM TANTRA

EDITED BY : TANTRIK "BAHEL"
PUBLISHED BY : RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR (INDIA)

अनुक्रमणिका

तान्त्रिक बहल की अन्य प्रसिद्ध कृतिय

- ❑ सुगम तान्त्रिक क्रियायें
- ❑ पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ
- ❑ मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनायें
- ❑ तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र (चाणक्य विरचित)
- ❑ सुखी जीवन के लिए टोटके और मन्त्र
- ❑ वनस्पति तन्त्र
- ❑ चमत्कारी मन्त्र साधना
- ❑ रत्न और रुद्राक्ष
- ❑ सौन्दर्य लहरी (हिन्दी व्याख्या व यन्त्रों सहित)
- ❑ पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें
- ❑ राशिफल और लाटरी
- ❑ शरीर लक्षण विज्ञान
- ❑ नाग और नागमणि
- ❑ हस्तरेखाओं के गूढ़ रहस्य
- ❑ हस्तरेखा देखना कैसे सीखें
- ❑ सामुद्रिक शास्त्र : पंचागुली साधना
- ❑ गोरख तन्त्र (शाबर मन्त्रों सहित)
- ❑ शरीर लक्षण विज्ञान
- ❑ तन्त्र के अचूक प्रयोग
- ❑ मन्त्र-तन्त्र द्वारा रोग निवारण
- ❑ मन्त्र साधना कैसे करें
- ❑ तन्त्र साधना कैसे करें
- ❑ चमत्कारी हिप्नाटिज्म रोगोपचार व त्राटक साधना
- ❑ गायत्री साधना (गायत्री पर एक सम्पूर्ण पुस्तक)

लेखकीय

भारतवर्ष में तन्त्र की एक विशिष्ट स्थिति है। जहाँ हिन्दू धर्म में नस्त तन्त्र-मन्त्र भगवान शंकर के मुख से अविर्भूत बतलाए गए हैं, ड़ाँ मुस्लिम तन्त्र-मन्त्र 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय हैं।'

यह एक ध्रुव सत्य है कि प्रत्येक संस्था, विद्या अथवा कार्य में भी न कभी अनधिकारी और स्वार्थी व्यक्तियों का प्रवेश हो जाता है र वे पावन उद्देश्यों से विमुख होकर अपनी रुचि अथवा दुरभि न्धियों की पूर्ति का साधन बना लेते हैं, यही बात कम या अधिक नों ही सम्प्रदायों के विद्वानों पर समान रूप से लागू होती है।

भारतवर्ष के महान् सन्तों, तान्त्रिकों, सूफियों, आलिमों ने तन्त्र-त्र, अमल को जन साधारण के लिए के लिए प्रादुर्भूत किया, जिससे ; अपनी सामान्य इच्छाओं की पूर्ति कर सके और अध्यात्म क्षेत्र थवा रूहानी क्षेत्र में कुछ उन्नति कर सके। खेद का विषय है कुछ वसायी एवं हीन मनोवृत्ति के साधकों ने इस विज्ञान में मनमाना रिवर्तन, उल-जलूल विधि विधान जोड़कर उसे जादू-टोना जैसा षय बना दिया। इतना ही नहीं कुछ कामी वृत्ति के साधकों ने इसे सना पूर्ति का साधन बनाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। तन्त्र ज्ञान में अंधविश्वास की स्थापना तक कर दी।

हमारा तन्त्र विज्ञान गीता में वर्णित 'निष्काम कर्मयोग' का समर्थन

करता है और अपने साधकों को उसी के अनुसार आचरण करने
स्पष्ट आदेश देता है। तन्त्र शास्त्र का उद्देश्य यही है कि साध
गृहस्थ में रहकर तन्त्र मार्ग को ग्रहण कर सके। तन्त्र शास्त्र साधक
कभी भी उदासीन नहीं बनाता। उसे समाज से पलायन की शिक्षा न
देता। वह तो साधना के कठोर या अस्वाभाविक विधानों को छोड़
उन विधियों को ग्रहण करने का परामर्श देता है, जो गृहस्थ जीवन
सर्वथा अनुकूल हैं। जो गृहस्थ कार्यों में बाधक न होकर सहायक

कालान्तर में कुछ तान्त्रिकों ऋषि मुनियों और आमिलों ने
साधना अथवा अमलियात में कुछ चमत्कारी शक्तियों को सम्मि
किया। शायद उनका उद्देश्य सामान्यजन को आकर्षित करना
होगा। इन चमत्कारी शक्तियों के बल पर वह श्रद्धा और विश्वास
उत्पन्न करना चाहते होंगे। पर आज स्थिति इसके एकदम विपरीत
आज सिद्धियों और चमत्कारों के चक्कर में अनेक तान्त्रिक पतन
मुख में चले गए हैं। तन्त्र के विषय में जो भ्रम समाज में फैले
उनका लाभ उठाते हुए कुछ तान्त्रिकों ने घृणित विधियों और अनैति
मार्ग को अपनाया।

मैं यहाँ महान् तान्त्रिक बाबा कीनाराम के जीवन से एक उदाह
प्रस्तुत कर रहा हूँ। आप स्वयं समझ लेंगे कि तन्त्र जनता के हित अ
सेवा के लिए ही है।

एक बार अवधूत बाबा कीनाराम एक नगर से गुजर रहे थे
के जमींदार का यह आदेश था कि जो भी किसान लगान समय
जमा नहीं करेगा उसे कोड़े लगाये जायेंगे। बाबा ने गाँव की
महिला को रोते बिलखते देखा। कारण पूछने पर पता चला कि उस
पुत्र समय पर लगान जमा नहीं कर पाया है। उसके शरीर पर अ

कोड़े पड़ेंगे। बाबा ने उस स्त्री को ढांढस दिया। बाबा तुरन्त जमींदार के पास गये और उस लड़के को क्षमा करने का निवेदन किया परन्तु जमींदार ने एक नहीं सुनी। तब बाबा पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर मन्त्रों का जाप करने लगे। जब लड़के को कोड़े मारे जाने लगे तो वहाँ उपस्थित लोगों ने देखा कि कोड़े तो उस लड़के को लगाये जा रहे थे परन्तु उनका कष्ट जमींदार को हो रहा था। जमींदार बेतरह करहाया और तुरन्त कोड़े रोकने का आदेश दिया। वहाँ उपस्थित जनता ने देखा जमींदार की पीठ पर कोड़ों के नीले निशान थे। जमींदार ने उस लड़के को क्षमा कर दिया और बाबा से अपने बुरे कर्म के लिए क्षमा माँगी। इसके साथ ही वह कुप्रथा सदैव के लिए समाप्त कर दी। यह थी बाबा कीनाराम की सच्ची जन सेवा।

आज स्थिति इसके एकदम विपरीत है। आज का तान्त्रिक लोभ और स्वार्थ के आधीन होकर तन्त्र साधना करता है। जन साधारण को बेवकूफ बनाने के उद्देश्य से रासायनिक चमत्कारों का सृजन करता है। आज का तान्त्रिक इन्हें तन्त्र का एक आवश्यक अंग बतलाता है और स्वयं को वीभत्स रूप में प्रदर्शित करना अपना धर्म समझता है।

अगर आज का तान्त्रिक वर्ग यह समझ ले कि स्थूल शरीर आज नहीं तो कल नष्ट होने वाला है। वह जो भी पाप अथवा अनाचार कर रहा है वह उसके साथ जाने वाले हैं, इन्हीं के आधार पर यमराज उसके भविष्य का निर्णय करेगा, तो अभी भी स्थिति बदल सकती है।

क्या आप जानते हैं कि संसार में शायद ही ऐसी कोई विद्या होगी जिसकी इतनी अधिक निन्दा की गयी हो। भारतीय अथवा पाश्चात्य दोनों ही विद्वानों ने तन्त्र शास्त्र की, उसमें भी विशेष रूप से शाक्त मार्ग की आलोचना की है। वाम मार्गी पतित जीवन बिताना ही अपना धर्म

समझते हैं। माँस, मदिरा, मैथुन, मीन और मुर्दे को ही तन्त्र मानते हैं इन लोगों की कामुकता पूर्ण कहानियों से सत्य कथायें भरी पड़ी हैं जब इनके पापों का पर्दा फाश होता है तो यह स्वयं को तान्त्रिक घोषित कर देते हैं।

स्वयं को तान्त्रिक घोषित करने वाले एक यह ही नहीं और भी हैं। आप कोई भी दैनिक उठा लें। विज्ञापन मिलेगा—सुप्रसिद्ध ज्योतिषी, हस्तरेखाविद्, अंक शास्त्री, 'अमुक' तान्त्रिक। कहिए पाठकों कैसी रही? है ना आपके अनुभव की बात? मैं तो कहता हूँ वह कुछ भी नहीं है। आप उनसे सावधान रहें।

एक और विद्वान् हैं श्रीमान क ख ग। पाश्चात्य विद्या और प्रगति के कट्टर प्रशंसक। अमेरिका से लेकर कनाडा तक, चीन से लेकर हाँगकाँग तक के समस्त विद्वान् उनकी अंगुलियों पर रहते हैं। क्या रखा है वाराहमिहिर के सिद्धांतों में? विदेशी सामुद्रिक शास्त्र सटीक है। देखते-देखते रातों रात नाम के पीछे 'तान्त्रिक' शब्द जुड़ गया। शुद्ध प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या के जानकार बन गये। टी शर्ट का स्थान कुर्ते ने और जीन्स का स्थान पायजामे ने ले लिया। अब स्वयं को सिद्ध तान्त्रिक बतला कर आत्मा की शान्ति प्राप्त करते हैं और सुप्रसिद्ध तान्त्रिक कहलवाकर प्रसन्न होते हैं। साधना में केवल 'लक्ष्मी साधना' करते हैं और मन्त्र जाप 'धनं देहि' का ही करते हैं।

खैर, यह तो हुई सांसारिक बात, अब मैं अपने अनुभव की बात करता हूँ। अभी कुछ समय पहले की बात है मैं अमरनाथ जी की यात्रा पर गया। चन्दनवाड़ी से कुछ आगे बर्फ पड़नी शुरू हो गई। मैं भागकर एक शिला के समीप आ गया। आश्चर्य, खुले आकाश के नीचे एक महात्मा महा साधना में मग्न थे। बर्फ के बावजूद उनकी

धूनी जल रही थी। वे बर्फ गिरने के बावजूद वहाँ से नहीं हटे। और बर्फ गिरती रहने पर भी वहीं बैठे रहे। एक चमत्कार जो मैंने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि बर्फ गिरने के बावजूद स्वामी जी की धूनी ठण्डी नहीं हो रही थी। अमरनाथ की यात्रा से लौटने पर मैंने उन्हें वहाँ नहीं पाया। यह है वास्तविक चमत्कारी साधु और साधक जिनकी आज तन्त्र विज्ञान को अत्यधिक आवश्यकता है।

प्रिय पाठको! मेरा विश्वास है आप तन्त्र ज्ञान को धनोपार्जन का साधन कभी नहीं बनायेंगे और इनके संवर्धन के लिए सदैव लगे रहेंगे।

अब आप पृष्ठ पलटिए और पढ़िए 'मुस्लिम तन्त्र' इस इस्लामी तन्त्र विज्ञान को जानने के लिए मैंने अनेक विद्वानों का सहयोग प्राप्त किया है। उर्दू भाषा के विषय में मेरा ज्ञान शून्य है, अस्तु श्री कृष्णलाल दुरेजा पिता श्री जगदीश्वर चन्द्र बहल का अमूल्य सहयोग और मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ है। वह मेरे बड़े हैं, अस्तु आभारी होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

अन्त में, इस पुस्तक को पढ़ने के बाद अगर आपकी कोई जिज्ञासा अथवा प्रश्न है तो निःसंकोच पत्र लिखें। पत्र का समय से उत्तर देकर मैं अपने कर्तव्य का निर्वाह ही करूँगा। आपकी साधना में सफलता और उन्नति का इच्छुक आपका अपना ही—

तान्त्रिक बहल
'तन्त्र सबके लिए मिशन'
डी-४, राधापुरी, कृष्ण नगर
(जमुनापार) दिल्ली-११००५१

विषय प्रवेश

यह संसार अल्लाह की अत्यन्त विचित्र रचना है। इस सृष्टि के गर्भ में अनेकों रहस्य भरे पड़े हैं। अनेकों ज्ञात तथा अज्ञात शक्तियों का समूह इस विश्व की समस्त व्यवस्था को अपने आधीन बनाये हुए हैं। यह ब्रह्माण्ड भगवान का ऐसा अद्‌भुत लीला लोक है कि जिसके रहस्यों का कोई ओर-छोर नहीं है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही समस्त मनुष्य जाति रहस्यों को उद्‌घाटित करने के लिए संघर्षरत है। यह जिज्ञासा, अन्वेषण, अनादिकाल से जारी है। इस सृष्टि के रहस्यों को उद्‌घाटित करने के लिए मानव जाति इसीलिए प्रयत्नशील है ताकि वह एक दिन स्वयं सर्वशक्तिमान बन सके। प्रयास की पराजय उसे हतोत्साहित नहीं करती, बाधायें दुरूहताएँ उसे चाहे जितना हतोत्साहित करें किन्तु फिर भी वह प्रयत्नशील है। ईश्वर और उसकी लीला के रहस्योद्‌घाटन के लिए मनुष्य ने तन्त्र, मन्त्र, जप, तप बुद्धि अमल इत्यादि सभी का प्रयोग अपना रखा है।

ईश्वर और उसकी सृष्टि के रहस्यों पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने के लिए योगियों, तपस्वियों, ऋषियों-मुनियों, आमिलों ने साधना का सहारा लिया। मन और आत्मा की साधना से सबकुछ समझने का प्रयास किया है। मन की शक्ति और शुद्धि को सर्वोपरि माना है।

यह अन्वेषण का क्रम शताब्दियों से चल रहा है। सभी अपने-

अपने क्षेत्रों के साधनों द्वारा ईश्वर और उसकी सृष्टि के अद्‌भुत रहस्यों की जानकारी प्राप्त करने में लगे हैं। पूर्ण सफलता आज तक नहीं मिली और आंशिक सफलताओं से वंचित कोई नहीं रहा है।

ईश्वर और उसकी सृष्टि के रहस्य को उजागर करने के इस अनादि कालीन प्रयास में धर्म, सम्प्रदाय, आयु, लिंग, भेद कभी आड़े नहीं आया। सभी धर्मों, सम्प्रदायों ने अपने-अपने स्तर पर सकारात्मक कार्य किया है। वह आज भी चल रहा है। तन्त्र-मन्त्र, अमल विज्ञान पर ऋषियों, सूफियों तथा सन्तों की तो आस्था पहले से थी और आज भी है। वैज्ञानिकों ने भी इस क्षेत्र को बुद्धि, शोध, तर्क, प्रयोग तथा अन्वेषण के प्रयासों द्वारा समझने का क्रम बनाये रखा और आज भी वे लक्ष्य को प्राप्त करने में प्रयत्नशील हैं। लेकिन साधारण मनुष्य केवल जिज्ञासा तक ही सीमित रहता है अतएव वह उपलब्धि से नहीं जुड़ पाता है पर उपलब्धि से लाभ अवश्य उठाना चाहता है।

तन्त्र-मन्त्र हो अथवा मुस्लिम अमल यह सत्य है यह शाश्वत है, पर इनका मार्ग अन्धकारमय है। यह एक गहरी अन्धकारमय सुरंग है। इस अन्धकार भरी सुरंग का दरवाजा आँखों को चौंधिया देने वाले प्रकाश के आगे खुलता है। सितारों से आगे जहाँ और भी है। यह कल्पनापूर्ण विश्वास नहीं है बल्कि यथार्थ है। इस विश्व में अनेकों अलौकिक शक्तियाँ हैं जो चिन्तन मनन से लेकर क्रिया कलाप तक के स्तर तक हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं। यह रहस्यमय शक्तियाँ एक होकर भी अनेक रूपों में विभाजित हैं। यह समय की कसौटी पर परखा हुआ सत्य है।

एक मनुष्य की प्रभावशक्ति दूसरे मनुष्य को प्रभावित करती है। किसी की वाणी में ऐसा सम्मोहन होता है कि आप यन्त्र चालित से

उसके आधीन होकर कार्य करने लगते हैं। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को सम्मोहित कर उससे मनचाहा कार्य करा लेता है। हमारे भीतर शक्ति और ऊर्जा का एक अदृश्य स्रोत रहा है। इसे समझकर तथा नियन्त्रित करके हम मनचाहे कार्य करा सकते हैं। ऐसी अनेकों प्रकार की साधनायें हैं तथा वे सभी अपनी निश्चित शक्ति रखती हैं। इनको साधने वाले साधक सभी युगों में रहे हैं आज भी हैं। क्या ये प्राचीन विवरण वास्तविक नहीं हैं कि ऋषि-मुनि अपनी दृष्टि से किसी को भी भस्म कर देते थे, स्पर्श मात्र से रोग मुक्त कर देते थे, शाप देकर नष्ट कर देते थे तथा वरदान देकर मनोकामनापूर्ण कर देते थे। ये सभी—साधना द्वारा अर्जित सिद्धियों के प्रमाण हैं।

'वाक सिद्धि' से ऐसी क्षमता आ जाती है कि साधक जो कह देता है उसके साथ वही हो जाता है। ऐसे सिद्ध प्राचीन काल में थे तथा आज भी हैं। सिद्धि प्राप्त करते ही सिद्ध पुरुषों का स्वभाव हो जाता है कि वे प्रदर्शन से बचने का प्रयास करने लगते हैं। हमारी आसक्ति उनकी विरक्ति बन जाती है।

धर्म ने तो ईश्वर को सर्वत्र तथा सृष्टि के कण-कण में व्याप्त माना है। उसे सर्वज्ञ कहा है। ईश्वर, अल्लाह, गॉड को एक ही माना है। वैज्ञानिक भी उसे सत्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। वास्तव में दैवी शक्तियों से सम्पन्न सिद्ध साधक सभी युगों में रहे हैं जो दिव्यदर्शी माने जाते हैं। आज भी ऐसे सिद्धों का अभाव नहीं है। कभी-कभी अपने भले-बुरे का आभास साधारण व्यक्ति को भी स्वप्न में आत्मिक प्रेरणा द्वारा प्राप्त हो जाता है। वास्तव में यह सब उसी शक्ति की प्रेरणा से होता है। साधक त्रिकालदर्शी और दिव्यदर्शी हो सकता है। तन्त्र-मन्त्र, अमल हिप्नाटिज्म, मोहिनी विद्या इत्यादि मन की असीम शक्तियों

की उपलब्धियाँ हैं। वास्तव में मन की शक्ति चमत्कार मनुष्य को और भी अनोखी शक्तियों से सम्पन्न कर सकते हैं।

मन:शक्ति को विकसित करने के लिए कठोर साधना की आवश्यकता होती है, उस साधना के अनेक मार्ग हो सकते हैं। हम इसे साधना, मेडिटेशन, अमल कुछ भी कह सकते हैं।

इसके लिए हमें स्वस्थ शरीर की आवश्यकता होगी। विद्वानों का मत है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा वास करती है।

इस पंच भौतिक तत्वों से निर्मित स्थूल शरीर के विषय में कहा गया है—

'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा,
पंच तत्व यह रचित शरीरा।'

शरीर नाशवान है तथा भौतिक पदार्थों से बना है। मृत्यु शरीर और आत्मा के वियोग का कारण बनती है। समस्त धर्मों ने एक स्वर से शरीर को नाशवान तथा आत्मा को अजर-अमर माना है। आत्मा जिसे 'रूह' कहा जाता है अजर-अमर मानी गई है। आत्मा के अस्तित्व को सभी धर्मों ने मान्यता दी है। इसे सभी प्रकार के धर्मों ने आत्मा की अमरता के सिद्धांत को मान्यता दे दी। गीता में भी श्रीकृष्ण ने—'नैवं छिन्दंति शस्त्राणि नैवं दहति पावक···' के द्वारा आत्मा की अमरता का समर्थन किया है। स्थूल शरीर को आत्मा द्वारा त्यागे जाने की प्रक्रिया ऐसी है जैसे शरीर द्वारा वस्त्र परिवर्तन। मृत्यु से आत्मा को कोई कष्ट नहीं होता है। बल्कि मृत्यु से धार्मिक मान्यता है कि स्वाभाविक मृत्यु के रूप में शरीर का त्याग करने वाली आत्मा के भावी कार्यक्रम में कोई बाधा नहीं पड़ती है। वास्तविक परेशानी तो अकाल मृत्यु से उत्पन्न होती है। अकाल मृत्यु बुरे कर्मों के कारण ही भूतप्रेत जिन्न

जैसी वायवी हलचलों का अस्तित्व है।

मृत्यु के उपरान्त स्थूल से विलग होने पर आत्मा की दो गतियां मानी गई हैं। एक तो तात्कालिक पुंनर्जन्म की प्रक्रिया और दूसरे जिन्न भूतप्रेत योनि का जीवन अपनाना। प्रेत योनि अकाल मृत्यु के कारण आत्मा को प्राप्त होने वाली स्थिति है। प्रेत योनि की समाप्ति के पश्चात् आत्मा पुनः शरीर धारण कर नया जीवन प्रारम्भ करती है। भूतों और प्रेतों के अस्तित्व को सिद्ध करने वाली अनेकों ऐसी घटनाओं की भरमार है कि इस पर सोचने तथा समझने की जिज्ञासा जाग्रत होती है। यह सत्य है। मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ योनि है। कर्म करने का अधिकार केवल मनुष्य को है। इसके अतिरिक्त व्यक्त करने की शक्ति केवल मनुष्य के पास है।

यह सत्य है कि जब से मानव का अस्तित्व है तभी से प्रेतों का अस्तित्व है। इनके अस्तित्व के विषय में अब तक किसी निश्चित मत की स्थापना नहीं हो सकी है। हमेशा से ही इनके अस्तित्व को स्वीकारने तथा नकारने वाले रहे हैं। अब प्रश्न यह उठता है अगर इनका अस्तित्व है तो फिर इनके अस्तित्व की प्रामाणिकता क्या है? वर्तमान युग वैज्ञानिक उपलब्धियों का युग है। तर्क विश्लेषण और प्रामाणिकता के आधार पर ही आज के युग में मान्यता मिलती है। कुछ वैज्ञानिक जो वैज्ञानिक रूप से इनके अस्तित्व की घोषणा करने में समर्थ नहीं हो सके उन्होंने इन्हें दृष्टिभ्रम, अन्धविश्वासी प्रचार की संज्ञा देकर समस्या से किनारा कर लिया।

संसार के सभी धर्म किसी न किसी रूप में भूत प्रेतों जिन्नों का अस्तित्व मानते हैं। इन्हें चाहे भूतप्रेत कहा जाए या शैतान या जिन्न कहा जाए हिन्दू धर्म व इस्लाम धर्म इनके अस्तित्व में विश्वास प्रकट

ते हैं।

रामायण जैसे प्रामाणिक धर्म ग्रन्थ ने भूतप्रेतों के अस्तित्व का नकर समर्थन किया है। रामायण की रचना एक प्रेतात्मा की ही या है। तुलसीदास जी ने इस बात को विस्तार से लिखा है। उन्होंने ष्ट रूप से यह भी लिखा है कि प्रेत की कृपा और सहयोग से मुझे नुमान जी और भगवान राम के भी दर्शन हुए। श्री मद्भागवत पुराण में गोकर्ण और धुंधकारी का प्रसंग एक प्रेत कथा है।

तुलसीदास जी ने रामायण में भी अनेकों प्रसंगों में भूतप्रेतों के षय में लिखा है। यहूदी धर्म की मान्यताओं के अनुसार मेमन नामक तप्रेत लोलुपता का प्रतीक है। ईरानियों की धार्मिक पुस्तक 'अवेस्ता' भी भूतप्रेतों के बारे में वर्णन है और कहा गया है कि ये यमलोक निवासी हैं। कुरान शरीफ पवित्र इस्लामी धर्मग्रन्थ में प्रेतात्माओं का न्म अग्नि से बतलाया गया है। इनकी निन्दा भी की गई है। वास्तव सभी धर्मग्रन्थों में भूतों की योनि को निकृष्ट और हिंसक माना है।

यूनान, मिस्त्र तथा बेबीलोन के लोग भूतों को नक्षत्रों का दुष्ट अंश मानते थे। उनकी धारणा थी कि भूत सदैव ही खून पीने को तत्पर रहते हैं। 'गरुड़पुराण' अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ है। यह विशाल धार्मिक पुराण मुख्य रूप से भूतप्रेतों के विषय में प्रस्तुत की गई विषद् व्याख्या से भरा है। गरुड़ पुराण भूतों की उत्पत्ति, उनके भेद एवं श्रेणियाँ, उनके आवाहन करने के मन्त्र इत्यादि के विषद् वर्णन से भरा है। अब इस बात को यहीं समाप्त करके मैं मुस्लिम तन्त्र को प्रस्तुत करते हुए आप सबसे पूर्ण आशा रखता हूँ आप इस पुस्तक से भरपूर लाभ उठावेंगे।

—**प्रकाशक**

उर्दू भाषा की वर्णमाला

बे	ب	अलिफ़	ا
ते	ت	पे	پ
से	ث	टे	ٹ
चे	چ	जीम	ج
ख़े	خ	हे	ح
डाल	ڈ	दाल	د
रे	ر	ज़ाल	ذ
ज़े	ز	अड़े	ڑ
सीन	س	ज़े	ژ
स्वाद	ص	शीन	ش
तोय	ظ	ज़्वाद	ض
एन	ع	ज़ोय	ظ
फ़े	ف	गैन	غ
काफ़	ک	क़ाफ़	ق
लाम	ل	गाफ़	گ
नून	ن	मीम	م
है	ہ	वाओ	و
ये	ی	हमज़ा	ء
बड़ी ये	ے		

अन्य धर्मों की तरह इस्लाम [illegible] न केवल प्रमुख वरन् महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। मुस्लिम धर्म की एक मुख्य भाषा फारसी भी है। इस भाषा में कुल अट्ठाईस अक्षर हैं।

इस्लाम धर्म में भी तन्त्र को प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस्लाम धर्म की मुख्य भाषा फारसी है। इसमें कुल अट्ठाईस अक्षर हैं। अट्ठाईसों अक्षर एक मन्त्र के समान प्रभावकारी बतलाये गये हैं और इनको सिद्ध करने की विधि भी प्रचलित है।

सभी अक्षरों के मन्त्र, प्रभाव विवरण निम्न प्रकार हैं—

	फारसी	*प्रभाव*	*मन्त्र*	*कितनी बार पढ़ना है?*
ا	अलिफ	धन धान्य वृद्धि	'आजिबो या इस्त्राफील बहक्क या आलिफ अल्ला हो'	१०० बार
ب	बे	गेब से रोजी	'अजिबो या जिब्राईल बहक्क या वासितो'	३३३३ बार
ت	ते	मान-सम्मान	'या इज्राईल बहक्क या ते तबवावो'	१००० बार
ث	से	स्वयं सिद्धि	'या किलकाईल बहक्क याजीम या जव्वादी'	९०३ बार
ج	जीम	मनोकामना पूर्ति	'या किलकाईल बहक्क याजीम या जव्वादी'	२००० बार
ح	हे	राजभय निवारक	'या तनकाफील बहक्क या हमीदो'	६२ मर्तबा

ث	से	गये मनुष्य की वापसी हेतु	'या महकाई बहक्क या खे या खालिको'	१००० मर्तबा
د	दाल	शत्रु नाश, धन वृद्धि	'या दखाईल बहक्क या देयानो'	१००० बार
ذ	जाल	वशीकरण	'या जुहराईल बहक्क या जाल या जुल जलाल बलइक्राइम'	
ر	रे	गुप्त धन हेतु	'या असवा कील बहक्क यारे'	११०० मर्तबा
ز	जे	शत्रु भय नाश	'या सरफाईल बहक्क या जे या जाकियो'	१००० मर्तबा
س	सीन	इच्छित अभिलाषा	'या हमवाकील बहक्क यासीन या समीओ'	५० मर्तबा
ش	शीन	गर्भज्ञान शत्रुमुख	'या इजराईल बहक्क या शीनी शहीदो'	७ मर्तबा
ص	स्वाद	शत्रु व थकान नाशक	'या अजमाईल बहक्क या स्वादो या समदो'	७ मर्तबा
ض	ज्वाद	स्तम्भन हेतु	'या इतराईल बहक्क या ज्वाद या जारे'	५०० मर्तबा
ط	तोय	वशीकरण आकर्षण	'या इस्माईल बहक्क या तोय या ताहिरो'	१००० मर्तबा
ظ	जोय	शत्रु भय	'या लोमाईल बहक्क या जोय या जाहिरो'	७०० मर्तबा
ع	ऐन	वशीकरण	'या लोमाईल बहक्क या ऐन या अजीमो'	४० मर्तबा
غ	गेन	शत्रुनाशक	'या लोमाईल बहक्क या गेन या गुफरो'	७० मर्तबा
ف	फे	वशीकरण आकर्षण	'या सरहमा की [illegible]'	७० मर्तबा

ک	काफ	आलस्य, निद्रा	या इतराइल बहक्क [illegible]	
گ	गाफ	विद्या, सफलता	'या हुतजाईल बहक्क या गाफ या गाफियो'	४०० मर्तबा
ل	लाम	सर्वप्रियता	'या त्वाई बहक्क या लाम या ल्ततीफो'	१००० मर्तबा
م	मीम	लोकप्रियता	'या रोमाईल बहक्क या मीम महुमनो'	१००० मर्तबा
ن	नून	विद्या, स्वप्न	'या लोमाईल या नून या नूरो'	१००० मर्तबा
و	वाओ	मनोकामना पूर्ति	'या रफूताईल बहक्क या बाव या बहावो'	७० मर्तबा
ح	हे	भवन सुरक्षा	'या टोराईल बहक्क या है या टाहियो'	७० मर्तबा
ی	ये	जिह्वा कीलन	'या सारा कीताईल बहक्क ये याहियो'	१६० मर्तबा

उपरोक्त मन्त्रों की विधि इस प्रकार है कि जिस अक्षर की जिस कार्य के लिए आपको सिद्धि करनी है, उस अक्षर को किसी भी सफेद कागज पर काली स्याही से लिखकर सफेद कोरे कपड़े पर रख लें। फिर उसके सामने बैठें। लोबान की धूनी, सुगन्धित पुष्प, इत्र छिड़क कर पूजन करें।

पूजन करने पर केवल एक बार 'बिस्मिल्लाह' का सस्वर उच्चारण करें और फिर ७-११ या २१ बार दरूद का श्रद्धापूर्वक पाठ करें। फिर एक बार अजमत पढ़ें।

बिस्मिल्लाह का मन्त्र इस प्रकार है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

उर्दू के अक्षरों के गुण

अलिफ ا :

अगर प्रातःकाल उठकर एक हजार बार अल्फ कहें, और ह ही बार लिखकर अपने पास रखें तो धन की प्राप्ति हो।

बे ب :

अगर एक हजार बार इस अक्षर को सियार की खाल पर, व उसकी माँ का नाम लिखकर दबा दें तो शत्रु नष्ट हो जायेगा।

ते ت :

अगर चार सौ 'ते' एक सफेद कागज पर लिखकर व्य अपने पास रखे तो लोकप्रिय हो।

से ث :

अगर कोई व्यक्ति कागज पर २७६ बार 'से' अक्षर लिख अपने पास रखे तो वह डूबने से हमेशा बचा रहेगा।

जीम ج :

अगर कोई व्यक्ति २४ बार 'जीम' मिश्री पर लिखकर जोड़ों दर्द वाले को खिलाये तो रोगी स्वस्थ हो जाये।

हे ح :

अगर दोनों समय जब चाँद स्पष्ट दिखलाई दे रहा हो आठ ' खुदवा कर उसकी अंगूठी हाथ में पहिने तो अनेक रोग दूर हो जायें

ژ :

इस अक्षर को ईंट के बारह टुकड़ों पर लिखकर बाग में जिस
ो से पानी जाता हो, उसमें दबा दें तो वह बाग सुरक्षित रहेगा।

ा و :

अगर दाल को ३५ बार लिखकर अंगूठी के नगीने के नीचे
कर कोई हाथ में पहिने तो धनवान हो जाए।

ल ذ :

अगर कोई सात सौ बार पढ़कर मिठाई अपनी प्रेमिका को
लाये तो वशीकरण हो।

ر :

अगर आधा शीशी के रोगी को कनपटियों पर पाँच बार 'रे'
ख दें तो पीड़ा दूर हो जाए।

ز :

अगर इस अक्षर को ७५ बार मृगछाला पर लिखकर जो कोई
पने पास रखे उसको किसी का भय नहीं रहेगा।

ान س :

अगर इक्कीस बार 'सीन' किसी पत्ते पर लिखकर जिसके नाम
बहते पानी में छोड़ दें तो वह तुरन्त चला आएगा।

ीन ش :

लड़कियों के लिए उत्तम वर मिलने के लिए ४२ बार शीन एक
ाले पर लिखें और ४२ खजूरें लेकर हर खजूर पर ४२ शीन लिखें
ौर कुमारी कन्या के कपड़े में बाँध कर मार्ग में रख दें बस जब कोई
ास ताले को खोले और उन खजूरों को खाये तो कन्या को अच्छा वर
मलेगा।

स्वाद ص :

जो यात्रा में 'स्वाद' का जाप करे तो वह हर बला से बचा र

ज्वाद ض :

शत्रु के मकान की ओर मुख करके नौ सौ बार इक्कीस फूँके तो शत्रु नष्ट हो जाए।

एन ع :

इस अक्षर को फिटकरी तथा कबूतर के रक्त के साथ तर पत्ते पर दस बार लिखे और गुलाब जल से धोकर गठिया के रोगी पिलाये तो गठिया का रोगी स्वस्थ हो जाए।

गेन غ :

अगर हजार अक्षर लिखकर शत्रु के घर में डाले तो शत्रु उच्चाटन हो जाए।

फे ف :

अगर इस अक्षर को एक हजार बार लिखकर प्रतिदिन श मकान की ओर मुँह करके पढ़ें तो शत्रु नष्ट हो।

काफ (छोटा) ق :

अगर इस अक्षर को अरकण्ड के पत्ते पर १०० बार लिख शत्रु के मकान में डाल दें तो शत्रु भाग जाए।

काफ (बड़ा) ک :

जो मनुष्य इस अक्षर को दो सौ बार लिखकर अपने पास उसके सारे कार्य सिद्ध होंगे।

लाम ل :

परस्पर प्रेम के लिए ७१ बार छुरी पर लिखकर और उ

:कर उनको कोई फल खिलाना लाभदायक है।

ा م :

एक हरा सेब लेकर उस पर १५० 'मीम' लिखें। जिसको वह खिलाए वह वश में हो जायेगा।

ن :

प्रेम के लिए काले घोड़े की नाल पर १०६ बार 'नून' लिखकर 1 ही प्रेमिका का नाम लिख देवें। और आग में डाल देवें, प्रेमिका : में हो जाएगी।

ओ و :

६९ बार 'वाओ' मृगछाला पर लिखकर हवा में लटकाएँ तो शत्रु नींद उड़ जावे।

ه :

अगर इक्कीस बार 'हे' लिखकर शत्रु के मकान में डाल दें तो ु का नाश हो जायेगा।

ی :

इस अक्षर को सौ बार लिखकर अपने पास रखे तो सब जगह मान हो।

इस प्रकार आप उर्दू के अक्षरों को जान सकते हैं। मेरे विचार में च्छा तो यही रहेगा, कि सबसे पहले आप किसी उर्दू जानने वाले से 1 भाषा का थोड़ा व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लें। जिस प्रकार स्कृत मन्त्रों में उच्चारण, आरोह अवरोह और लय पर विशेष ध्यान या जाता है, उसी प्रकार मुस्लिम मन्त्रों में भी उच्चारण, आरोह-वरोह और लय का ध्यान रखना पड़ता है।

आप स्वयं अनुभव करें अचानक विपत्ति आने पर हमारे मुख से

स्वयं भगवान का नाम निकल जाता है और अनुभव से पाया ग
भगवान का नाम लेने से कष्टों का निवारण भी होता है। व्यक्ति
केवल भगवान, अल्लाह, गॉड जो भी कहिए अगर इनके नाम
स्मरण करता रहे तो अनेक प्रकार की विपत्तियों से बच सकत
यह नाम तीन प्रकार के होते हैं—

मुश्तरिक, जमाली और जलाली। अब में भगवान के कुछ
नामों का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा हैं तन्त्र प्रेमी लाभ उठा

अंकों की करामात

अल्लाह अंक ६६ जलाली

अगर भूतप्रेत लग गया हो तो प्रतिदिन ११६ बार लि
पिलायें लाभ होगा। कोई बहुत बड़ी विपत्ति आन पड़े तो चालीस
तक सवा लाख बार लिखें और गोलियाँ बनाकर मछलियों को
तो विपत्ति टल जाएगी।



अल अजीज अंक ९४ जलाली

इसको कोई भी इकतालीस बार पढ़े तो धन की कमी न
इसके अतिरिक्त शत्रु नाश के लिए प्रतिदिन तीन सौ बार पढ़े।



अलखालिक अंक १२० जमाली

जो इसे तीन सौ बार पढ़कर कार्य के लिए जाय वह अवश्य
सफलता प्राप्त करता है।



अलवारी अंक २१३ मुशतरिक

इसका जाप करने वालों को स्वर्ग प्राप्त होता है।



अल मुत्त किब्बर अंक ६६२ जलाली

पत्नी से सम्भोग करने से पहले जो भी इसे दस बार पढ़ेगा। ल्लाह उसे पुत्र देगा। कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व इसे पढ़ने वाले का र्य सफल होगा।



अल मुसव्वर अंक २३६ जलाली

बांझ स्त्री अगर सात उपवास रखे और उपवास खोलते समय न अभिमन्त्रित करके पिये और सम्भोग करे तो सन्तान अवश्य गी।



अल बहाव अंक १४ जलाली

इसके जाप से खुशहाली आती है। इसके अलावा रात को हाथ ठाकर सौ बार यह पढ़े तो सब मनोकामना सिद्ध होगी।



अल रजाक अंक ३०८ जमाली

नमाज के बाद घर के चारों कोनों में दस-दस बार इसे पढ़कर केगा उसकी गरीबी दूर होगी, मगर दायीं ओर से शुरू करें, मुख ब्बले से न फेरे।



अल फताह अंक ४६८ जमाली

शुद्धि के बाद दोनों हाथ छाती पर रखकर ७० बार पढ़े, तो वाला सुरक्षित रहेगा।



अल गफूर अंक १२८ जलाली

इसका जाप नरक से मुक्ति दिलाता है।



अल अलीम अंक १५० मुशतरिक

अगर बृहस्पतिवार और शुक्रवार के दिन सौ बार इसे पढ़क जाए तो उसको भविष्य के बारे में पता चल जाएगा।



अल कायज अंक ६०३ मुशतरिक

चालीस दिन तक रोटी के टुकड़े पर लिखकर खा लिया को नरक से सदा बचा रहेगा।



अलवासित अंक ७२ जमाली

प्रात:काल हाथ उठाकर दस बार पढ़ें फिर हाथों को मुख फेरो तो संकट दूर हो जायेंगे।



अल समी अंक १८० जलाली

जो कोई पाँच सौ बार पढ़ेगा उसकी प्रार्थना स्वीकार होगी।



अलमइज अंक ११७ जमाली

बृहस्पतिवार की रात में एक सौ चालीस बार पढ़ने वाला लोकप्रिय
ा।



अलराफे अंक ३५१ जलाली

सायंकाल के बाद जो कोई इसे सौ बार पढ़े तो धनवान हो।



अल खाफिज अंक १४८ जमाली

तीन उपवास रखे और चौथे दिन इसे पढ़े तो शत्रु पर विजय
ए।



अल बसीर अंक ८८० जमाली

सुबह से शाम के मध्य एक सौ बार पढ़ने वाले पर सब प्रकार
। कृपा होगी अकाल मृत्यु से सुरक्षित भी रहेगा।



अल आदिल अंक १०४ जलाली

जो कोई रोटी के बीस टुकड़ों पर लिखकर खाये तो लोकप्रिय
ो।



अल मिजल अंक ७७० जलाली

अनेक शत्रु वाला पचहत्तर बार इसे पढ़कर कहे कि इलाही

'अमुक' से मुझे बचा लो तो दुश्मनी से बचे।



हिरीस अंक ६२० जमाली

२१ बार पानी पर दम करके पिलाने से पेट दर्द मिट जाता



अल लतीफ अंक १२६ जलाली

मनोकामना की पूर्ति के लिए सौ बार पढ़े वह कामना पूर्ण जाए।



अल खैर अंक ८१२ मुशतरिक

जो इसका जाप करता है उनको अपने शरीर पर नियन्त्रण कर आ जाता है।



अल गफूर अंक ३०२ जमाली

ठण्ड लगकर चढ़ने वाला ज्वर हो तो रोटी पर लिखकर खिला जाए अवश्य लाभ होगा।



अल शकूर अंक ५२६ जमाली

धन के अभाव के कारण दुःखी हो तो इकतालीस बा प्रतिदिन पढ़ें।



अल हफीज अंक ६६८ जमाली

इसका जाप एक हजार बार करें तो मनुष्य चोरी और व्यभिचार चा रहता है।



अल मकीयत अंक ५५० जलाली

मौत का डर हो तो फूल अभिमंत्रित करके सूँघने से डर दूर हो ता है।



अल कबीर अंक २३६ जमाली

इसका जाप कठिनाई को दूर कर देता है।



अल हकीम अंक ६८ जलाली

जुमा की रात्रि को पढ़ें तो धनी हो।



अल अली अंक २६६ जलाली

इसके नियमित जाप से लोकप्रिय तथा धनवान हो जाता है।



अल मलिक अंक ६० मुशतरिक

६० बार पढ़ने से ज्ञान वृद्धि होती है इसको तीन दिन तक पढ़े तो इसका प्रभाव बढ़ता है।



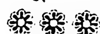
अल रहमान अंक २६८ जमाली

भूल जाने की आदत दूर करने के लिए सौ बार पढ़े, औ
कोई नमाज या पूजा के बाद २६८ बार पढ़ा करें अल्लाह उस पर
करता है।



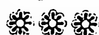
अल रहीम अंक २५८ जमाली

वशीकरण के लिए सौ बार पढ़े। पाँच सौ बार पढ़ने से
मिलता है अगर अल रहीम लिखकर सिरहाने रखकर सोए तो
की सूचना सात दिन के भीतर सूचित हो जाती है।



अल कुदूस अंक १७० मुशतरिक

अगर तीन सौ बार मिठाई अभिमन्त्रित करके खिलाए तो
भी मोम बन जाए। वशीकरण हेतु प्रतिदिन १७० बार पढ़ना चाहि



अल मोमन अंक १६६ जमाली

इसका जाप करने वाला भूतप्रेत के भय से मुक्त रहता है।



अल हैमान अंक १४५ जमाली

एक सौ पन्द्रह बार पढ़ने वाला समस्त दुःखों से सुरक्षि
रहता है।



अल बहूद अंक २० जलाली

पति को वश में करने के लिए सौ बार भोजन पर फूँक करके ह भोजन पति को करवाए तो वश में हो जाएगा।



अल बाइह अंक ५७३ जलाली

छाती पर हाथ रखकर सौ बार पढ़े तो शक्ति देता है।



अल वकील अंक ६६ जमाली

इसको पढ़ने से सब प्रकार सुरक्षित रहता है।



अल सहीद अंक ३२६ जलाली

अगर सन्तान कुमार्गी हो तो उसके माथे पर हाथ रखकर केवल २१ बार पढ़ें सन्तान मार्ग पर आ जाएगी।



अल मक्कवी अंक ११६ जलाली

सौ बार पढ़ें तो शत्रु कष्ट पावे।



अल हसीब अंक ८० जमाली

लगभग एक सप्ताह तक प्रातः शाम को ८० बार पढ़ें तो शत्रु से मुक्ति मिल जाती है।



अल जलील अंक २७३ जमाली

इसे केशर से लिखकर अपने पास रखे तो लोकप्रिय हो, अ नित्य प्रति दस बार पढ़कर अपने सम्मान को अभिमन्त्रित करे तो व सुरक्षित रहे।



अल करीबम अंक २७० जमाली

इसका जाप करने वाला लोक और परलोक में लोकप्रिय हो है।



अल रकीब अंक ३१२ जमाली

सात दिन तक अपने परिवार के सदस्यों पर फूँकें तो व सुरक्षित रहें।



अल मजीब अंक ५५ जमाली

प्रार्थना की स्वीकृति के लिए प्रतिदिन ७० बार पढ़ें तो प्रार्थन स्वीकार होती है।



अल सलाम अंक १३ जमाली

एक सौ ग्यारह बार पढ़कर जिस बीमार पर फूँके वह ठीक हं जाएगा। अगर तीन सौ उन्नीस बार मिठाई अभिमन्त्रित करके शत्रु को खिलाये तो मित्र बन जाए।



अल बासै अंक ५१० जमाली

इसके जाप से सन्तोष उत्पन्न होता है।



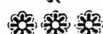
अल कादर अंक २०५ जलाली

जो कोई वज़ू करके इसे पढ़े वह शत्रु पर विजय प्राप्त करे।



अल मुक्तदिर अंक ७४४ जलाली

इसका पढ़ना आलस्य को दूर भगाता है।



अल मुक्कदम अंक १८४ जलाली

इसके द्वारा युद्ध में विजयी होता है।



अलम्बखख़्वँर अंक ६४६ जलाली

अगर सौ बार पढ़ें तो विपत्ति टल जायें।



अल अब्बल अंक ३७ जलाली

मनोकामना की सिद्धि के लिए सौ बार पढ़ें।



अलाखिर अंक ८०१ जलाली

मुक्ति के लिए इसका जाप करें।



अल समद जलाली

जो कोई प्रात:काल ११५ बार इसे पढ़े वह विपत्तियों से छुट
प्राप्त करेगा।



अल हद अंक १३ जलाली

जो इसको नौ बार पढ़े और अधिकारी के सम्मुख जाए
सम्मान पाए।



अल जाहिर जलाली

इसके पढ़ने से आँखों की ज्योति बढ़ती है और मनुष्य सुर
रहता है।



अलभातिन अंक ६२ मुशतरिक

इसे ३३ बार पढ़ने वाले के ज्ञान में वृद्धि होती है।



अल वाली अंक ४५ जमाली

वशीकरण के लिए ११ बार प्रतिदिन पढ़ें।



अल बताली अंक ५५० जलाली

यह विपत्तियों को दूर करता है।



अल अकबर अंक २२३ जमाली

शराबी सात बार पढ़ें तो यह बुरी आदत छूट जाएगी।



अल नवाब अंक ४०६ जमाली

तीस सौ साठ बार पढ़ें तो सारे कष्ट दूर हो जायेंगे।



मालिक अलमुल्क अंक २१२ जमाली

इससे सारे दुःख दूर होते हैं।



...ुल जलाल वाला-ए-कराम अंक १४६ जलाली

इसके द्वारा आत्माओं तथा प्रेत-आत्माओं का पता चलता है।



अलम किस्त अंक २०९ जलाली

सौ बार पढ़ने वाला भूतप्रेत बाधा से सुरक्षित रहता है।



अलगानी अंक ११०० जमाली

जो ११ बार पढ़े वह लोकप्रिय हो जाता है।



अल राउफ अंक २८६ जमाली

१० बार पढ़ने वाला अन्यायी से छूट जाता है।



अल मनकिम अंक ६५० जमाली

एक हजार बार जिस मनोकामना के लिए पढ़ा जायेगा वह हो जाएगी।



अलजार अंक १००१ जलाली

यह भक्ति प्रदान करने वाला है।



अलनूर अंक १५६ जमाली

जो व्यक्ति एक हजार बार पढ़े तो उसको धन की प्राप्ति हो



अलहादी अंक २० जमाली

यह भक्ति देता है।



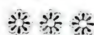
अलनाफै अंक २०१ जमाली

काम के प्रारम्भ करते समय ४१ बार पढ़ेगा वह कार्य सम होगा।



अलमाने अंक १६१ जमाली

स्त्री को चाहिए कि वह पति के बिस्तर पर जाने से पहले बार यह पढ़े, पति प्रसन्न हो जाएगा।



अल मतीन अंक ५०० जमाली

इसको लिखकर स्त्री के गले में डाले तो दूध अधिक हो।



अल बली अंक ४६ जमाली

इसको नियमित जपने से सारी बुरी आदतें छट जाती हैं।



अल हमीद अंक ६१ जमाली

इसको सौ बार पढ़ने वाला कष्टों से सुरक्षित रहता है।



अली हसी अंक १४८ जमाली

इसका पढ़ने वाला समस्त बुरी आदतों से बचा रहता है।



अलमबदी अंक ५६२ जलाली

अगर गर्भपात होता हो तो गर्भवती के पेट पर प्रतिदिन ७० बार फूंकें, गर्भपात नहीं होगा।



अल मईद अंक १२४ जमाली

आधी रात के समय घर के कोनों में ७० बार फूँक मारकर कहें 'या मईद।'' ''अमुक'' वापिस आ जाए तो गुमशुदा वापिस लौट आता है।



अलही अंक १८ जलाली

अगर कोई अस्वस्थ है तो उसे चाहिए कि ७० बार अलही
वह स्वस्थ हो जाएगा।



अल क्यूम अंक १५२ जमाली

इसका पढ़ने वाला जादू टोने के प्रभाव को दूर कर सकता



अल वाजिद अंक १४ जलाली

अगर कोई इसे पढ़े तो वह धनवान हो जाएगा।



अल मही अंक ६८ जलाली

इसको पढ़ते-पढ़ते सो जाने से बुरे स्वप्न रुक जाते हैं।



अल माजिद अंक ४८० जलाली

अगर इसे पढ़े तो धन में वृद्धि होगी।



अल वाहिद अंक १९ जलाली

अगर कोई डरता हो, तो एक हजार बार यह पढ़ें, डर ज
रहेगा।



अलबदीय अंक ८६ जलाली

७० हजार बार पढ़े तो यात्रा सफल होगी।



अलबाकी अंक ११३ जलाली

इसको जपने वाला धनवान हो जाता है।



अलवारिस अंक ७०७ जमाली

सूर्योदय के समय सौ बार पढ़े तो सब चिन्ताएँ दूर होंगी।



अल रशीद अंक ५१४ जमाली

सोते समय हजार बार पढ़ें तो शुभ स्वप्न दिखाई देगा।



अल सबूद अंक २६६ जलाली

३३ बार पढ़ें तो कष्टों से छुटकारा पाए।





प्रारम्भिक नियम

प्रिय पाठको! अब मैं आपके लाभ हेतु कुछ मन्त्र दैनिक जी में लाभ प्राप्ति हेतु लिख रहा हूँ। आप इन्हें श्रद्धा और विश्वास साथ करें और भरपूर लाभ उठाएँ।

इन प्रयोगों के मध्य आपको दुरूद, अजमत, कुफल आदि विषय में कहा जाएगा। सबसे पहले मैं वही प्रस्तुत कर रहा हूँ। दु इस प्रकार पढ़ें।

"अल्ला हुमा सल्ले अला मुहम्मदिन व अल्ला आले मुहम्मदिन व बारक वसल्लम।"

अजमत

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्ला हुम्मा इन्नी असअलो विहक्के इस्काइकल व सिफातिकल उलया या रज्जाको समीयो अगतकदो हाजतो अकसमतो अलैकुम। या अईयो हल लायक तिव मवक्किलतो अल हाजिल हुक फिक्तामति ताहिरा या दरदाईलो या किल फाईलो बिहक्के सईयनि कुमूया अमीनिकु अल अजीयत नहायूसो इन्नामा आमख्इजा आरादा शैय अनयकूल लहू कुन अफ कुनध सुबहानल्लजी ये यट्टहि कुतोकुल्लश अइन अलै हेतुजंऊन।"

उपरोक्त 'अजमत' को एक बार पढ़ने के बाद अक्षर मन्त्र ा किसी भी अन्य मन्त्र को पढ़ना चाहिए।

इस तरह आप इच्छित कार्य की पूर्ति के लिए इनका सफल ा कर सकते हैं। इस्लामी तन्त्र में अक्षर साधना सबसे बड़ी और त्रपूर्ण सिद्धि बतलाई गई है।

इस्लाम धर्म में कुफूल, दिन तथा हाजिरात के भी चमत्कारी हैं। हम सबसे पहले कुफूल पर आएँ। इसके छ: मन्त्र हैं। वह प्रकार प्रभावी हैं—

"बिस्मिलार्रहिहमा बिस्मिलाहिस्न मीइल बसीरिल्लाओ लैला नलेही शयदूनहुवा बिकुल्ले शायइना हकीम विरहमते काया हसर्राहिमीन सल्लिल्ला हो अला-मुहम्मदिन व अला आलेही नसहाविही अजमईन।"

दूसरा कुफल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिहिल खालेकिल ीमिल्लजी लैला कम्बिलेही शयइन व हुबल फत्ताहुल अलीम .हमतेका या अरहमर्राहिमीन।"

तीसरा कुफल

"बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिसामील अलीमिल्लजी ना कमिस्लेही शयइन हुबलगनी इलक़दीरों बिरहमतेका या .हमर्राहिमीन।"

चौथा कुफल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल लीमिल्लजी लैला कमिस्लेही शयइन व हुबल अजीजुल करीम रमतेका या अरहमर्राहिमीन।"

पाँचवाँ कुफल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अ
मिल्लजी लैला कमिस्लेही शयइन व बहुवल अली मिल
बिरहमे का या अरहमर्राहिमीन।"

छठा कुफल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिल अजीजि
मिल्लजी लैला कमिस्लेही शयइन बहुबल अजिछुल गफूर बल
हसन हाफिजा व हुवा अरहमर्राहिमीन।"

उपरोक्त कुफूल में पहला भूतप्रेत, विष प्रभाव के लिए, शीघ्र प्रसव हेतु, तीसरा घर से भागा व्यक्ति वापिस बुलाने के चौथा कुफल गुमशुदा जानवर की वापसी हेतु, पाँचवाँ स्मरण विकास के लिए, छठा मिरगी, पागलपन, उन्माद के होने में किया जाता है।

इन कुफलों के मन्त्र कागज पर लिखकर बाजू में बाँधते ताबीज में भरकर गले में डाल लेते हैं या बाँह में बराबर बाँधे रहत इस प्रकार इच्छित कामना पूर्ण होती है।

दिन (वार) के अनुसार मन्त्र

इस्लामी तन्त्र में दिन (वार) के अनुसार भी मन्त्र है।

किसी भी साफ सुथरी जगह पर सुगंधित तेल शुद्ध देशी घी नया चिराग सुलगाकर इमाम और इमाम हुसैन को याद करें। चिराग के आगे फूल, इत्र मिठाई चढ़ाकर लोबान की धूनी दें। उस दिन (वार) का मन्त्र एक हजार बार जपे। उसका फल अव मिलेगा, ऐसा कहा गया है—

शुक्रवार (जुमा) का मन्त्र

या अल्लाहो या वाहिदो—कामना पूर्ति के लिए।

शनिवार का मन्त्र

या रहमानो या रहीमो—वशीकरण के लिए।

रविवार का मन्त्र

या वाहिदो या अहदो—भूत-प्रेत, जिन्न बाधा के लिए।

सोमवार का मन्त्र

या समदो या फरदो—धन धान्य के लिए।

मंगलवार का मन्त्र

या हयियो या कार्ययूमो—रोग निवारण के लिए।

बुधवार का मन्त्र

या हसन्नो या सन्तानो—शत्रु हनन के लिए।

बृहस्पतिवार का मन्त्र

या जुल जलाल बल इकराम—सन्तान प्राप्ति के लिए।

इसके अतिरिक्त हिन्दू तन्त्र के अनुसार यह मन्त्र भी इस्लामी [...]स्त्र में हैं।

दरिद्रता नाशक प्रयोग

प्रात:काल हाथ-मुँह धोकर एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने [...] बाद निम्नलिखित मन्त्र का १३०० बार जप करें—

"**या कबीयो या गनीयो या मलीयो या बकीयो।**"

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में दरूद का पाठ भी करें। [...]परोक्त मन्त्र को निरन्तर ४१ दिन तक करते रहने से दरिद्रता दूर

होती है।

रोजी मिलने का प्रयोग (१)

सर्वप्रथम एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर नीचे मन्त्र को ९ दिन तक, नित्य १०००० की संख्या में जपना चाहिए जप के आरम्भ तथा अन्त में 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

"या वुद्दूह या या हयियो या कयियूमो या अल्लाह फरदो या बितरो या समदो या रहीमो या वारिसो या अहद लमयलिदो बलम युलद बलमयकुन लुहू कुफवन अहद।"

रोजी मिलने का प्रयोग (२)

रोजी के लिए आधी रात के समय सबसे पहले बिस्मि पढ़कर, फिर नीचे लिखे मन्त्र को ११०० बार पढ़े।

मन्त्र है—"**यागफूरो।**"

रोजी हेतु प्रयोग

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या इस्राफील बहक्क अल्लाहो अल्ला हुस्सनल्ला मुहम्मद नव धारक वसल्लम।"

शुक्रवार या बृहस्पतिवार से इस प्रयोग को शुरू करना चा सवा पाव उड़द के आटे की रोटियाँ बनाकर उन्हें सफेद रूमाल रखें, फिर उन रोटियों से १०८ गोलियाँ बनाएँ तथा उनमें से प्र गोली को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। तदुपरान्त उन गोलियों शेष बची रोटी को रूमाल में रख कर किसी नदी के किनारे प और गोलियों को नदी में फेंक कर, शेष बची रोटी को टुकड़े-टु

रके पक्षियों को खिला दें। मन्त्र के आरम्भ में 'बिस्मिल्लाह' तथा रूद' पढ़नी चाहिए।

मुसीबत टालने हेतु

"शेख फरीद की कामरी अब अंधियारी निसि।
तीनों चीज बराइये आग ओला-पानी बिस॥"

अगर मार्ग में आग लग जाये अथवा पानी बरसने लगे तो इस न्त्र को २१ बार पढ़कर ताली बजाने से मुसीबत दूर हो जाती है।

दुकान की बिक्री बढ़ाने का मन्त्र

अगर किसी ने तान्त्रिक प्रयोग करके दुकान बांध दी हो तो नेम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करने से बिक्री खुल जाती है।

शुक्लपक्ष के पहले शुक्रवार को निम्न मन्त्र जपें। फिर बिस्मिल्लाह' और 'दरूद' पढ़ें।

"बिर्रिंज्कुलफत हू दुकान 'अमुक' की विसुतन 'अमुक' का जारीगर्दी बहक्क या फताही या वासितो।"

कार्य सिद्धि हेतु इस्लामी शाबर मन्त्र

"ओम नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा, सुलेमान पैगम्बर के चारों दिक चार मवक्किल तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया, एक मवक्किल पूरब को धाया, देव-दानवों को बांधि लाया, दूसरा मवक्किल पश्चिम को धाया भूतप्रेत को बांधि लाया, तीसरा मवक्किल उत्तर को धाया अऊत-पितर को बांधि लाया, चौथा मवक्किल दक्खिन

को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ लाया। चार-चार मवक्कि चहुं दिशि धावे, छल-छिद्र कोऊ रहन न पावे, रोग दोष सब बहावे, शब्द साँचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।''

कपड़े के चार पुतले बनाकर आधी रात के समय चारों कोने गाढ़ दें, फिर लोबान जलाकर उक्त मन्त्र को जपें तो कार्य सिद्ध हो है।

शाबर मन्त्र कार्य की सफलता के लिए

''ओम् नमो बिस्मिल्लाहि रहिमान रहीम गजनी सों च मुहम्मदा पीर, चला चला सवासेर का तोला खाय, अस्सी को का धावा जाय, सफेद घोड़ा सफेद पलान, जापै चढ़ा मुहम्म ज्वान, नौ सौ कुत्तक आगै चलें, कांधा पीछे भारत डाला ध्या चलै चालि-चालि रे मुहम्मदा पीर, तेरे सम नहीं कोई वीर, हम चोर को ल्याव, सात समुद्र की खाई सों ल्याव, ब्रह्मा के वेद स ल्याव, काजी की कुरान सों ल्याव, अठारह पुराण सों ल्याव जाव-जाव जहाँ होय तहां सों गढ़ा सों पर्वत सों कोट सों किल सों ल्याव, मुहल्ला गली सों ल्याव, कूंचा चौराहा सों ल्याव श्वेत खाना सों ल्याव, बारह आभूषन सोलह सिंगार सों ल्याव काजल कजरौटा सों ल्याव, मढ़ी की मौंठ सों, हाट-बाजार स ल्याव, खाट सों, पाया सों, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा की घूमत बलाय सों ल्याव, हाजिर करौ, हाड़-हाड़ चाम-चाम नख-सिख रोम-रोम सों ल्याव, रे ताहया सिलार जिन्द पीर मारतौ पीटतौ तोड़तौ पछाड़तौ हाथ हथकड़ी पाँव बेड़ी गला में तौक उल्टा कब्जा चढ़ाय मुख बुलाय सीम खिलाय कैसे-कैसे हूं ल्याव,

लिए मत आव, ओम् नमो आदेश गुरु को।"

मध्य रात्रि में चौका लगाकर लोबान जलाकर उपरोक्त मन्त्र को बार जपा जाय तो कार्य सिद्ध हो जाता है।

रोजी मिलने का प्रयोग

पहले चमेली के तेल का दीपक जलाकर, उसके सामने सवा मिठाई तथा सुगंधित इत्र रखकर, लोबान की धूनी दें। फिर ़मल्लाह पढ़कर दरूद पढ़ें। मन्त्र इस प्रकार है—

"या जिब्राईल या दरदाईल या रफ्ताईल तन्काफील बहक्क बुहह।"

रोजी मिलने का मन्त्र

प्रात:काल स्नानोपरांत प्रतिदिन ४९ की संख्या में इस मन्त्र का ाभिमुख बैठकर जप करने से थोड़े ही दिनों में रोजी की प्राप्ति ी है।

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या इश्राफील बहक्क या अल्ला अल्ला हुस्नसल्ला मुहम्मद नव धारक वसल्लम।"

मन्त्र जाप से पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़ें, फिर १००१ बार नलिखित मन्त्र को पढ़ें—

"या अल्लाहो या रहमानो या रहीमो या हैयो या कैयूमो।"

प्रतिदिन प्रात:काल लोबान की धूनी देते रहें।

सर्व सिद्धिदाता मन्त्र

अगर कोई व्यक्ति यह चाहे कि उसकी कामनाएँ पूर्ण हों तो वह

इस अमल को पढ़ें और जब तक अमल समाप्त न हो जाए एक की भी नागा न करें।

"अल्लाह हू हू हू" (तीन बार पढ़ें)

इस मन्त्र को एक हजार बार नदी में अपने पैर लटका कर रहे।

मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए

इस अमल से अनेक लाभ हैं। प्रतिदिन इसका जाप अमल यह हैं—

"या अल्लाह या रहमान या रहीम या ही या क्यूम"

बिस्मिल्लाह के लाभ

बिस्मिल्लाह शरीफ के अनेक लाभ हैं। उनमें से कुछ हैं—

जो मनुष्य सोते समय २१ बार 'बिस्मिल्लाह' को पढ़ेगा भगवान उसको हरेक बला से सुरक्षित रखेगा। अगर किसी निर्दयी सम्मुख पचास बार 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर जाए तो वह अच्छा व्यव करेगा।

अगर पानी के शकोरे पर ११८५ बार बिस्मिल्लाह पढ़ी और फूँक करके प्रेमी प्रेमिका दोनों पीलें तो मुहब्बत हो।

अगर बिस्मिल्लाह शरीफ ३१ बार लिखी जाए और जिस के सन्तान न ठहरती हो वह स्त्री इसे यन्त्र की भाँति अपने पास रखे सन्तान जीवित रहेगी।

संकट दूर करने के लिए

संकट दूर करने के लिए निम्नलिखित मन्त्र का नियमित जाप करें। अल्लाह की रहमत से संकट दूर हो जाएगा।

इलाही बहुर्मत सईद मही अलदीन
इलाही बहुर्मत शेख मही अलदीन
इलाही बहुर्मत गौस मही अलदीन
इलाही बहुर्मत ख्वाजा मही अलदीन
इलाही बहुर्मत गरीब मही अलदीन
इलाही बहुर्मत मसकीन मही अलदीन
इलाही बहुर्मत लेख मही अलदीन
इलाही बहुर्मत कुतुब मही अलदीन
इलाही बहुर्मत मखदूम मही अलदीन
इलाही बहुर्मत दरवेश अलदीन
इलाही बहुर्मत वली मही अलदीन

इसे नौचंदी जुमेरात से आरम्भ करें और जब तक संकट दूर न हो जाए इसको करते रहें।

तरक्की होना

जो कोई शख्स 'यावासितो' खाना खाने के बाद एक सौ ग्यारह बार पढ़ा करे तो बड़ी तरक्की होवे।

हर उद्देश्य पूरा हो

जो कोई शख्स निम्न आयत या दो हजार बार पढ़े और २१ दिन

तक बराबर पढ़े जो भी इच्छा होगी पूरी होगी आयत यह है—
"व मग्यं यता बकल्लो अलल है लाफ हुबा हसबुहू।"

ऊपरी बाधा दूर हो

जो व्यक्ति रोजाना ११११ मरतबा निम्न आयत को पढ़े तो स कष्ट दूर हों। "बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम होवल्ला आलीमु जो ला इलाहा इल्लाह आलिमुल गैवे शारदे हुबर रहमाँ नूर रहीम।

लड़का ही हो

अगर किसी के लड़कियाँ ही होती हों तो इस इल्म को औ के पेट पर उँगली से लिखे, लड़का पैदा होगा, पहले बिस्मिल्ल लिखे फिर यह लिखे—

"बिसमिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम होवल्ला आलीमुल जी ह इलाहा इलल्लाह आलिमुख् गैवे शादते हुबर रहमाँ नूर रहीम।"

लाभ प्राप्ति का मन्त्र

रात्रि के समय सर्वप्रथम 'बिस्मिल्लाहहिर्रहमानुर्रहीम' कहे। फि दरूद का इक्कीस बार पाठ करे—"अल्लाहुम्म। सल अलामुहम्मदिन व अला आल मुहम्मदिन व बारक वसल्लम। इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का एक हजार बार उच्चारण करे-

"यागफुरो।"

इस प्रकार इक्कीस दिन तक प्रयोग करने के उपरान्त लाभ क सूरत दिखलाई देने लगती है।

रोग होने पर

"अअ्जु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम. या बुदूहु या गफूरू इन्नह मिन सुलेमान मिन दावूद अलैहमस्सलामु यागूस या अहिय्यन इशराहिय्यव्वं फिस्सफरि खालिदिव्वं अव बिअस्मिहि दरकाति बिओनिल्लाहि फी शीफाइन व अलैहिम या हाफिजु या अल्लाहु या अल्लाहु या अल्लाहु बिरहमतिक या अरहमर्राहिमीन।"

उपरोक्त मन्त्र से ५१ बार जल अभिमन्त्रित करके पिलावें और रोगी को उसी जल से स्नान भी करावें।

स्वप्न बन्द हों

अगर रात्रि में सोते समय बहुत भयानक स्वप्न आते हों, तो निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए नाड़े पर सात गिरह बांध दें और सिरहाने रख दें। स्वप्न बन्द हो जायेंगे। मन्त्र इस प्रकार है—

"पनाह जोस्ताह बिन बिस्तम खाब अमुक बिन अमुक।"

इच्छा पूर्ति हेतु

"या हय्यु या कय्यूमु बिहक्कि लाइलाह इल्ला अन्ता सुब्हानक इन्नी कुन्तुम मिनज्जालिमीन.।"

अल्लाह पर यकीन रखकर यह मन्त्र प्रतिदिन १०१ बार पढ़े। कार्यकाल में गरीबों पर दया करे, दान दे तो दुआ से अल्लाह आपकी इच्छापूर्ति करेगा।



वशीकरण प्रयोग

वशीकरण का अर्थ है वश में करना अर्थात् उस पर इतने हा हो जाना कि वह कठपुतली के समान आपके इशारे पर नाचना शु कर दे।

वशीकरण एक प्रकार से सम्मोहन का ही परिष्कृत रूप है सम्मोहन में एक क्रिया द्वारा व्यक्ति किसी को अपने संकेतों चलाता है। हम जो भी देखते या सुनते हैं, उसका हमारे मन-मस्तिष्क पर तत्काल प्रभाव होता है। आपके सामने एक छोटा सा बच्च यकायक किसी तेज गति से आते वाहन के नीचे आ जाए (ईश्वर क ऐसा कभी न हो) तो उसी समय बच्चा तो दूर, बिना चोट लगे आ भी चीख उठेंगे—हाय! यह क्या हो गया? और आप थर-थर कां उठेंगे। चोट लगी बच्चे को, शिकार हुआ बच्चा पर चीखे आप घबराए आप। क्यों आपने देखा आपके दिल और दिमाग पर सी प्रभाव हो गया। आप लाख प्रयत्न करने पर भी उस चीख को रो नहीं सकते हैं। संसार में भला ऐसा कौन आदमी है, जिसके साम इस प्रकार दुर्घटना हो और वह अप्रभावित रह जाए।

आपको किसी ने अपशब्द कहे, आपने सुने··· । तत्काल आपका चेहरा लाल हो उठेगा, आपका खून खौल जाएगा। आप गुस्से से भ जायेंगे। उस समय आप अपने पर काबू नहीं रख सकते हैं। आप सा

ɔ कर गुजरने के लिए तैयार हो जायेंगे।

यह स्वाभाविक क्रियाएँ कहलाती हैं। आदमी का वश इन पर ं चलता। जब आदमी का वश नहीं चलता और जिससे वह ोभूत हो जाता है, तो वह 'वशीकरण' है।

अब मैं आपके समक्ष इस्लामी तन्त्र में प्रयोग होने वाले अनुभूत ोकरण के कुछ प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्यार का इत्र

प्रेम के लिए निम्नलिखित प्रयोग उत्तम है—

सूरए मुज्मिल शरीफ को ग्यारह बार दरूद शरीफ के साथ वर पढ़कर इत्र पर दम करे और प्रेमिका को सुघाएँ। वशीकरण ा।

आमाल

'या बदूद'

रात्रि के समय कर्बला की ओर मुख करके बैठकर आँखें बन्द के प्रेमिका का ध्यान करें और एक हजार एक सौ बार उपरोक्त त्र को ग्यारह-ग्यारह बार, पढ़ें, इसके पश्चात् उस शरबत पर फूँक : उस शर्बत को प्रेमिका को पिला दें। वशीकरण होगा। इस प्रयोग एक सप्ताह तक करें।

वशीकरण

निम्नलिखित मन्त्र को सुबह और शाम दोनों समय सिर्फ ७० : पढ़ें और अपना उद्देश्य कहें। आलिमों का कहना है केवल ४१

दिन में मन की मुराद पूरी होती है।

मन्त्र इस प्रकार है—

"फलां बिन फलां अली जब फ्लां बिन फ्लां अ असाअत अल वहा अलवहा अलवहा अल अज्ल अल अ

वशीकरण

इस प्रयोग को चढ़ते महीने में शुक्रवार से शुरू करें। श समय चावल या चावल से बना भोजन ग्रहण करें। स्नान करके चादर बिछाकर और सफेद ओढ़कर खुले आसमान के नीचे निम्न का जाप करें। भगवान ने चाहा तो सिर्फ चार दिन में सफलता होगी।

मन्त्र इस प्रकार है—

"फसयकफींकहूमुल्लाहु व हुबस्समीउल अलीम.।"

वशीकरण

काले घोड़े की पुरानी नाल ले लें। उस नाल के ऊपर सुपुत्र अमुक अला हुब्बे अमुक सुपुत्र अमुक आशिक शुद्ध खुद लड़की की माँ का नाम लिखना आवश्यक है। अब इस नाल को में डाल दें। यह प्रयोग आठ दिन तक लगातार करना है। इस को रविवार अथवा बुधवार को ही करें।

वशीकरण

सबसे पहले 'बिस्मिल्लाह' कहकर फिर निम्नलिखित म १००१ बार पढ़े—**"अल्लाहुस्समद।"**

उक्त मन्त्र के प्रारम्भ तथा अन्त में 'दरूद' पढ़े। इस प्रकार मन्त्र हो जायेगा।

"अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले ही ्मदिन व बारक व सल्लम।"

फिर उक्त मन्त्र को ३१ बार पढ़कर दोनों हथेलियों पर फूँक मारे हथेलियों को जोर से पृथ्वी पर मारते हुए कहें—

'या अल्लाह अमुक सुपुत्र/सुपुत्री अमुक को मेरे बस में '

इस प्रयोग को निरन्तर ३१ दिनों तक निरन्तर करते रहने से ्न वशीकरण होता है।

वशीकरण प्रयोग

वशीकरण हेतु निम्नलिखित मन्त्र का ३१ दिनों तक जप करें। जप से पूर्व एक बार 'बिस्मिल्लाह' तथा अन्त में 'दरूद' पढ़ना ा आवश्यक है।

"लोइलाह इल्लिल्लाह धरती से आसमान तक लाइलाह ्नल्लाह अर्श से कुर्सी तक लाइलाह इल्लिल्लाह लोह से कलम लाइलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह 'अमुक' के बेटे ुक' को मेरे वश में कर।"

जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो, उसकी माँ के नाम के साथ ्के नाम का उच्चारण करना आवश्यक है।

इस मन्त्र द्वारा ३१ बार अभिमन्त्रित पानी जिसे पिला दिया ्गा वह वशीभूत हो जायेगा।

वशीकरण शाबर मन्त्र द्वारा

"अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार, नाम मोहिनी मोहे जग संसार। मुझे करे मार मार उसे बाँचे तेरे डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर पड़े वज्र की बहक्क लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।"

किसी भी कृष्ण पक्ष के शनिवार से आरम्भ करके तीसरे श तक प्रतिदिन २००२ बार उपरोक्त मन्त्र का जप करें। जप करते चिराग तथा मिठाई पास रखें तथा लोबान की धूनी दें। प्रयोग के स्त्री के बांये पाँव की मिट्टी लाकर, उसे इस मन्त्र द्वारा ३ अभिमन्त्रित करके सिर पर डाल देने से वह स्त्री वशीभूत हो जा

स्त्री वशीकरण

"इन्ना आत्वेना शताना मेरी शिकल बन 'अमुक' के जाना, उसे पास लाना, न लावे तो तेरी बहन भानजी पर ती तीन तलाक।"

चारपाई के किनारे खड़े होकर, हाथों से गुड़ की एक लेकर, उस डली पर उक्त मन्त्र को ११२१ बार पढ़ कर फूँके, बाद गुड़ की डली को खाट के नीचे रखकर सो जाएं। प्रातःकाल गुड़ बांट दे। इस प्रकार ७ दिन तक करें, तो मनचाही स्त्री वशीभू जाती है।

स्त्री वशीकरण

"कामरूदेश कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जो

माइल जोगी ने दिया पान बीड़ा, पहला बीड़ा आती जाती, ा, बीड़ा दिखावे छाती तीजा बीड़ा अंग लिपटाई, 'अमुक' ाय पास चली आई, दुहाई गुरू गोरखनाथ की।"

अमावस्या की रात में यह मन्त्र ११४४ बार पढ़ने से सिद्ध हो ता है। फिर देशी पान के बीड़े को ३१ बार अभिमन्त्रित करके सको खिला दिया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगा।

स्त्री वशीकरण प्रयोग

"कामाख्या देश कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी, माइल जोगी ने लगाई फुलवारी, फूल तोड़े लोना चमारी, जो ा फूल की सूँघे बास, तिस का मन रहे हमारे पास, महल छोड़े, छोड़े, आंगन छोड़े, लोक-कुटुम्ब की लाज छोड़े, दुहाई ना चमारी की, धनवन्तरि की दुहाई फिरे।"

किसी भी शनिवार से शुरू करके ३१ दिनों तक नित्य ११४४ र मन्त्र का जाप करें तथा लोबान, दीप और शराब रखे फिर किसी ल को ५० बार अभिमन्त्रित करके स्त्री को दे दें वह उस फूल को घते ही वश में हो जाएगी।

स्त्री वशीकरण

"बड़ पीपल का थान, जहाँ बैठा अजामील शैतान मेरी बीह मेरी सूरत बन 'अमुक' को जा रान, जो राने तो धोबी की द चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े, जो राजा चाहे राजा ा, मैं चाहूँ अपने काज को, मेरा काम न होगा तो आनसी में तेरा मनगीर रहूँगा।"

कृष्ण पक्ष के शनिवार से शुरू करके ३१ दिनों तक, आधी रात के समय २१ राई के दाने हाथ में लेकर प्रत्येक दाने के ऊपर उक्त मन्त्र को २१-२१ बार पढ़कर आग में डालता जाय। इस प्रकार स्त्री वशीभूत होती है।

स्त्री वशीकरण

"अलफ अलोप एक रहमान, सुन शैतान मेरी शकल बन 'अमुक' को जा रान, न राने तो तेरी माँ बहिन को तीन सौ तीन तलाक।"

शुद्ध बेसन का चौमुखा दीपक बनाकर उसके कोने पर अपने दाँये हाथ की अनामिका अंगुल का रक्त लगाकर, उसमें तेल भरकर लाल रंग की बत्ती रखें। फिर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठ जाय तथा दीपक की बत्ती जलाकर गूगल की धूप दें। भोग के लिए भुने हुए जौ अपने पास रखे। फिर ११०८ बार जपकर सो जाये दीपक को जलता रहने दें, यह ७ दिनों तक करते रहने से स्त्री वशीभूत होकर स्वयं आती है।

स्त्री वशीकरण

"अमुक गुरु गुफतार जाग-जाग अल्लाउद्दीन शैतान सात बार अमुक के जिपा आन जो न माने तो तेरी अम्मा की तलाक हमशीरा की तलाक।"

उपरोक्त मन्त्र को ३१ बार सुपारी पर पढ़े तथा उसे पान में रखकर खिला दें तो इच्छा-पूर्ति होती है।

स्त्री वशीकरण

''कामरूदेश कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने लगाई बारी, फूल चुने लोना चमारी, एक फूल राता, दूजा फूल माता, एक फूल हंसा, दूजा फूल बिहंसा, तहाँ बसै चम्पा का पेड़, चम्पा के पेड़ में रहे काला भैरू, भूतप्रेत ये मरें, मसान, ये आवे, किसके काम ये आवे टोना टामन के काम, भेजूँ काला भैरू को लावे मुश्कें बांध बैठी हो तो बेगी लाव, सूती हो तो लाव, वह सौवे राजा के महलों, प्रजा के महलों, मुझसे होनी राजी, फूल दूँ उसी के हाथ, वह उठ लागे मेरे साथ, हमको छांहि यह घर जाय, छाती काटि वहीं मर जाय, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा चूके उमाह सूखे लोना चमारी बहरे जोगी के कुण्ड में पड़े वाचा छोड़ कुवाचा जाय तो 'अमुक' खखार में पड़े।''

शनिवार के दिन चम्पा के पेड़ की डाली में लाल, रेशमी डोरा बांध आएँ। रविवार के दिन प्रातःकाल उसी डाली को, उक्त मन्त्र से ३१ बार अभिमन्त्रित कर तथा लोबान की धूनी देकर, घर ले आएँ। फिर रात के समय डाली के आगे दीपक रखकर मन्त्र का जाप करें तथा १३१ बार मन्त्र का जप करें। इस प्रकार नित्य ३१ दिनों तक करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। आवश्यकता के समय चम्पा के फूल को इस मन्त्र से १५१ बार अभिमन्त्रित करके, जिसको सुँघाया जाएगा वही वश में रहेगा।

वशीकरण प्रयोग

अगर किसी को (स्त्री अथवा पुरुष) वश में करना है तो

निम्नलिखित मन्त्र को किसी भी पीली मिठाई पर फूँक दें और वह मिठाई उसे खिला दें। यह मन्त्र मिठाई पर ७०० बार पढ़ना है। वशीकरण होगा।

मन्त्र इस प्रकार है—

या जुहराईलु बहक्क या जाल या जुल जलाल बलइक्राम।

स्त्री वशीकरण हेतु

"या काजीलहा जाति या काफीलमुहय्याति या राफिअद्दरजाति या दाफिअलबय्याति या मुफ्लहुल अबावबि या शाफील अमराजि या हलल्लमुश्किलात्ति या मुसब्बिलअम्बाब या मुजाबद्दअवाति या अरहमर्राहिमीन.।"

उपरोक्त मन्त्र को रविवार अथवा बुधवार को शुरू करें। किसी भी मीठी वस्तु लेकर उस पर उनासी बार पढ़ें और फूँक मारें। लोबान की धूनी वातावरण में रहे। इसके बाद वह मिठाई खिला दें। वशीकरण होगा।

रूठी प्रेमिका को मनाने के लिए

निम्नलिखित मन्त्र या तो रात को सोते समय प्रेमिका के मस्तक पर अंगुली से लिखें और फूँक मारें या फिर कोई भी वस्तु प्रेमिका को अभिमन्त्रित करके चुपचाप खिला दें।

मन्त्र इस प्रकार है—

"बिहक्क अय्याक नअबुदू अय्याक नस्तअीनु सअं अमुक बिन अमुक दूर शबद।"

प्रेमिका परेशान न करे

निम्नलिखित मन्त्र को प्रेमिका के सामने जाने से पहले ३१ बार पढ़ें और अपने ऊपर भी फूंक लें। मन्त्र इस प्रकार है—

"फकशफ़ना अनक गताअक फबसरूक़ ल यौन हदीदुन.।"

विविध कामनापूरक मन्त्र

इस अध्याय में विभिन्न मनोकामनाओं एवं विभिन्न कार्यों की सिद्धि करने वाले प्रयोगों का उल्लेख भी किया जा रहा है। यह सब हिन्दू तथा मुस्लिम तान्त्रिकों द्वारा प्रयोग में लाये जाते हैं।

प्रत्येक प्रयोग की लिखित निर्देशानुसार साधना करनी आवश्यक है।

मोहन प्रयोग

निम्नलिखित मन्त्र को अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर ३१ बार पढ़ने के बाद दोनों हथेलियों को अपने मुँह पर फेरकर, जिस सभा में जायेगा वहीं सफलता प्राप्त होगी तथा सब लोग मोहित हो जाएँगे। मन्त्र इस प्रकार है—

"सलामुन कौलुनमिनरविर्रहीम तनजीकुल अजीजुर्रहीम।"

वशीकरण

इस अमलियात के बारे में लिखा है कि जो कोई व्यक्ति किसी को दीवाना बनाना चाहे वह शुक्रवार (जुमा) से इस अमल को शुरू

करे। हर रोज ४० बार ४० दिन तक पढ़े। भगवान की कृ
वशीकरण अवश्य होगा। मन्त्र निम्न है—

"बिस्मिल्लाह अलरहमान अन्नरहीम इलाही त जिबराईल बा मिकाईल वा इसराफील वा तोरीत मूसा वा अं ईसा और फिरकान मुहम्मद सले अल्लाह अले वा आल सलम।"

जो कोई ४० रोज तक एक सौ बार एक दाना फिलफिल पर चढ़कर जलाएगा प्रेमिका अथवा प्रेमी तुरन्त हाजिर हो जाए

हर कार्य पूरा हो

अगर कोई व्यक्ति आयतुल शरीफ के बाद दो हजार बा और ११ दिन तक बराबर पढ़े उसका जो भी कार्य होगा पूरा आयत मुबारक निम्न है—

"व मग्यं यता बकल्लो अलल हैलाफ हुबा हसबुहू।"

भूतप्रेत बाधा दूर हो

जो व्यक्ति चाहे भूतप्रेत बाधा दूर हो तो इस आयत शरीफ रोजाना १११ बार पढ़े। आयत शरीफ निम्न है—

"बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम होवल्ला आलीमुल जी अलाहा इल्लाह आलिमुल गैवे शादते हुबर रहमा नूर रहीम।"

लड़के ही पैदा हों

यदि क़िसी के लड़कियाँ होती हों तो इस इल्म को औरत के पर उँगली से लिखे इन्शा अल्लाह लड़का ही पैदा होगा, पहले

बिसमिल्लाह लिखे इल्म शरीफ निम्न है—

"सुबहान अल्लाह लम यलिद बलम यूलद बलम या कुल लहू कुफी बन अहदइन्नी सम्मेतो इसमो हू मुहम्मद व अहमदा व महमूदन बिरह मतेका या अर हमर राहिमीन।"

अल्लाह की मेहरबानी हो

सबसे पहले वह हुक्का बीड़ी से परहेज करे और साफ रहे झूठ न बोले और हर रोज तीन हजार एक सौ पच्चीस बार इस दरूद शरीफ को पढ़े। दरूद शरीफ यह है—

"अल्लाह हुम्मा स्वल्ले अला मुहम्मददिन व अला आले मुहम्मदिनिन नबी उम्दी।"

शत्रु-भय-नाशक मन्त्र

"या सरफाईल बहक्क या जे या जाकियो।"

इस मन्त्र का २८ दिन तक नित्य ५०१ की संख्या में जप करते रहने से शत्रु का भय बिल्कुल दूर हो जाता है।

धन प्राप्त करने वाला मन्त्र

"या असवा कील बहक्क या रे या रहीम।"

इस मन्त्र को ३१ दिनों तक नित्य प्रात:काल १०००० की संख्या में जपें अन्तिम दिन एक सफेद रंग के मुर्गे के कान में इस मन्त्र को ८००० बार पढ़कर उसे छोड़ दें, तदुपरान्त वह जिस स्थान पर जाकर रुके और जिस जगह अपनी चोंच मारे, वहीं पर 'धन गढ़ा हुआ है' मान लेना चाहिए। आगे भगवान की इच्छा है।

धन प्रदायक मन्त्र

"या हमवाकील बहक्क या सीन या समीओ।"

इस मन्त्र को दोपहर में २ बजे के समय ७१ बार जपने से इच्छित अनुभव प्राप्त होता है।

स्तम्भन मन्त्र

"या इजराईल बहक्क या शीन शहीदो।"

उपरोक्त मन्त्र पढ़ने से शत्रु के मुख का स्तम्भन होता है।

लाभ प्राप्ति का प्रयोग

रात्रि के समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

"बिस्मिल्लाहहिर्रमानुर्रहीम।"

तदुपरान्त निम्नलिखित दरूद का पाठ करें—

"अल्लाहुम्म सिल्ले अलामुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन व बारक वसल्लम।"

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का एक हजार बार उच्चारण करे—

'यागफरो।'

इस प्रकार से ३१ दिन तक प्रयोग करने के उपरान्त अनेक प्रकार से लाभ होने लगता है।

दरिद्रता-नाश करने का मन्त्र

"या कवीयो या गनीयो या मलीयो या बकीयो।"

इस मन्त्र का इक्कीस बार पाठ करना चाहिए। इस साधना को ४१ दिन तक निरन्तर करने से दरिद्रता दूर होती है।

शत्रु-मारण प्रयोग

"जल की जोगिनी पाताल का नाग, उठ अबारि जहाँ लगाऊँ तहाँ दौड़ के मार, दौड़ कर दुहाई मुहम्मदावीर की तुर्कनी के पूत की दुहाई, भोला चक्रसी की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

पीपल के पत्ते में थोड़ा-सा लाल सुगन्धित गुलाल लपेट कर, उसे अपने मुँह में रखें, फिर पानी में गोता लगाकर ३१ बार उपरोक्त का जप करें फिर पत्ते में से गुलाल निकाल कर गुलाल को गूगल की धूनी देकर ३१ बार अभिमन्त्रित करके जिस शत्रु के ऊपर डाल दिया जायेगा उसे मृत्यु-तुल्य कष्ट होगा।

मुख्य स्तम्भन प्रयोग

"शाह आलम कुत्व आलम जेर करो 'अमुक' को दफा करो जालिम।"

शुक्ल पक्ष की पहले वृहस्पतिवार से आरम्भ करके १८ दिनों तक रात के समय दीपक (चिराग) जलाकर तथा फूल, बताशे एवं चीनी से बनी रेवड़ी चढ़ाकर लोबान की धूप देकर इस मन्त्र का नित्य ४१ बार जप करें।

दाढ़ के दर्द का प्रयोग

"नमो कामरूदेश कामाक्षादेवी जहाँ बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने पाली गाय, नित उठ वन में चरावन जाय वन में

चरै रूखा सूखा, घास खाय पी के गोबर किया, जासे नि
कीड़ा सात। सूत सुताला पूंछ पुछाला, धड़ पीला मुँह का
डाढ़ दांत गालै मसूढ़ा पीड़ा करै तो गुरु गोरखनाथ की
फिरै। शब्द साँचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए लोहे की ४ कीलों को
में ठोंक देने से दाढ़ का दर्द दूर हो जाता है।

पानी बरसने के लिए

अगर पानी न बरसता हो तो एक कागज पर '**बा तिहा इस्महाये इसहाब कहफ**' लिखकर दरिया में डाले। पानी
बरसेगा।

पानी बरसने के बाद ४० बार अक्षर 'बे' कागज पर लिखें
पेड़ पर लटकाये ताकि हवा उसको हिलाती रहे। पानी जरूर बर

आधासीसी का झाड़ा

अगर आधे सिर में आधासीसी का दर्द हो तो नीचे लिखे
का झारा देने से दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है।

''काली चिड़िया किलकिली, काले ही बनफल खाए।
खड़े मुहम्मद शाह हाँक दें, आधासीसी जाए।''

पहले ग्रहण दीपावली अथवा होली की रात को ११,०००
संख्या में जप कर मन्त्र को सिद्ध कर लें, फिर रविवार को दो
बारह बजे के समय रोगी को सूर्य की रोशनी में खड़ा कर दें तथा
इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर उस पर फूँक मार दें तो आधासीसी
दर्द तुरन्त दूर हो जायेगा।

पानी बरसने से रोकना

अगर पानी बहुत बरसे तो ४१ बार अक्षर 'काफ' को कागज पर लिखें और पेड़ पर लटकाये पानी बरसना रुक जायेगा।

पीड़ा निवारक मन्त्र

"लश्कर फरऊन दर रोदनी लगर्क शुद।"

जिस जगह दर्द हो, वहाँ उपरोक्त मन्त्र को ३१ बार मिट्टी से लिखें। फिर मिट्टी के बराबर गुड़ तुलवाकर छोटे बच्चों को बाँट दें तो कष्ट दूर हो जाता है।

बवासीर पर प्रयोग

"ईसा ईसा काँच कपूर चोर के सीसा अलिफ अक्षर जाने नहीं कोई। खूनी बादी एकु न होई। दुहाई तख्त सुलैमान बादशाह की।"

उक्त मन्त्र ग्रहण होली या दीपावली की रात में ११,००० की संख्या में सिद्ध कर लें, फिर इसी मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित पानी रोगी को आबदस्त लेने के लिए दें।

हाजरात का मुहम्मद पीर मन्त्र

"बिस्मिल्लाहेर्रहमानिर्रहीम महम्मदा ताइयासिलारन बलखताजी का असवार यहाँ चलता कौन-कौन चल्या अजैगिर पर पर्वत चले हाजी चले गाजी चले ढसेल बाजंतभेरी अहेमदा चलंत महेन्द्रा चलंत राजा हठीली चलंत सत्तर सिला चलंत बहत्तर

बल्लभचलंत एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर चलंत बा पीर चलंत चौसठ जोगनी चलंत नौ नारसिंह चलंत बारह रा चलंत चौंसठ मूसा चलंत सुलेमान पैगम्बर का तखत च लालपरी चली सुपेदपरी चली जरद परी चली स्याम परी च सबज परी चली हूर परी चली जूर परी चली अलोल परी च आसमान परी चली आकाश से उतरी बराय खुदा मेरे काम सिताबा उतार ल्यावणा एक चलंता एक सौ चल्या उड़ा कु देव चल्या मन्दाऊ कालेश्वरी चली लका पै रावण चल्या हनु चले घूमन गरसूँ देवी घूमा चली नदी नाले सूं चली मन्दो रावनपुरी सूं चली उलटी पाखर सुलटी लागी जो कोई व हमारी बुरी उल्टी सोमरली देखूँ ते तालमन्त्र तेरी श बिस्मिल्लाहेर्रहमानिर्रहीम उत्तर का बाजा बजा उत्तर का बादश आया पश्चिम का बाजा बजा पश्चिम का बादशाह आया पू का बाजा बजा पूरब का बादशाह आया काले काले के अस अपनी अपनी जमात सिताबी लेकर आवणा जहाँ हकालूँ ज हाजिर रहेना देखुदा महम्मदा की सुखीर पीर नीर नीला घो नील जीन जिस पर चाढ़े आया महम्मदा पीर रोजा करै निव गुजारै अन्न पानी के कने न आवै खाज ग्वाय अखज पर हैं मुसलमान बहिस्त में जाय सवामन लोहे की जंजीर तोड़तो ज तोड़तो आव हाथ कुदाड़ी गले जंजीर ऐसी कही सुनो मह पीर अपनी मुद्रा पेश करो पराई मुद्रा तोड़ डाल हमारी हक तुम्हारी पुकार किले नारासिंह किले की असवारी ठः ठः स्वाहा।

सवा गज सफेद सूती कपड़ा लेकर उसको गूगल तथा सा नमक की धूप दें। फिर सवा सेर चावल रखें। चौमुखा दीपक जला

फिर कन्या को नये वस्त्र पहनाकर, सामने बैठायें तथा उक्त मन्त्र से १४१ बार अभिमन्त्रित कर गुड़ की एक गोली उस कन्या को खिलायें। फिर उससे दीपक पर दृष्टि केन्द्रित करने को कहें। अब कन्या से जो कुछ पूछा जाएगा, उसका वह तुरन्त उत्तर देगी।

हाजरात

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम खुदाई बड़ा तू बड़ा जैनुदीन पैगम्बर दुनी तेरी सादात फुरो वादा नामुरादी वेवुत यादी तुर्क मा पीर ताइया सिलार देखूँ तेरी शक्ति बेग बाँधि ल्याव नौ नारसिंह चौरासी कलुवा ब्रह्मा अठोत्तर से शाकिनी कमण दुरामन छलछिद्र प्रेत चोर चादर अगिया बेताल बेगी बाँधि ल्याव जो न बाँधि ल्यावे तो दुहाई सुलेमान पैगम्बर की।"

शुक्रवार को आरम्भ करके तैल, इत्र, लौंग, धूप एवं मिठाई में पूजन करके प्रतिदिन ३१ बार मन्त्र का जप करें तो ४१ दिन में सिद्ध होता है। सिद्ध करने के बाद प्रयोग शुरू करें। पहले मिट्टी से जगह लीपकर चावल बिछाये। फिर रूई की बत्ती बनाकर, पट्टे पर त्रिशूल लिखकर, क्वांरी कन्या को वस्त्र पहनाकर सामने बैठायें। फिर चावलों को अभिमन्त्रित कर, उस कन्या के शरीर पर मारें तथा उसके मस्तक पर दीपक रखकर, जो पूछना चाहें, वह पूछें।

खुशहाली के लिए

निम्नलिखित मन्त्र को प्रतिदिन ९०३ की संख्या में जप करने से खुशहाली आती है।

"या किलकाईल बहक्क या जीम या जव्वादी।"

इस मन्त्र का जप सूर्योदय से पूर्व ही आरम्भ कर दिया जाना चाहिए।

मनोभिलाषा पूरक मन्त्र

"या किलकाईल बहक्क या जीम या जव्वादी।"

उक्त मन्त्र को ११ रात तक, नित्य ३००० की संख्या में जपने से मर्दाना ताकत प्राप्त होती है। इसके अलावा समस्त अभिलाषाएँ भी अवश्य पूरी होती हैं।

गए हुए मनुष्य को लौटाने वाला

"या महकाईल बहक्क या खे या खलिको।"

इस मन्त्र को आधी रात के समय किसी खुले आकाश के नीचे खड़े होकर १००१ की संख्या में जपने तथा जो व्यक्ति घर से चला गया हो उसके उद्देश्य से आकाश की ओर फूँक मारने से, वह गया हुआ व्यक्ति शीघ्र घर लौट आता है।

स्मरण रखें इसमें अगर 'ख' के अन्त में 'या खबीरो' शब्द और बढ़ा लिया जाये तो विस्तृत हाल मालूम होता है।

धन-वृद्धिकारक

"या दरदाईल बहक्क या दाल या दैयानो।"

सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को १००१ की संख्या में प्रतिदिन पढ़ने से धन की वृद्धि होती है।

जो कोई चाहे कि अमुक व्यक्ति अमुक के वश में हो, तो सात कीलें लें। जिसमें कि हरेक की लम्बाई एक अंगुश्त हो, उस पर एक

बार सूराये यासीन पढ़कर फूँके और कहे कि '**बस्तम दिल वा जान अमुक बिन अमुक**' फिर इन सातों कीलों को चूल्हे में गाढ़े और आग जला दें। जब वह कीलें गर्म होंगी। प्रेमी वश में होगा।

शत्रु भयनाशक मन्त्र

"या तनकाफील बहक्क या है याहमीदो।"

इस मन्त्र को ५१ दिनों तक निम्य ६२१ बार जप करने से शत्रु का भय दूर हो जाता है।

मोहन मन्त्र

"सलामुन कौलुन मिन रविर्रहीम तनजीलुल अजीजुर्रहीम।"

सबसे पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर उक्त मन्त्र को अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर ३१ बार पढ़ें, फिर हाथों को मुँह पर फेरकर जाए तो वहाँ के सब लोग मोहित हों।

हाजरात का मन्त्र

"ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर मैदर मादर दस्तगीर मदत मेरु पीरान पीर करो घोड़े पर भीड़ चढ़ो हजरत पीर हाजर सो हाजर।"

प्रतिदिन उल्टी माला से इस मन्त्र का ११०८ की संख्या में जप करें तथा लौंग, इलायची और लोबान की धूप दें तो ३१ दिन तक नियमित करें। इसके बाद सायं ८ बजे बालक को पवित्र कर, स्वच्छ वस्त्र पहनाकर बैठायें। उस बालक के अँगूठे के नाखून में स्याही लगा दें तथा उसमें अपना मुँह देखने को कहें। आप इस प्रकार कहें—'**मेरा मुँह दीखना बन्द होकर चौगान हो जाओ।**'

यह कहते ही वह चौगान हो जाएगा। तब बालक कहे—'**आ दो जन आ जाओ**।' जब दो व्यक्ति आ जायें, तब बालक कहे—'**दो जन और आ जाओ**।' जब वे भी आ जायें, तब कहे—'**दो जन औ भी आ जाओ**।' जब वे भी आ जायें, तब चौथी बार फिर कहे—'**दो जन और आ जाओ**।' इस प्रकार चार बार कहे।

जब आदमी एकत्रित हो जायें, तब बालक कहे—'**झाड़ लगवाओ**।' जब झाड़ू लग जाये तो उस के बाद कहे—'**छिड़का कराओ**।' जब छिड़काव हो जाय, तब कहे—'**फर्श बिछाओ**।' ज फर्श बिछ जाय, तब कहे—'**दो कुर्सी मंगाओ**।' जब यह भी अ जाय, तब कहे—'**तख्त पर गद्दा बिछाओ**।' जब गद्दा बिछ जा तब कहे—'**पीरानपीर साहब से जाकर हमारी अर्ज की गुजारि करो कि 'अमुक'** (यहाँ अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए) **आपको याद करता है, अतः कृपा करके पधारें**।' जब मुंशी सहि पीर साहब पधार जायें, जब मुंशी से कहे—'**भोग पीरान पीर साह की नजर करो**।' यहाँ पर इच्छानुसार भोग देना चाहिए। फिर कहे—'**पीरान पीर साहब से हमारी अर्ज करो कि 'अमुक'** (यहाँ फि अपना नाम लेना चाहिए, आपसे अमुक काम, यहाँ जो काम हो उसे कहना चाहिए) **के बारे में पूछता है**।'

तब उत्तर मिलेगा। इस उत्तर को बालक अगर समझ जाय तो ठीक है, अन्यथा मुंशी से कहे—'**मैं नहीं समझा। अमुक भाष** (जिस भाषा में चाहें, उसका नाम लें) **में मुझे लिखकर दिखलाओ**।'

हाजरात के लिए बालक १० वर्ष तक की आयु का होना चाहिए।

वशीकरण मन्त्र

'या इस्माईल बहक्क या तोय या ताहिरो।'

वशीकरण के लिए एक कागज के ऊपर ७० की संख्या में लिखकर, उनके नीचे—

'या इस्माईल 'अमुक' को 'अमुक' के बस में करो बहक्क या तोय या ताहिरो।'

उक्त वाक्य को लिखकर, उसका फलीता बनाकर कड़ुवे तेल में जलायें तथा इत्र, गुलाब के फूल, दीपक को उसके आगे रखकर लोबान की धूनी दें। इस तरह २१ दिनों तक नित्य यही प्रयोग दुहराने तथा नित्य ७०० की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करने से इच्छित स्त्री या पुरुष वशीभूत हो जाता है।

भय-शत्रु नाशक मन्त्र

"या लौजाईल बहक्क या जोय या जाहिरो।"

प्रतिदिन प्रात:काल ४१ की संख्या में ११ दिनों तक उपरोक्त मन्त्र को जपते रहने से शत्रु का भय दूर हो जाता है।

नींद उड़ाने वाला मन्त्र

"या इतराईल बहक्क या काफ या काफियो।"

एक सफेद कागज के ऊपर ४०० बार 'काफ' अक्षर लिखकर उसके नीचे—

"या इतराईल अमुक के बेटे अमुक की नींद बन्द करो बहक्क या काफ या कुदू सो।"

अब ४०० बार मन्त्र पढ़कर फूँक मारें, तत्पश्चात् उस क
को किसी भारी पत्थर के नीचे दबा दें तो साध्य व्यक्ति की नींद
जाती है।

शत्रुता विनाशक मन्त्र

"या अजमाईल बहक्क या स्वाद या समदो।"

पानी से भरा एक मटका अपने सामने रख लें, फिर उस दृष्टि जमाकर ४१ दिनों तक, नित्य ८००० की संख्या में उपरोक्त म का जप करें तो शत्रु दुश्मनी भुलाकर मित्र बन जाता है।

स्तम्भन मन्त्र

"या इतराईल बहक्क या ज्वाद या जारो।"

इस मन्त्र को नित्य १०००० बार जपने से दिल की कमज तुरन्त दूर हो जाती है।

वशीकरण मन्त्र

"या लौमाईल बहक्क या ऐन या अजीमो।"

सफेद कागज के ऊपर केसर में से ७ बार 'ऐन' लिखकर, उ उक्त मन्त्र द्वारा १७० बार अभिमन्त्रित करें इसके बाद उसे पानी घोल कर जिसे पिला दिया जाएगा, वही वशीभूत हो जाएगा।

शत्रु नाशक मन्त्र

"या लौरबाईल बहक्क या गैन या गफूरो।"

महुए के पत्ते पर या सफेद कागज पर ७० बार 'गैन' अक्षर लिखकर उसके ऊपर उक्त मन्त्र को १३०० बार पढ़-पढ़कर फूँक मारे फिर उस पत्ते या कागज को शत्रु के घर में गाढ़ देने से शत्रु कष्ट पाता है।

कष्टों को दूर करने के लिए

निम्नलिखित मन्त्र को सवा लाख बार पढ़ें। यह संख्या चालीस दिन में ही पूरी होनी चाहिए। मन्त्र जाप की एक आवश्यक शर्त यह है कि जाप के समय वहाँ उपस्थित व्यक्तियों की संख्या विषम ही होनी चाहिए। सम होने पर जाप से कोई लाभ नहीं होगा।

मन्त्र इस प्रकार है—

"अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यदना मुहम्मदिव्व व अला आलि सय्यदना मुहम्मदिव्वं सलात तुनुजय्यना बिहा मिन जमीअत अहवालि व लआफाति व तकजी लना बिहा मिन जमीअ लहाजाति वतुतीहरुना बिहा मिन जमीअस्सयात वतरफअुना बिहा इन्दक अअलद्दरजाति व तुबल्लिगुना बिहा अक्सील गायाति मन जमीअत खैराति फीलहयाति व बाद लममाति।"

वशीकरण मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को ग्रहण काल में २०१६ बार जपें, तब इसमें शक्ति उत्पन्न हो जाती है, अर्थात् मन्त्र चैतन्य हो जाता है। अब सुपारी को सबसे पहले गंगाजल में धो लें। इसके बाद इस मन्त्र में ३१ बार अभिमन्त्रित करके जिसको भी खिला दोगे वह वशीभूत होगा।

मन्त्र इस प्रकार है—

''ओं नमो अप्सरा उर्वशी सुपारी काम निगारी राजा प खरी पियारी मन्त्र पढ़ि लगाऊँ तोहि हिया कलेजा लावै त जीवता चाटे पगतली मूवा संग मसान जो 'अमुक' वश्य न तो जती हनुमन्त की आन। शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो ईश्वरोवाचा।''

भय दूर करने के लिए

जो भी व्यक्ति किसी से किसी भी कारण डरता हो और स किसी न किसी कारण को लेकर बचने का प्रयत्न करता हो, वह प्रयोग को करे। भय तो दूर होगा ही मित्रता भी स्थापित हो जाये शाम के समय सबसे पहले १२१ बार बिस्मिल्लाह पढ़ें। उसके दरूद शरीफ पढ़ें। दरूद शरीफ निम्न है—

''अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अल्ला आले मुहम्मदिन व बारक वसल्लम।''

यह प्रयोग एक सप्ताह करें। पाठकों की सुविधा के लि बिस्मिल्लाह का मन्त्र भी लिख रहे हैं। मन्त्र इस प्रकार है—

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।''

भागे हुए को वापस बुलाने का मन्त्र

सबसे पहले ४१ बार बिस्मिल्लाह पढ़ें। इसके बाद किसी सादे कागज पर निम्न मन्त्र को लिखकर किसी भी हरे वृक्ष पर ल दें। मन्त्र को इस प्रकार लटकाना चाहिए कि वह झूलता रहे, अ हवा के साथ इधर उधर उड़ता रहे। इस प्रयोग से गया हुआ व्यक्ति माह के भीतर वापस आ जाता है। यन्त्र निम्न है—

७८६

बिस्मि	अल्लाह	अलरहमान	अलरहीम
अलरहीम	अलरहमान	अल्लाह	बिस्मिल्ला
अल्लाह	बिस्मिल्ला	अलरहीम	अलरहमान
अलरहमान	अलरहीम	बिस्मिल्ला	अल्लाह

कार्य सिद्धि हेतु

सर्व कार्य सिद्धि हेतु यन्त्र बनाने से पहले बिस्मिल्लाह ७८६ बार कहें। इसके बाद निम्न अजमत पढ़ें—

अजमत

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्ला हुम्मा इन्नी असअलोका बिहक्के इस्काइकल व सिफातिकल उलया या रज्जा को या समीओ अनतकदो हाजदो अकसमतो अलैकुम। या अईयो हलूम लायक तिल मवक्किलतो अल हाजिल हुरू फित्तामाति ताहिरात या दरदाईलो या किल काईलो बिहक्के सईयदि कुमूवा अमीनिकुम अल अजीयत नहायूसो इन्नमा अमरूहइजा आरादा शैयन अनयकूलो लहू कुन यफ कुनफ सुबहानल्लजी ये यद्दहिन कूतोकुल्लश अइन अलै हेतुर्जऊन।''

इसके बाद निम्न यन्त्र को कागज के ऊपर बनाकर अपने पास रखें।

७८६

बिस्मिल्लाह	अलरहमान	अलरहीम
अलरहीम अलरहमान	अल्लाह	बिस्मल्ला
अल्लाबिस्मल्ला	रहीम	रहमान

अथवा निम्न यन्त्र बनावें।

७८६

अलरहीम	अलरहमान	अल्लाह	बिस्मिल्ला
बिस्मि	अल्लाह	अलरहमान	अलरहीम
अलरहमान	अलरहीम	बिस्मिल्ला	अल्लाह
अल्लाह	बिस्मि	अलरहीम	अलरहमान

जरूरतमंद को चाहिए कि यन्त्र वह सदैव अपने पास रखे इसके अतिरिक्त ९० यन्त्र लिखकर उन्हें आटे की गोलियों में लपेटकर दरिया में डाले। अगर सम्भव हो तो नियमित निम्न रूबाई का पाठ भी करे। इस प्रकार सारे कार्य सिद्ध होंगे। रूबाई इस प्रकार है—

'या रब मुहम्मद अली व जोहरा,
या रब वह ससन हुसैन दहम आल अबा।

कि लुत्फ बरार हाज्तम हर दो सराय,
बे मिन्नत या अली अल-इखलाक॥'

गढ़े धन का पता लगाना

अनेक बार घर के बड़े बिना कुछ बतलाये अथवा बिना वसीयत किए मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में अगर आप धन का पता लगाना चाहते हैं, तब निम्न प्रयोग करें। (विस्तृत एवं अन्य जानकारी हेतु मेरी नवीन उपयोगी पुस्तक ''पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें?'' पढ़ें।)

निम्नलिखित यन्त्र को नौचन्दी जुमेरात को काली स्याही से केले के अखण्डित पत्ते पर लिखें। इसके बाद १००१ बार दरूद शरीफ सस्वर पढ़कर यन्त्र को सिरहाने रखकर सो जावें। इस प्रयोम से मृत्यु को प्राप्त जातक स्वयं स्वप्न में आकर सब कुछ बतला जायेगा।

पहली रात सफलता प्राप्त न हो तो कई दिन इस प्रयोग को करें, यन्त्र इस प्रकार है—

ताबीज

या अली	या अल्लाह	या मुहम्मद	या अल्लाह
या अल्लाह	या मुहम्मद	या अल्लाह	या अली
या मुहम्मद	या अल्लाह	या अली	या मुहम्मद
अमुक	पुत्र-पुत्री	यामौला	हव

ताबीज इल्म (विज्ञान)

आज का विज्ञान बहुत उन्नत हो चुका है। मनुष्य जाति समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति का कार्य विज्ञान द्वारा सम्भव बन जा रहा है। अतः विज्ञान और मानव एक-दूसरे के पूरक बन गए हैं। विज्ञान की विकास धारा में यन्त्रों का बहुत महत्व है। प्रत्येक वस्तु निर्माण के लिए यन्त्रों का उपयोग किया जाता है तथा यन्त्रशालाओं द्वारा सुख-सामग्रियाँ तैयार की जाती हैं। प्राचीन काल में आडम्बरपू यन्त्रों का अत्यन्त अभाव था। फिर भी प्राचीन काल के लोग इस म ज्ञान से परिचित थे। रामायण, महाभारत काल में तो ऐसे यन्त्रों की संख्या सबसे अधिक थी।

इस प्रकार यन्त्रों के रहते हुए भी मानव सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह देव-देवियों के यन्त्र प्रयोग करने लगा और प्रत्येक मनुष्य यन्त्रोपासक बन गया।

यन्त्रों की अनेक जातियाँ हैं। यन्त्र बनाने की प्रक्रिया ऐसी है कि उससे अनेक प्रकार के यन्त्र बनाये जा सकते हैं। प्रयोग भी अनेक हैं कभी यन्त्र को लाँघने से फल मिलता है तो कभी पहनने पर। कभी धोकर पीने से लाभ होता है तो कभी गाढ़ देने से। जुबानबंदी में यन्त्र को एक शिलाखण्ड पर लिखकर उस पर दूसरी शिला को रख दिया जाता है। यन्त्र प्रयोग के अनेक दृष्टांत किंवदन्तियाँ प्रायः सुनने को

मिलती हैं।

यन्त्र को किसी न किसी लेखन वस्तु के द्वारा अंकित किया जाता है। यही विषय यहाँ प्रस्तुत है।

स्याही—यन्त्र लिखने के लिए अष्टगंध, पंचगंध, जाफरान एवं अन्यान्य वस्तुओं का उल्लेख मिलता है।

अष्टगंध—(१) अगर (२) तगर (३) गोरोचन (४) कस्तूरी (५) चन्दन (६) सिन्दूर (७) लाल चंदन और (८) जाफरान। इन सबको घोटकर लिखने की स्याही जैसा बना लेना चाहिए।

पाँच गंध—(१) जाफरान (२) कस्तूरी (३) कपूर (४) चंदन और (५) गोरोचन इन पाँच वस्तुओं के मिश्रण से बनता है।

तीन गंध—(१) सिंदूर (२) हल्दी तथा (३) कुम्कुम से बनता है। इसके अतिरिक्त श्मशान की भस्म, श्मशान का कोयला, रक्त, दूध, हरताल, भिलावां, नीम आदि के पत्तों का रस, आक और अन्य दूध वाले वृक्ष-पौधों के दूध आदि का भी स्याही के रूप में प्रयोग होता है।

कलम—लेखनी मुख्य रूप से अनार अथवा चमेली की प्रयोग की जाती है। वैसे स्वर्ण, रजत, ताम्र, लोह एवं अन्य धातुओं से बनी शलाकाओं से भी यन्त्र लिखे जाते हैं। नीम, आम, आक, पक्षियों के पंख • ृक्षों के काँटे, सरकंडे की कलम आदि का उपयोग भी होता है।

लिखते समय कलम का टूटना अथवा स्याही का बिखर जाना अपशकुन माना जाता है।

लिखते समय मौन रहें मन्त्र का जप करते रहें। शून्य मस्तिष्क से यन्त्र कभी नहीं लिखें। शून्य मस्तिष्क से यन्त्र लिखने पर अनुकूल

फल प्राप्त नहीं होता है।

अंक का महत्व

फारसी अक्षरों के अंकों का गणित सर्वथा अलग होता है। फारसी अक्षरों के अंक इस प्रकार होते हैं—

अलिफ	—	१	ज्वाद	—	८००
बे	—	२	तोय	—	९
ते	—	४००	जोय	—	९००
से	—	५००	ऐन	—	७०
जीम	—	३	गैन	—	१०००
हे	—	८	फे	—	८०
ख	—	६००	काफ	—	१००
दाल	—	४	गाफ	—	२०
जाल	—	७००	लाम	—	३०
रे	—	२००	मीम	—	४०
जे	—	७	नून	—	५०
सीन	—	६०	बाव	—	६
शीन	—	३००	हे	—	५
स्वाद	—	९०	ये	—	१०

यन्त्र लिखना कहाँ से शुरू किया जाए? अब यह प्रश्न शेष है यन्त्र में लेखन के लिए जैसी विधि बतलाई हो वही अपनानी चाहिए।

यन्त्र लेखन के समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यन्त्र किस कार्य के लिए लिखा जा रहा है। वह धारण के लिए हो, तो

उसकी पद्धति पृथक होगी अगर पूजा के यन्त्र बनाने हों तो उसकी विधि अलग होती है।

अनेक यन्त्रों में 'अमुक' अक्षर लिखा रहता है। ये शब्द जहाँ हों, वहाँ जिस व्यक्ति के लिए यन्त्र तैयार किया जा रहा हो, उसका नाम लिखना चाहिए।

प्रिय पाठकों! आज इन यन्त्रों का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि कोई भी घर यन्त्र के प्रभाव से शून्य नहीं रहा। जैसी जिसकी धारणा हुई उसीकी पूर्ति के लिए यन्त्र की साधना प्रचलित हो गई। आमिलों ने यन्त्र सिद्धि के आधार पर ही ऐसे-ऐसे अनूठे कार्य कर दिखलाये कि देखनेवाले आश्चर्य में डूबे बिना नहीं रह सके। इन्होंने सर्वसाधारण का मन आकृष्ट किया। समय-समय पर सिद्ध किए गए यन्त्रों को धारण कर जन-साधारण अपनी विपदाओं से मुक्त हुआ, सम्प्रदायों का धनी बना और दुर्लभ को सुलभ बनाने में भी सफल हुआ।

यहाँ मैं यह स्पष्ट बतला दूँ कि सात्विक यन्त्रों का प्रभाव चिरस्थायी होता है। शर्त केवल इतनी है कि ठीक प्रकार से लिखे जायें।

इस प्रकार इन आध्यात्मिक यन्त्रों से एक और विशिष्ट लाभ यह होता है कि इनके धारण से अथवा घर में रखने से शत्रुओं द्वारा किए गए मन्त्र-प्रयोग भी सफल नहीं होते हैं।

यन्त्र सदैव आमिल, तांत्रिक से ही बनवाने चाहिए। आजकल यह देखने में आता है कि हर विद्वान यन्त्र बनाने लगता है। आप ऐसे अनधिकृत व्यक्तियों से बचें केवल यन्त्र बनाने के अधिकारी व्यक्ति से ही यन्त्र प्राप्त करें।



फलीता

मुस्लिम तन्त्र एवं यन्त्र विज्ञान में 'फलीते' का भी बहुत चलन है। आमिल प्रायः कोई यन्त्र अथवा अजीब आकृति बनाकर उसका 'फलीता' बना लेता है। इसके बाद उसे प्रज्वलित कर दीपक रोशन करता है। साधारण भाषा में आप फलीते को बत्ती (जोत) समझ सकते हैं। यन्त्र अथवा आकृति को लपेट कर गोल बना लिया जाता है।

चित्र नं. १

१	२	३
४	५	६
७	८	९

चित्र नं. २

१	२	३
४	५	६

चित्र नं. ३

१	२०	३०

अब कुछ विशिष्ट मुसलमानी यन्त्र प्रस्तुत हैं।

कैदी को छुड़ाने का यन्त्र

रविवार के दिन एक जंगली काला कबूतर पकड़ लायें, फिर निम्न यन्त्र को जाफरान द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, धूप-दीप देने के बाद, अब कबूतर के गले में बाँध दें तथा उसे छोड़ दें। बंदी शीघ्र मुक्त होगा।

या हाफिज	३३२	३३८	२२१०	
या हाफिज	३३२	३३४	२३६	७८६
कैदी का नाम कैदी के पिता का नाम	हाफिज	या हाफिज	या हाफिज	

तिजारी के ज्वर का यन्त्र

निम्न यन्त्र को कागज पर काली स्याही से सरकंडे की कलम से लिखें और जिसको तिजारी का ज्वर आता हो उसकी भुजा में बाँध दें तो ज्वर आना रुक जाता है।

	७८६	
७१	७१	७१
७१	७१	७१
७१	७१	७१

बन्दी की मुक्ति हेतु

जब कोई व्यक्ति गिरफ्तार हो जाये तो वह हर समय 'बिस्मिल्लाह' पढ़े तो जल्द रिहाई पायेगा।

अगर कोई शख्स नाहक गिरफ्तार हो जाए तो ४० दिन तक बिना नागा इस नक्श को लिखकर आटे की गोली बनाकर दरिया में डलवा दिया करें। वहाँ पर मछलियाँ हों तो ज्यादा ठीक रहेगा।

यन्त्र निम्न है—

१८	११	१६
१३	१५	१७
१४	१८	१२

वशीकरण हेतु

निम्न यन्त्र को रेशमी कपड़े पर लिखें। इस यन्त्र को गले में पहन लें। वशीकरण होगा।

यन्त्र इस प्रकार है—

७८६		
१९१	१९६	१८९
१९०	१९२	१९४
१९५	१८८	१९३
अमुक बिन अमुकी		

प्रबल वशीकरण हेतु

निम्न यन्त्र को शरबत में घोलकर पिला देने से प्रबल वशीकरण होता है।

९	१२	१५	२
१४	३	८	१३
४	१७	१०	७
११	९	५	१६
अमुक बिन अमुकी			

भूत-प्रेत बाधा हेतु

यह नक्श सूराये जिन से है इसको लिखकर भूत-प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति के गले में डालें। वह भूत के आसेब से सुरक्षित रहेगा।

यन्त्र इस प्रकार है—

बहक्ब जिबराईल या बदूह

९	२	०	०
२१	३	२	६
१८	१५	१८	५
१४	२	२३	३२

या बदूह (बाएँ)

या बदूह (दाएँ)

या बदूह

घर में बाधा होने पर

जिसके घर में भूत-प्रेत पत्थर फेंकते हों। इस नक्श को दीवार पर चिपकायें।

यन्त्र निम्न है—

११	८	१	४
८	१३	१२	८
१०	३	१६	८
६	१०	१५	११
७८६			

सफर सफल रहे

अगर कोई व्यक्ति सफर करे तो इस यन्त्र को लिखकर अपने स रखें, सफर सफल रहेगा।

यन्त्र निम्न है—

मुक्तदिर	कव्वी	कायम	कादिर
कायम	कादिर	मुक्तदिर	कव्वी
कादिर	कायम	कव्वी	मुक्तदिर
कव्वी	मुक्तदिर	कादिर	कायम



कुछ विशिष्ट यन्त्र-मन्त्र

इस्लामी सम्प्रदाय का धर्म ग्रन्थ कुरान मन्त्र उपासना की इ बिल्कुल नहीं देता है, केवल दुआ माँगने के अतिरिक्त किसी का रूप आयत में नहीं है। नाथ सम्प्रदाय के मन्त्रों की तरह इन शाबर मन्त्रों की प्रचुरता है। इनमें मुहम्मदा पीर की आन ली जा और 'बिस्मिल्लाह' के नाम की आन के साथ मन्त्र का गठन लिया जाता है। इनमें रहस्यपूर्ण कुछ भी नहीं है इनमें पीर की सौ नहीं ली जाती है वरन् सौगन्ध दिलाई जाती है। ये कार्य के लिए सु उपाय है। ऐसा देखने में आया है कि मुसलमानी मन्त्र बहुत सरल कार्य सिद्ध करते हैं। इनमें परी व वीर साधना का विधान भी जाता है। मुस्लिम तन्त्र में ८४ पुतलियों का वर्णन मिलता है। ये बाधा निवारण में काम आती है जो बहुत सफल होती है। मुस्लिम (अमल) तन्त्र के कुछ और प्रयोग प्रस्तुत हैं।

दर्द का मन्त्र

"लशकर फरऊन दर रोदनील गर्क शुद्ध।"

शरीर में जहाँ भी दर्द हो, वहाँ पीली मिट्टी द्वारा इस मन्त्र २१ बार लिखें। फिर मिट्टी के बराबर गुड़ तोलकर उसे छोटे बाल को बाँट दे तो पीड़ा दूर हो जाएगी।

प्रेमाकर्षण प्रयोग

सबसे पहले काजल तैयार करें विधि इस प्रकार है—जुमे रात के दिन उल्लू पकड़ लायें। फिर उसको जिबह करके उसकी जिह्वा निकाल लें। उसको अच्छी तरह सुखाकर रुई की बत्ती बनाकर उसी वृक्ष पर दो कीलें गाढ़ दें उनपर एक दीपक रखकर वह बत्ती डाल दें और उसको मीठा तेल भरकर जला दें। एक खोपड़ी उसपर लटका दें लौ लगने से जो काजल एकत्रित होगा उसको धीरे-धीरे उतारें और लोबान की धुनी देकर उसको शीशी में डालकर रख लें।

आवश्यकता के समय उसका तिलक लगाकर प्रेमिका के सामने जायें तो वह अत्यन्त मुग्ध हो जाएगी।

कीमिया सिन्दूर साधना

"ओं हथेली तो हनुमन्त बसे, भैरू बसे कपाल, नारसिंह की मोहिनी मोहे सब संसार, मोह, मोह, हनुमन्ता वीर सब बीरन में तेरा सीर, सबकी दृष्टि बाँध के मोहे तेल सिन्दूर, चढ़ाऊँ तोहि तेल सिन्दूर, तेल सिन्दूर कहाँ से आया, कैलाश पर्वत से आया, कौन लाया, अंजनि पुत्र हनुमन्त लाया, गौरी पुत्र गणेश लाया, गणेश ल्याय भैरू न दीन्हा, काला, गोरा, तोतला तीनों बसे कपाल, बिन्दी तेल सिन्दूर की दुश्मन गया पताल, दुहाई कीमिया सिन्दूर की, दूजे को देख्याँ बले जले हमें देख्याँ शीतल हो जाए हमारी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।"

४० दिन तक प्रतिदिन दो माला का जापकर पहले मन्त्र सिद्ध

कर ले। फिर अभिमन्त्रित कीमिया सिन्दूर को किसी भी
मिलाकर ५१ बार अभिमन्त्रित कर तिलक मस्तक पर लगाकर
भी जायेंगे वशीकरण होगा

पूर्व आभास साधना

**''अलहमदो लिल्हाहे रबिल आल मिन हर्र रहमान नि:
मालेकियो मिदीन या का नाम बदोया ना नस्ताईन।''**

शुक्रवार की रात को पहले अपने किसी भी कार्य को सो
उपरोक्त मन्त्र का एक घंटा जप करे। जप के समय अगर वह
पूरा होगा तो मुँह दाहिनी तरफ घूम जावेगा, कार्य नहीं होगा तो
तरफ घूम जावेगा, कार्य देर में होगा तो नीचे की तरफ और कार्य
होगा तो आकाश की ओर मुँह हो जावेगा। यह प्रयोग मेरा स्व
परिक्षित है। जाप के समय एकाग्रता और सावधानी बराबर ब
रखें।

मुख स्तम्भन हेतु

**''अलफ अलफ 'अमुक' के मुँह में कुलफ मेरे हाथ कुं
रूपी रेत कर, दुश्मन को जेर कर हम को सेर कर।''**

२०८ बार पढ़कर शत्रु से बात करें तथा उसकी ओर फूँक
तो मुँह बन्द हो जाता है।

मुख स्तम्भन हेतु

**''ओं नमो या वली या वली 'अमुक' का चशमा कुल
उसका बाजू कुलफ 'अमुक' को जेर कर हमको सेर कर।''**

आवश्यकता के समय इस मन्त्र को ३१ बार पढ़कर दुश्मन की ओर फूँक मार देने से मुँह बन्द हो जाता है।

मुख स्तम्भन हेतु

"शाह आलम कुतब आम जेर कर 'अमुक' को दफे करो जालिम।"

उपरोक्त मन्त्र पढ़कर दुश्मन की ओर फूँक मारे। यह प्रयोग लगातार करते रहें। शत्रु की जबान बन्द होगी।

प्रिय पाठकों! इस विषय को आगे बढ़ाने से पहले हम यन्त्र और उसकी किस्में, लिखने के नियमों आदि की जानकारी भी प्राप्त कर लें। यन्त्र बनाने के लिए यह जानकारी जरूरी है।

ताबीज (यन्त्र) की किस्में

ताबीज चार प्रकार का होता है—आतशी, बादी, आबी और खाकी। आतशी ताबजी उसको कहते हैं जो किसी भी चीज पर लिखकर उसको आग में डाल दें। बादी ताबीज लिखकर किसी पेड़ पर लटका देवें। आबी ताबीज लिखकर नदी, कुएँ में डाल दिए जाते हैं। खाकी ताबीज उन ताबीजों को कहते हैं जिनको लिखने के पश्चात शत्रु के घर की चौखट, चौराहे, कब्रिस्तान में दबा देते हैं।

आतशी ताबीज लिखते समय आपका मुँह मशरक की तरफ हो और आप वीरासन में बैठें, भट्टी पास होवे। जब बादी ताबीज लिखें तो जिस व्यक्ति के लिए यह ताबीज लिखें उसके नाम में यह ११ अक्षर अवश्य होने चाहिए—अलीफ, बे, जीम, दाल, काफ, हे, सीन,

नून, चे, मीम।

और ऊँची जगह पर बैठकर लिखें जिस्म का कुछ हिस्स पानी में हो और मुँह मगरब की तरफ हो। आबी ताबीज लिखें त चार बातों का ध्यान आवश्य रखें—सुनसान जगह में बैठकर लिख जावे। मुँह शुमाल की तरफ़ हो। ताबीज लिखने से पहले का शरी शुद्ध होना आवश्यक शर्त है। लिखने के दौरान किसी से बातची करना मना है। अगर प्रेम के लिए यन्त्र लिखें तो पहले कलम अप दायें हाथ में लें और उसके बाद कागज अपनी दाईं जाँघ पर रखें कोई मीठी चीज अपने मुँह में रखें और चिराग में चीनी जलायें औ ताबीज को केशर अथवा कस्तूरी की धूनी देवें और ताबीज को लिखते समय साध्य का ध्यान रखें। औरत का नाम पहले लिखें और मर्द का बाद में।

अगर यन्त्र किसी बीमार को निरोग करने के लिए लिखना हो तो नदी के किनारे बैठकर लिखना चाहिए और मुँह जनूब की तरह होना चाहिए। खाली यन्त्र लिखना हो तो खुशी-खुशी लिखना चाहिए। अगर शत्रु के लिए लिखना हो तो कागज बाईं जाँघ पर रखें, फिर कलम हाथ में लें और काले तिल मुँह में रखकर लिखें। तेल में थोड़ा-सा सिरका मिलाकर लिखें। हींग जलायें और केवल माह के आखिरी दिनों में लिखें। लिखते समय थोड़ा मोम अपने मुँह में रखें और जबान को दाँतों तले रखें।

ताबीज भरने का तरीका

यन्त्र शतरंज के घोड़े की चाल पर लिखना चाहिए। यन्त्र यह है—

आतशी

६७	इजराईल	८
कसर १	५	३
३	९	४ कसर १

बादी

२ कसर १	३	८
१	५	इसरा फील ९
३	७ कसर १	६

आबी

८	३	२ कसर १
मेकाईल	५	९
६	१ कसर २	२

खाकी

२ कसर	९	२
२	५	० कसर २
८	जिबराईल	६

यन्त्र भरने का तरीका यह है। ताबीज किसी भी वस्तु प लिखकर उसे चाँदी, सोने, ताँबे अथवा मिश्रित धातुओं के खोल मे डाल दें। इसके बाद उस पर ढक्कन लगाकर उसे मोम से बन्द क दें। इस प्रकार ताबीज कभी खराब नहीं होगा। दूसरा तरीका यह भी है, ताबीज लिखकर उसे मोमी कागज में अच्छी तरह बन्द करके उसे हरे, काले कपड़े में सी दें। इस प्रकार भी यन्त्र सदैव सुरक्षित रहत है।

जब यन्त्र लिखने वाला हुब या बुग्ज आदि के लिए यन्त्र लिखे तो सितारे में लिखे उसके अनुसार धूनी जलाये। यह हर सितारे के लिए अलग-अलग है। अगर सितारों के अनुसार न होगा तो पर्याप्त लाभ भी न होगा।

जुहल	— ऊर्दू, लोबान, दाल, कंफल।
मुस्तरी	— मुश्क, जौ, कपूर, संदल, लाल उर्द, शक्कर।
मरीख	— लोबान, उर्द, दाल।
शमस (सूर्य)	— दालचीनी, उर्द, राल, मुश्क, जाफरान।
जुहरा	— उर्द, अम्बर, मुश्क, संदल, कपूर।
अतारू	— संदल, सुर्ख, कंफल।
कमर (चन्द्रमा)	— मधु, कपूर, उर्द।

तान्त्रिक अथवा आमिल को अक्षर के मवक्लात का मालूम करना भी बहुत जरूरी है और यह भी देखे कि इस यन्त्र के सिरे पर कौन-सा अक्षर है और किसलिए है? और इसका कौन मवक्कल है? यह अमल भी यन्त्र लिखने में और अमल पढ़ने में बहुत लाभदायक है।

अमल	—	इसराफील
बे	—	जबराईल
ते	—	इजराईल
से	—	मेकाईल
जीम	—	कलकाईल
हे	—	तनकफील
खे	—	मेकाईल
दाल	—	दरबाईल
जाल	—	हराकील
रे	—	मवाकील
जे	—	शरफाईल
सीन	—	हमवकील
शीन	—	हमराईल
स्वाद	—	अहजमाईल
काफ	—	हरोजाई
लाभ	—	ताताईल
मीम	—	रूमाईल
नून	—	लोलाईल
वा	—	इन्तकाईल
ल	—	दोराई
ये	—	सराकीताल

आशा है पाठक यन्त्रों के प्रकार और उनके लिखने के नियम आदि समझ गए होंगे। अब हम आगे बढ़ते हैं।

प्रेमाकर्षण यन्त्र

निम्न यन्त्र को अभिमन्त्रित करके गले में पहनें।

या अबुवक्कर	अलहुब	सा हसन	या अली
७८६	या मुहम्मद	या मुहम्मद	या नजिमा
या हुसैन	या मुहम्मद	या मुहम्मद	७८६
या उमर	७८६	या मौला	या उस्मान

धन पाने के लिए

यह नक्श चाँद रात से लिखना शुरू करें और चौदहवीं रात तक प्रतिदिन लिखें। नक्श की संख्या ११ हो और कुल २१० हों। प्रतिदिन उनको खेत में दबा दिया करें। इस प्रयोग के समाप्त होने पर आपको धन लाभ होना शुरू हो जायेगा।

यन्त्र इस प्रकार है—

५१२	२१५	२१७	३२६	४६५
५०९	७८६	९४०	५६१	७७१
७९५	३१३	९८३	७३०	२००
५१३	२३१	५००	३११	१०२

वशीकरण हेतु यन्त्र

निम्नलिखित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही सरकंडे की कलम से लिखकर उसका फलीता बनायें, फिर उसे लोबान की धूप देकर, एक दीपक में सुगन्धित चमेली का तेल भरकर, उसमें उसे जलायें। यन्त्र में प्रेमिका और उसकी माँ का नाम लिखें।

यन्त्र इस प्रकार है—

७८६

३५२१	२५१८	३५१५
३५१६	अमुक सुपुत्री माँ का नाम	३५२०
३५१९	३५१४	३५१७

वशीकरण मन्त्र

"अल्लाह बीच हथेली से मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहनी मोहे जग संसार, मुझे करे मार मार, उसे मेरे बायें कदम तले डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर वज्र की बाण, बहक्क लाइलाइ अल्ला है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।"

शनिवार के दिन देसी घी का दीपक जलाकर उसके आगे लाल गुलाब के फूल, पाँच मिठाई रखकर लोबान की धूनी दें तथा २१६ बार मन्त्र पढ़े। दूसरे शनिवार को फिर स्त्री के पाँव के नीचे मिट्टी पर ५१ बार मन्त्र पढ़कर, उसके ऊपर डाल दे तो वह वशीभूत हो जाती है।

प्रेमाकर्षण यन्त्र

अगर किसी को अपने प्रेम में गिरफ्तार करना हो तो एक कागज लेकर उस पर तीनों यन्त्र लिखें।

पहला—नक्श को प्रेमिका के द्वार के निकट गाड़ दें। दूसरा—किसी प्रकार प्रेमिका को पिला देवें। तीसरा—इस नक्श को ताबीज बनाकर गले में डाल लो और परीक्षा करो कि वह आपसे प्रेम करती है अथवा नहीं?

यन्त्र निम्न प्रकार है—

नक्श नं. १

५	१२
१८	१३
१६	१९
२३	१८
२०	२३

नक्श नं. २

१५	८७	९
१९	७०	१४
१२	१७	७

नक्श नं. ३

७	१
२	८
६	३
४	५
३	८

वशीकरण मन्त्र

"या आमीन या फामीन हमारे दिल से 'अमुकी' का दिल मिला दें।"

बृहस्पतिवार और शुक्रवार की रात ये मन्त्र ११००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। इसके बाद कोई भी वस्तु अभिमन्त्रित करके खिला दें।

छाया पुरुष द्वारा वशीकरण

आपको अगर किसी से बेहतर प्रेम है और आप उसे वश में करना चाहते हो तो उसकी सरल विधि यह है।

एक साफ सुथरे कमरे के दरवाजे चारों तरफ से बन्द कर दें। उसका सामान बाहर निकाल दें। फिर एक दरी बिछायें लोबान की धूनी देकर कमरे को अच्छी तरह सुगन्धित कर लें। इसके उपरान्त कमरे के ठीक मध्य में दरी पर बैठ जायें। इससे पहले एक दीपक में

घी डालें जो कि प्रात:काल तक जलता रहे। दीपक जलाकर के इस प्रकार रखना चाहिए कि छाया सामने दीवार पर पड़ती रहे।

अब आप अपने सिर की छाया की ओर टकटकी बाँधकर लगातार देखते रहें और अपने सामने इलायचियाँ रख लें। और जबान से 'रहमान या रहीम' की माला उन इलायचियों पर एक हजार एक बार पढ़े। यह प्रयोग जुमेरात से आरम्भ करके जुमेरात को समाप्त करना चाहिए।

अन्तिम जुमेरात को आपकी छाया आपके सामने हाजिर होगी और कहेगी 'आज्ञा'।

उसके द्वारा वह इलायचियाँ अपनी प्रेमिका को खिलाएँ वह उन इलायचियों को खाते ही आपसे अत्यन्त प्रेम करेगी।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम फाअल्लाहु खैरून हाफिजन व हुव अर्हमुर्राहिमीन। फता बरकल्लाहु अहसनुल खालिकीन. व अस्तुद अल्लाह दीनक व मालक व जौजक.।''

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आय है, वहाँ जिस स्त्री को वशीभूत करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए तथा उसके स्वरूप अर्थात् वर्ण (रंग) आयु आदि का उच्चारण करना चाहिए, जैसे स्त्री का रंग गोरा तथा आयु उन्नीस वर्ष की हो तो 'एकोनविंश वत्सरेण वय समन्विता' आदि।

इस मन्त्र का जप करने से पूर्व निम्नानुसार का ध्यान करना चाहिए।

''नमो नमः जल की जोगिनी पाताल नाम जिस पर भेजूं

तिसके लाग, सोने न पायै सुख से बैठने न पावै, मुख से घूम फिर-फिर ताके मेरा मुख, जो वांधी छूटे तो बाबा नरसिंह की जटा टूटैं।''

ध्यानोपरान्त पूर्वोक्त मन्त्र का १०००० की संख्या में जप करके, जप का दशांक अर्थात् १००० की संख्या में लाल फूलों से होम करें। इस प्रयोग में सभी काम बायें हाथ से करने चाहिए।

मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साध्य स्त्री का ध्यान करते हुए १०८ बार मन्त्र का जप करने से वह वशीभूत होती है।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

''ओं नमों नमः कामाख्या देवी 'अमुकी' में वश्यं कुरू-कुरू स्वाहा।''

उक्त मन्त्र में 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

शनिवार के दिन साध्य-स्त्री के सिर के बाल तथा उसके बायें पाँव के नीचे की धूलि लेकर एक पुतली का निर्माण करें। इसके द्वारा वशीकरण करें।

चोर का पता करना

अगर किसी के यहाँ चोरी हो जाये और चोरी का पता न हो तो निम्नलिखित प्रयोग करें। घर में जितने मनुष्य हों। इस नक्श को तैयार करके प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में दें। फिर एक-एक व्यक्ति को अपने सामने बुलाकर कहें कि—

'मैं खुदा को हाजिर-नाजिर जानकर कहता हूँ कि मैंने चोरी

नहीं की है' जब वह वाक्य कह चुके तो उसके हाथ से नक्श ले लें जिसके नक्श के अक्षर मिट गए हों वही चोर है। अब उससे चोरी की वस्तु निकालना आसान होगा।

इस नक्श को केसर से लिखना चाहिए। नक्श निम्न है—

२०	क	२	ए
७	ह	व	ए
ल	त	ब	५
ऽ	अ	२	९

जिसको वश में करना हो, उसे अपने सामने बैठायें फिर लोबान लेकर उसकी दृष्टि इन वस्तुओं पर डलवायें। जब उसकी दृष्टि लोबान पर पड़ जाए, तब पूर्वोक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे अग्नि में डाल दें। इस प्रक्रिया को ३१ बार दुहरायें तथा इसी प्रकार २१ दिन तक करते रहें। इस प्रकार वह वशीभूत हो जाती है।

धन का पता लगाना

निम्न यन्त्र नौचन्दी जुमेरात को काली स्याही से केले के पत्ते को चौकोर काटकर लिखे और इसको अपने सिरहाने रखकर एक हजार बार दरूद शरीफ पढ़कर सो जाये। तो मुवक्किल स्वप्न में आकर धन के बारे में सब कुछ बतायेगा।

अगर पहली रात को पता न चले तो दूसरी रात को फिर ऐसा करने से सफलता मिलती है। नक्श निम्न है—

या अली	या अल्लाह	या मुहम्मद	या अल्लाह
या अल्लाह	या मुहम्मद	या अल्लाह	या अली
या मुहम्मद	या अल्लाह	या अली	या मुहम्मद
अमुक	पुत्र पुत्री	अमुक	हुब

अनलहक जैतान उपासना

एक बहुत कड़वा करेला लावें उसे बीच में से काट दे। उस करेले में एक भिलाव, एक सुपारी रखें। करेले को लाल रेशमी धागे से बाँध दें। फिर वह करेला हाथ में लेकर 'अनलहक जैतान' यह मन्त्र ११०१ बार बोले। यह शाम के समय की जानी चाहिए। इसके बाद करेले को घर से दूर ले जाकर गाढ़ दें।

प्रिय पाठकों! जैतान एक पवित्र जिन्न है। इस्लामी पन्थ ने बावन जिन्न माने हैं। उनमें से जैतान तेईसवाँ जिन्न है। जैतान संसार में भय, दुःख और भूत का संहारक है।

'अनलहक जैतान' का अर्थ है, जैतान नाम का जिन वास्तव में ईश्वर ही है। मन्त्र बहुत ही पवित्र और उतना ही प्रभावी भी है।

वशीकरण मन्त्र

"ओं बिस्मिल्लाह दाना कुलहु अल्लाह यगाना दिल है सख्त तुम हो दाना, हमरे बीच 'अमुक' को करो दीवाना।"

२१६ बिनौले लाकर रात्रि १२ बजे प्रत्येक को १०८-१०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नदी में डालें तो कार्य सिद्ध होता है। यह

क्रिया ५१ दिन तक करें।

वशीकरण मन्त्र

"ॐ हामिले स्वाहा।"

अपामार्ग की १७ अंगुल लम्बी लकड़ी को उक्त मन्त्र से ३१ बार अभिमन्त्रित करके घर में डाल देने से वशीकरण होता है।

आवश्यकता के समय शत्रु पर उपरोक्त मन्त्र पढ़कर फूँक मारने से बोलना बन्द हो जाता है।

शत्रु को कष्ट देने हेतु

"इम्नामीन सलास मातिन।"

गुलाब के फूल, लोबान, चन्दर चूरा, सुगन्धित चमेली का तेल, कस्तूरी इन सबको समभाग चूर्ण कर ले। तदुपरान्त एक पुतला बना लें फिर उसे अपने सामने रखकर बैठे तथा शत्रु का ध्यान करके हकीक के दाने वाली माला पर मन्त्र का जप करें। एक माला का जप पूरा हो जाने पर उस पुतले को जूता मारें। इसी प्रकार १०१ माला का जप करें। इस प्रयोग को ११ दिन तक करते रहने से शत्रु घोर कष्ट पाता है।

शत्रु को कष्ट देने का मन्त्र

"जाग जाग रे मसान मेरे मेरे सुरति करि करि 'अमुक' का बेटा 'अमुक' के घर जो न जाए तो मेरी माँ बहिन को तीन तल्लाक।"

किसी भी पुरानी कब्र में एक सीही का काँटा गाढ़ दे तथा ३१

दिनों तक उसी कब्र के पास खड़े होकर उक्त मन्त्र का जप करें तो शत्रु का अपने घर से निकलना बन्द हो जाता है।

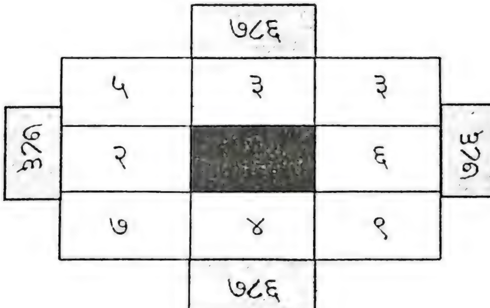
भय नाशक यन्त्र

अगर किसी को डरावने स्वप्न दिखलाई देते हों तो निम्न यन्त्र को लाल चन्दन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर उसे ताबीज में भरकर गले में बाँध देना चाहिए। इससे स्वप्न आने बन्द हो जाएँगे।

याफता	याफता	याफता	याफता
याफ़ता	याफता	याफता	याफता
याफता	याफता	याफता	याफता
याफता	याफता	याफता	याफता

हाजरात

सबसे पहले निम्नलिखित यन्त्र बनायें। एक खाना एकदम काला बनावें।



इस यन्त्र को बनाने के बाद किसी ८-१० वर्षीय बालक को नहला-धुलाकर स्वच्छ कपड़े पहनाकर उसके शरीर पर सुगन्ध लगाये सफेद चादर बिछाकर उसके चारों कोनों पर लोहे की कीलें ठोंके बालक के गले में माला डालकर उसे चादर पर आदर सहित बैठा दें एक दीपक में सुगन्धित चमेली का तेल भरकर दीपक सुलगा दें एक रुपया, सवा किलो मिठाई, इत्र फल और एक तरफ बादशाह के लिए कुछ रख दें। बालक को काले कोष्ठक पर निगाहें रखने के लिए कहें। साथ ही यह मन्त्र पढ़ें।

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अजदो या जिब्राईल या दरदाईल या रफ्तमाईल या तन्काफील बहक्क या बुद्दह हुन्मन हुन्मन वहक्क लाइलाहइल्लिलिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह या हैकल या हैकलन या कोकल या कोकलन वहक्क सुलैमान नवी बिन दाऊद अलै असलाम।''

बालक के ऊपर जब बादशाह आयें, तो मेवा-मिठाई की भेंट रखकर, जो कुछ पूछना हो वह पूछ लेना चाहिए।

इसके बाद बालक से आप जो भी पूछना चाहें पूछें। उसे खाली खाने में जो कुछ भी दिखाई देगा, वही आपके सवाल का उत्तर होगा। यह प्रयोग गुमशुदा व्यक्ति, वस्तु, जानवर की जानकारी या कोई क्या कर रहा है आदि जानने के लिए है।

इस्लामी तन्त्र विज्ञान में बीसा आदि यन्त्र भी प्रचलित हैं। यह मन्त्र 'जर्बा' कहलाते हैं। एक नक्श नीचे दे रहा हूँ—

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

सबसे अधिक प्रचलित यह नक्श है—

८	३	४
१	५	९
६	७	२

जब जर्बा यन्त्र के अतिरिक्त खाकी, बादी, आबी, आत्शी यन्त्र भी हैं। तत्पश्चात सैंकड़ों यन्त्र अनेक प्रकार की कामनाओं की पूर्ति के लिए हैं।

यन्त्र लिखने के लिए अलग-अलग प्रकार की कलम प्रयोग में लाई जाती हैं। स्याही, जाफरान, चन्दन, अगर, कस्तूरी, कपूर की प्रयोग में लाई जाती है। लिखने के लिए भोजपत्र सर्वोत्तम माना गया है अथवा सफेद साफ कागज।

कलमों के प्रकार—

१. सर्वकार्य सिद्धि हेतु — चमेली की लकड़ी की कलम।
२. स्तम्भन हेतु — बरगद की लकड़ी की कलम।
३. वशीकरण हेतु — कुशा की कलम।
४. शुभ कार्य हेतु — चाँदी या सोने की कलम।
५. आकर्षण हेतु — जामुन की कलम।
६. भूत-प्रेत निवारण हेतु — पीपल की लकड़ी की कलम।
७. शत्रु नाश हेतु — नीम की लकड़ी की कलम।

वशीकरण काले कलवे का प्रयोग—

''काला कलवा आधी रात, काला भेजूं आधी रात।
जप वह आवे आधी रात, तन मुझे लागे सारी रात।

कलवा वीर (अमुक) कोलाव, बैरी को उठा लाव।
सोतों को जगा लाव, खड़ी को दौड़ा लाव।
भाँजी के सिर पर पग धरें।''

उपरोक्त मन्त्र को ४१ दिन तक ४१ बार रोज पढ़ना है, वशीकरण का एक और प्रयोग—

२५२१	३५१८	३५१५
३६१६	प्रेमिका का और उसकी माँ का नाम	३५२०
३५१९	३५१४	३५१७

इस यन्त्र को सिद्ध करके पहन लें। वशीकरण होगा।

वशीकरण का एक और प्रभावी प्रयोग—

सबसे पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' अवश्य पढ़ लें। फिर निम्नलिखित मन्त्र को १००१ बार जपे। एक बार 'दरूद' भी पढ़े।

मन्त्र—''**अल्लाहुस्समद।**''

इसके अतिरिक्त आप इस मन्त्र का भी प्रयोग कर सकते हैं।

''**या अल्लाह फलाने या फलानी (अमुक और अमुकी) को मेरे बस कर।**''

यह दोनों प्रयोग २१ दिन के हैं।

स्तम्भन मन्त्र—शनिवार के दिन से आरम्भ कर ७ दिन तक १००१ बार जपें। सिद्ध हो जायेगा।

मन्त्र—अल्फ अलफ दुश्मन के मुँह में कुलफ मेरे हाथ कुंजी

रूपा तेरे कृर दुश्मन जेर कर।

पीर का कलमा—किसी भी कुएँ या तालाब के किनारे रात्रि के समय एकान्त में बैठकर उल्टी माला फेरते हुए २१६ बार पढ़े। यह क्रिया ३१ दिन तक रोज करनी है। पीर खुद सारे सवालों का उत्तर देता है।

मन्त्र—या जख्वाज खिज्र में तेरा इलियास लिलम का दिल चित तेरे पास।

१५ के मन्त्र की राशियाँ कर्क, मीन तथा वृश्चिक बतलायी गई हैं। इन राशियों के मुवक्किल निम्न हैं—(१) दहकाईल (२) वकपाईल (३) सरसाईल हैं। इस यन्त्र को स्याही से सफेद कागज पर लिखना चाहिए। इस यन्त्र की दिशा उत्तर है तथा इसे हर कार्य के लिए प्रयोग में लाया जाता है। साधनोपरान्त इस यन्त्र को बहते हुए पानी में बहा देना चाहिए।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

६	१	८
७	५	४
२	९	३

पन्द्रह के यन्त्र के मन्त्र

या बुद्दूह ६	या रंज्जाके २	या बुद्दूह ७
या अल्लाह १	या हादियो ५	या ताहिरो ९
या हलीमो ८	या जागिओ ३	या दाइमो ४

पन्द्रह के यन्त्र के अलग-अलग मन्त्र इस प्रकार हैं—

- **अजवो या इस्त्राफील बहक्क या अल्ला हो**
- **अजवो या जिब्राईल बहक्क या बुद्दूह**
- **अजवो या किलकाईल बहक्क या जामियो**
- **अजवो या दरदाईल बहक्क या दामहो**
- **आजवो या दौराईल बहक्क या हादियो**
- **अजवो या रफताईल बहक्क या रज्जाको**
- **अजवो या सरफाईल या बुद्दूह**
- **अजवो या तन्काफील या बहक्क या हलीमो**
- **अजवो या इस्माईल बहक्क या ताहिरो**

इस प्रकार इस्माल धर्म में भी तन्त्र मन्त्र यन्त्र का अपना एक विशेष महत्व है ऊपर मैंने केवल कुछ चुने यन्त्र-मन्त्र ही दिये हैं। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है विज्ञ पाठक गण समुचित लाभ उठावेंगे।



विभिन्न साधनायें

सिद्धि एक व्यापक अर्थ वाला शब्द है। किसी भी कार्य को पूरा कर लेने की क्षमता प्राप्त कर लेना ही 'सिद्धि' है। सिद्धि के साथ अमल साधना शब्द भी जुड़ा है। साधना को ध्येय की प्राप्ति के लिए किया गया प्रयास समझना चाहिए। लेकिन परा-वैज्ञानिक क्षेत्र में सिद्धि शब्द एक विशिष्ट अर्थ से जुड़ा है। यहाँ सिद्धि शब्द का अर्थ है किसी असाधारण कार्य को कर लेने की क्षमता प्राप्त कर लेना। परा-विज्ञान सिद्धि शब्द को व्यापक अर्थ में ग्रहण करता है। किसी को केवल देखकर के उसका भविष्य बतला देना, दूर बैठे व्यक्ति के विषय में सबकुछ ठीक-ठीक बतला देना, मनचाही वस्तु उपस्थित कर देना, बिना औषधि रोग से मुक्त कर देना, यह सब ऐसी बातें हैं जो प्रत्येक के लिए सम्भव नहीं हैं इन्हें सिद्धि की श्रेणी में रखा जा सकता है और इन्हें सम्पन्न कर सकनेवाले को सिद्ध माना जा सकता है। सभी प्रकार की सिद्धियाँ साधनाओं का परिणाम हैं। बिना साधना के सिद्धि की प्राप्ति असम्भव है। आज के युग में विज्ञान की सत्ता सर्वत्र स्थापित हो चुकी है फिर भी विश्व के सभी राष्ट्र, सिद्धियों, सिद्ध पुरुषों, पराभौतिक शक्तियों तथा दैवी शक्तियों में विश्वास करते हैं। सिद्धियों को प्राप्त करने का साधन केवल साधना ही है। लेकिन कभी-कभी किसी व्यक्ति को ईश्वर कृपा से भी सिद्धि प्राप्त हो जाती

है। इन्दौर (म.प्र.) में ओंकार जोशी नाम के एक विद्वान हुए हैं जिनकी महाराज तुकाजी राव से काफी घनिष्ठता थी। श्री ओंकार जोशी बचपन में बड़ी मन्दबुद्धि के थे। वे कहते हैं कि उनके बाबा ने संन्यास आश्रम ग्रहण करने के पश्चात मान्धाता के मन्दिर के पीछे की गुफा में गायत्री की तपस्या आरम्भ की थी। जब उन्हें यह आभास हुआ तो उन्होंने अपने सब घरवालों को बुलाकर यह सूचना दी कि अब हम अपना शरीर त्याग रहें हैं। तुम में से जो भी कुछ माँगना चाहे माँग ले और तो किसी ने भी कोई इच्छा प्रकट नहीं की परन्तु ओंकार जोशी ने अपने बाबा से निवेदन किया कि मेरी बुद्धि अत्यन्त मन्द है ऐसा लगता है, स्मरण शक्ति के अभाव में बीच में ही कोई ऐसा व्यवधान आ सकता है जिससे कि शिक्षा का मार्ग अवरुद्ध हो जाए। मुझे आप ऐसा आशीर्वाद दें जिससे मेरा बौद्धिक विकास हो। बाबा ने उन्हें गायत्री मन्त्र अभिमन्त्रित जल पिलाया और उद्भट विद्वान होने का आशीर्वाद दिया। उसी दिन से उसकी बुद्धि में अद्भुत परिवर्तन होता दिखलाई दिया और उनका उत्तरोत्तर विकास होता गया।

यह साधना में सिद्धि की घटना है। ऐसी ना जाने और कितनी घटनाएँ हैं।

इस प्रकार की अनेकों सिद्धियाँ हैं जो मनुष्य अपनी साधना के बल पर प्राप्त कर सकता है। पूर्व जन्म के संस्कार तो मनुष्य के वश की बात नहीं है परन्तु इस जन्म की साधना अवश्य ही उसके हाथ में है। शुद्ध पवित्र अन्तःकरण और साधना द्वारा अनेकों सिद्धियों को मनुष्य द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। विश्वासपूर्ण एकाग्रता और प्रयास ऐसी शक्तियाँ हैं जो असम्भव को भी सम्भव बना देती हैं।

मन को एकनिष्ठ और चिन्ता मुक्त बनाकर विचारों की एकाग्रता

के साथ ही धैर्य और पूर्ण विश्वास की भावना भी होना आवश्यक है। दो चार दिनों की साधना से कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती है। इसके लिए दीर्घकाल तक साधना आवश्यक है। आप स्वयं देखें डॉक्टर, वैज्ञानिक और इंजीनियर बनना भी एक प्रकार की भौतिक सिद्धि है लेकिन ये सिद्धियाँ कुछ महीनों में ही नहीं प्राप्त हो जाती हैं। इनके लिए बरसों साधना करनी पड़ती है। इस सबके लिए निष्ठा और मनोबल की बहुत आवश्यकता है।

अब पाठकों की जानकारी, ज्ञानवर्धन और साधना के लिए 'मुस्लिम तन्त्र' की कुछ उत्कृष्ट साधनाएँ प्रस्तुत हैं।

पीर बिरहना की साधना

"पीर बिरहना धुंधु करे सवा सेर सवा तोला खाय अस्सी कोस धावा सात सौ कुतक आगे चले, सात सौ कुतक पीछे चले, छप्पन सौ छुरी चले, बावन सौ वीर चले जिसमें गढ़ गजना का पीर चले और की ध्वजा उखाड़ता चले, अपनी ध्वजा टेकता चले, सोते को जगाता चले, हाथों में हथकड़ी गेरे पैरों में बेड़ी गेरे हलाल माहीं दीठ करें मुरदार माहीं पीठ करे कलवान नबी कूं याद करे ठः ठः ठः।"

अमावस्या अथवा ग्रहण की रात से शुरू करके प्रतिदिन ४१ दिनों तक इस मन्त्र का नित्य ११०८ बार जप करें तथा मीठे तेल का दीपक जलाकर चमेली के फूल चढ़ावे और सवा सेर हलुवा का भोग रखें तो इकतालीसवें दिन पीर हाजिर होगा तथा उससे जिस काम के लिए कहा जाएगा, उसे वह सदैव पूरा करता रहेगा।

मुहम्मदा पीर की साधना

"बिस्मिल्लाहेर्रहमानिर्रहीम पाँय घूँघरा कोट जंजीर जिस पर खेले मुहम्मदा पीर, सवा मन का तीर जिस पर खेलता आवे मुहम्मदा वीर, मार-मार करता आवे, बाँध-बाँध करता आवे, डाकिनी को बाँध कुवां बावड़ी से लावो, सोती को लावो, पीसती को लावो, पकाती को लावो, जल्द जवो हजरत इमाम हुसेन की जाँघ से निकाल कर लावो, बीबी फातमा के दामन से खोलकर लावो नहीं तो माता का दूध हराम करें।"

हाजिरात साधना

"बिस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम मुहम्मदा ताहयासिला रनवलखता जीका असवार यहाँ चलंता कौन-कौन चाल्या, अर्जगिर पर पर्वत चले, हाजी चले, गाजी चले, ढोली बाजंत भेरी बाजत अहेमदा चलंत, महेमदा चलंत, सत्तर सिला चलंत, बहत्तर बल्लम चलंत एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर चलंत, बावन वीर चलंत, चौसठ जोगनी चलंत, नौ नारसिंह चलंत, बारह रावण चलंत, चौसठ मूसा चलंत, सुलेमान पैगम्बर का तख्त चलंत, लालपरी चली, सफेद परी चली, जरद परी चली, श्याम परी चली, सब्ज परी चली, हूर परी चली, जूर परी चली, अलोल परी चली, आसमान परी चली, आकाश से उतरी बराय खुदा मेरे काम कूं सिताबी उतारल्यावणा एक चलंता, एक सौ चल्या दोय चलंता दोय सौ चल्या तीन चलंता, तीन सौ चल्या बड़े वेग सूं चल्या उडा कुडादेव चल्या मंदाऊ कालेश्वरी चली लंका पैरावण चल्या

हनुमन्त चले घूनन गरसूं देव घूमा चली नदी नालेसूं चली मन्दोदरी रावणपुरी सूं चली उल्टी पाखर सुलटी लागी, जो कोई कहे हमारी बुरी उल्टी सोमरली देखूं तेताल मन्त्र तेरी शक्ति बिस्मिल्ल बिस्मिल्लाहहेर्रहेमानिर्रहीम उत्तर का बाजा बजा उत्तर का बादशाह आया, पश्चिम का बाजा बजा पश्चिम का बादशाह आया, पूरब का बाजा बजा, पूरब का बादशाह आया काले-काले के असवार अपनी-अपनी जमात सित:बी लेकर आवण जहाँ हकालै जहाँ हाजिर रहेना दे खुदा मुहम्मदा की सुखीर पीर नीर-नीर नीला घोड़ा, नीला जीन जिस पर चढ़ि आया मुहम्मदा पीर रोजा करे निवाज गुजारे अन्न पानी के कने न आवै, खाज खाय अखज पर हरे सौ मुसलमान बहिस्त में जाय, सवा मन लोहे की जंजीर तोड़ तो जाई तोड़ तो आव हाथ कुदाड़ी गले जंजीर ऐसी कही सुनो मुहम्मद पीर अपनी मुदरा पेश करी, पराई मुदरा तोड़ डाल, हमारी हकार तुम्हारी पुकार किले नारसिंह किले की सवारी ठः ठः स्वाहा।''

सवा गज सफेद कपड़ा लेकर लोबान की धूप दी जाए। फिर सवा सेर चावल लेकर थाली में पानी भरकर रखें। उसमें चौमुखा दीपक जलाये। फिर किसी कन्या को स्नान करवा के तथा नये कपड़े पहनाकर उसे सामने बैठायें तथा गुड़ की गोली को उपरोक्त मन्त्र से ३४ बार अभिमन्त्रित कर कन्या को खिलायें। फिर कन्या दीपक के ऊपर दृष्टि जमाये। उससे जो कुछ पूछा जाएगा, उसका वह उत्तर देगी।

हाजिरात साधना

''बिस्मिल्लाहेर्रहेनिर्रहीम खुदाई बड़ा तू बड़ा जैनुद्दीन पैगम्बर

दुनी तेरी सादान फरो वादना मुरारी बेबनियादि तुर्कमा परि तायिया सिलार देखूँ तेरी शक्ति बेगि बाँधि ल्याव नौ नारसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्मा अठारह सौ शाकिनी कामन दुरासन छल छिद्र भूत-प्रेत चोर चाखर अगिया बेताल बेगि बांधि लाव जो न बाँधि लावै तो दुहाई सुलेमान पैगम्बर की।''

सात शुक्रवार तेल हिना का इत्र, लौंग, धूप तथा मिठाई से पूजन करके १०८ बार पढ़ने से यह मन्त्र ४१ दिन में सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जब हाजिरात करना हो, तब फर्श पर मिट्टी से चौका लगावें और पर त्रिशूल बना कर उसके ऊपर कन्या को स्नान कराकर तथा स्वच्छ वस्त्र पहनाकर बैठाएँ फिर कन्या के सामने दीपक जलाकर रखें फिर मन्त्र को पढ़-पढ़कर दीपक पर चावलों को मारें तो वह कन्या दीपक में देखकर आपके सारे प्रश्नों का उत्तर देगी।

विद्या वर्द्धक मन्त्र

''या हुतजाइल बहक्क या गाफ या गाफियों।''

एक सफेद कागज पर २००० की संख्या में उपरोक्त मन्त्र लिखें फिर कागज को लोबान की धूनी देकर जिस व्यक्ति की दाईं भुजा में बाँध दिया जाएगा उसे बहुत विद्या आएगी। स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए यह मन्त्र बहुत उपयोगी है।

सर्वप्रियता दायक मन्त्र

''या त्वात्वाईल बहक्क या लाभ या लतीफो।''

इस मन्त्र को प्रतिदिन १००० बार पढ़कर स्वयं के ऊपर फूँक मारनेवाला व्यक्ति प्रिय बन जाता है।

हाजिरात की साधना

''ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर मैदर मादर दस्तगीर मदत मेरा पीरान पीर करो घोड़े पर भीड़ चढ़ो हजरत पीर हजार सौ हजार।''

शुक्रवार से शुरू करके ३१ दिन तक उपरोक्त मन्त्र को नित्य ११०८ की संख्या में उल्टी माला पर जपें। लौंग, इलायची और लोबान की धूप देते रहें। प्रयोग के समय छोटे बच्चे को एक पट्टे पर बिठायें तथा उसके दायें अंगूठे के नाखून पर काली स्याही लगा दें और उसमें देखने को कहें तथा स्वयं आगे ब बैठकर उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए धूप देते रहें। लड़का उस स्याही लगे नाखून में देखकर सब बतला देगा।लोकप्रियता दायक मन्त्र

''या रोमाईल बहक्क या मीम महमनो।''

किसी भी सफेद कागज के ऊपर ९०० बार उपरोक्त मन्त्र लिखकर, उक्त मन्त्र को १००१ बार पढ़कर फूँक मारें, तदुपरान्त उसे दबा दें। इस प्रयोग को करनेवाला लोकप्रिय होता है।

स्वप्न सिद्धि साधना

''बिस्मिल्लाहेहुर्रमाननुर्रहीम अल्लाहो रबीमुहम्मद रसूल ख्वाजे की तस्वीर कुल आलम हजर भेजेंगे मवक्कल ल्यावेंगे जरूर।''

उपरोक्त मन्त्र को पहले सवा लाख की संख्या में जप लेना चाहिए। मन्त्र का जप शुक्रवार से शुरू करना चाहिए तथा पश्चिम की ओर मुँह करके बैठना चाहिए। प्रयोग के समय ग्यारह सौ बार जप करना चाहिए। यह क्रम ३१ दिन तक बराबर बनाये रखना चाहिए। इसके प्रभाव से प्रश्न का उत्तर ३१ दिन के भीतर प्राप्त हो जाता है।

स्वप्न सिद्धि साधना

"बिस्मिल्ला हुर्रहेमानुर्रहीम शमशेख बैरेल शलैल आदमी हजरत महबूब सुभानी हाजिर।"

उपरोक्त मन्त्र को नित्य १००१ की संख्या में जपने से ३१ दिन के भीतर स्वप्न के माध्यम से भविष्य की सूचना प्राप्त हो जाती है।

स्वप्न सिद्धि साधना मन्त्र

"या बासितो।"

पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके बैठे तथा चौमुखा दीपक जलाकर, उल्टी माला पर नित्य ३३०० की संख्या में ३१ दिनों तक उल्टी माला फेरते हुए जप करें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। आवश्यकता के समय इस मन्त्र को नित्य १००१ की संख्या में पढ़कर सो जाने पर साधक के प्रश्न का उत्तर स्वप्न में मिल जाता है। उपरोक्त मन्त्र के जाप में हजारा माला का ही प्रयोग करें।

सफलता हेतु साधना

यह घटना मेरे तांत्रिक जीवन की अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है। घटना इस प्रकार है। भीषण गर्मी के दिन थे। एक दिन मैं अपने कमरे में एकदम अकेला था। अपने जीवन की असफलताओं से पस्त था असफलताओं से परेशान कुछ सोच रहा था कि नींद आ गई। अपनी निद्रा की अवस्था में किसी बुजुर्ग को देखा वह कह रहा है कि बहल निराश न हो। लेकिन सफलता के लिए रोज दिन में ४४४ बार **"अलहमद लिल्लाह"** जाप कर और तब तक सफलता प्राप्त न हो

इस अमल को जारी रखना।

मुझे अपनी सफलता का पूर्ण विश्वास हो गया। मैं लगन के साथ प्रतिदिन ४४४ बार इस इस्म को जपता रहा और सफलता के लिए प्रार्थना करता रहा। इसका प्रभाव यह हुआ मुझे भरपूर सफलता प्राप्त हुई और आज तक सफलता प्राप्त कर रहा हूँ। आप भी एक बार आजमा कर देखें।

स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए साधना

मेरे एक परिचित की पत्नी बहुत बीमार पड़ गई। विवाह को अधिक समय नहीं हुआ था शुरू में तो रोग का पता न चला परिचित ने पत्नी की चिकित्सा करवाई किन्तु कहीं से भी पर्याप्त लाभ न हुआ। अन्त में पता चला कि पत्नी को कैंसर है। यह वह रोग है जो प्राण लेने के पश्चात भी पीछा नहीं छोड़ता।

एक दिन वह परिचित मेरे पास आया। मैंने कहा 'खुदा तुझ पर रहम करे जो मैं बतलाऊँ तुम उस पर अनल करना।' वह मान गया।

मैंने बतलाया कि नीम के सात पत्तों पर काली स्याही से **''बिस्मिल्लाह अलरहमान वलरहीम''** लिखकर प्रतिदिन पत्नी को खिलाया करो और ऊपर से 'बिस्मिल्लाह' शरीफ से अभिमन्त्रित पानी पिलाया करो भगवान ने चाहा शीघ्र स्वस्थ हो जायेगी।

परिचित ने मेरे द्वारा बतलाया प्रयोग किया। मेरी सूचना के अनुसार उनकी पत्नी काफी समय तक जीवित रही और समयोपरान्त किसी अन्य रोग से ही उनकी मृत्यु हुई।



भूत-प्रेत-जिन्न दोष निवारक प्रयोग

भूत-प्रेतों की बातें तो हम प्रायः सुनते ही रहते हैं किन्तु भुतही प्रयोगों के विषय में सुनने को बहुत कम मिलता है। बहुत से प्रयोग हानिकारक होते हैं इनसे किसी न किसी प्रकार का दुर्भाग्य जुड़ा रहता है पर बहुत से प्रयोग ऐसे भी होते हैं कि उन्हें अभिशप्त नहीं कहा जा सकता है और न ही उनके विषय में किसी प्रकार का सन्देह ही व्यक्त किया जा सकता है। आइए, अब हम पहले कुछ भुतही घटनाओं की चर्चा करते हैं।

अमरीका में रहनेवाली मिस मैचलिंग बतलाती हैं कि वह जिस फ्लैट में रहती थीं वह दो मंजिला था। उसके ऊपर वाले भाग में एक बड़ा हाल था। उस फ्लैट की मालकिन वहीं रहा करती थी। उसके दोनों पैर खराब हो चुके थे। वह पहिएदार कुर्सी पर बैठकर घूमा करती थी। काफी समय बीत जाने के बाद जब उसकी मृत्यु हो गई तो मृत्यु के उपरान्त भी बहुत दिनों तक उनके कमरे में पहियों के चलने फिरने की आवाज आती रही। हालाँकि उसकी मृत्यु के पश्चात उसकी सारी चीजों को बन्द करके ताला तक लगा दिया गया था पर फिर भी रात को अनेक वस्तुओं के साथ उस कुर्सी के टकराने की आवाजें उस बिल्डिग के निवासियों को तंग करती रही।

इसी प्रकार की एक घटना और भी है। यह लगभग १५ जून,

१९३४ को अदालत में दो कारों की टक्कर के परिणाम स्वरूप मारे गए एक चालक से सम्बन्धित मुकदमे की सुनवाई चल रही थी। इसी सुनवाई के मध्य वहाँ के निवासी फ्रेंच रोबिन्सन का कहना था कि जिस सड़क पर यह दुर्घटना हुई थी उस सड़क पर रात को प्रायः एक बस दिखलाई पड़ती है। इस बस की सभी बत्तियाँ जल-बुझ रही होती हैं किन्तु बस में ड्राईवर नहीं होता है।

जहाँ दुर्घटना हुई थी उस स्थान के समीप ही रहनेवाले श्री डरवान ने भी बतलाया कि उन्होंने भी एक ड्राईवर रहित बस को इस सड़क से प्रायः गुजरते देखा था जिसकी बत्तियाँ जल बुझ रही थीं। इसके फौरन बाद ही किसी दुर्घटना के होने की तेज आवाज हुई और उन्होंने देखा कि दो कारें आपस में भिड़ गई हैं। वहीं उन्हें मूर्छित अवस्था में पड़ा हुआ कार का चालक भी मिला जिसने बतलाया कि एकाएक अपने सामने बिना चालक के आती हुई बस को देखकर वह बुरी तरह डर गया और इससे पहले कि वह कुछ सोच पाता उसकी कार दूसरी कार में भिड़ गई थी और बस का कहीं भी नामोनिशान नहीं था।

एक और उदाहरण प्रस्तुत है—मिस हेलन बर्बा एक दैनिक समाचार पत्र कार्यालय में काम करती हैं जिसके पास एक भुतही घड़ी है। यह एक ऐसी घड़ी है कि जब भी उनके परिवार का कोई भी सदस्य मरा है यह घड़ी स्वयं ही चलना बन्द हो गई। जब उसके दादा के दादा स्पैलमैन की मृत्यु हुई थी, तब भी यह घड़ी स्वयं ही चलना बन्द हो गई थी। उसी दिन इस घड़ी को हेलन बर्बा के पिता ने एक घड़ी साज के पास रख दिया। एक दिन जब उस घड़ीसाज की नजर उस पर पड़ी तो वह भी हैरान रह गया। उसने देखा कि घड़ी का

डायल एकदम उल्टा हो गया था। जबकि उसके सारे पुर्जे ठीक-ठाक थे। ऐसे ही जब एक फोटोग्राफर उस घड़ी की फोटो लेने के लिए आया तो वह घड़ी स्वयं ही चलने लगी जबकि उसके सारे पुर्जे घड़ीसाज के द्वारा पहले से ही निकाले जा चुके थे।

प्रिय पाठकों! उपरोक्त सारी घटनाएँ किसी अज्ञात शक्ति के उपस्थित होने पर स्पष्ट संकेत करती हैं। अब यह शक्ति कोई भूत-प्रेत, जिन्न, शैतान अथवा अशान्त आत्मा हो सकती है उन्हें शान्त करने के कुछ प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ। इससे प्रयोगों को करने से पहले सावधानी अवश्य रखें।

परियों का दोष दूर करने का प्रयोग

''ओम् महकूब कूबमह विमलमह बड़ी मढ़ी में चार देव कौण-कौण अहंकार महंकार मुहम्मदा वीर ताइया सिलार बजाऊँ ख्वाजे मुअय्यूदीन तुम्हारी खुशबोई में चढ़ी कमाण सुलैमान परी लक परी को हुकम कीजै कौन कौन परी स्याह परी सबज परी हूर परी अश कुर्स की लाऊली बीबी फातमा कीली झीली आयना पाना फल आय लेना सवा सेर शर्बत का प्याला आप ले आप हाजिर होना मीर मुहीमुदीन मखदूम जहानी या शेख सरफ अहिया पठाणा आप हाजिर न हो तो रोज कयामत के दामनगीर हूंगा।''

प्रयोग के स्थान को अच्छी तरह से झाड़-फूँककर वहाँ आटे का चौमुखा दीपक जलायें तथा आठ देशी पान के बीड़े लेकर और गुलाब के शर्बत का प्याला भरकर जिस रोगी पर परियों का दोष हो, उसे चौराहे पर खड़ा करके, इन वस्तुओं का उतारा करके मन्त्र से २१ बार झाड़ा दें, फिर सब वस्तुओं को बहते जल के किनारे रख आयें तो

परियों का दोष दूर हो जाता है।

भूत-प्रेत बाधा हेतु

यन्त्र बनाने के बाद यन्त्र पर देशी पान गुलाब के फूल चढ़ायें तथा धूप-दीप देकर पूजा करें, फिर उसे सफेद कपड़े में लपेटकर फलीता बना लें तथा दीपक में सुगन्धित चमेली का तेल भरकर उसमें वह बत्ती डालकर मिट्टी द्वारा लीपे गए स्थान पर रखें।

दीपक के सामने हिना का इत्र गुलाब के फूल तथा मिठाई को रखें। जब दीपक जल जाये तब भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त रोगी को अपनी निगाह दीपक की लौ पर रखने के लिए कहें। इस प्रयोग से शैतानी बाधा शान्त हो जाती है।

या बुद्दूह

या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत

या बुद्दूह

या हू	११	१४	१	८	या वसत
या हू					या वसत
या हू	४	५	१०	१५	या वसत
या हू					या वसत
या हू	६	३	१६	९	या वसत
या हू					या वसत
या हू	१३	१२	७	२	या वसत

या बुद्दूह

बहूक्कया जिब्राईल
या मिकाईल या इस्राफील या इजाईल
जो कोई..................की देह की दुश्क
दे रहा है उसे इस फलीता से जला दीजिए।
..........................नाम (अमुक)

या बुद्दूह

भूत-प्रेत का गण्डा

"ओम नमो आदेश गुरु को लड़गढ़ी सों मुहम्मद पठाण चढया श्वेत घोड़ा श्वेत पलाण भूत बाँधि प्रेत बाँधि चौसठ जोगिनी बाँधि अड़सठ स्थान बाँधि, बाँधि, बाँधि रे चोखी तुरकिनी का पूत बेगि बाँधि जोतू न बाँधे तो अपनी माता की शैया पर पांव धरे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

तांत्रिक को चाहिए वह थोड़ी मिठाई तथा दीपक को सामने रखकर लोबान की धूनी दे तथा रोगी के सिर से लेकर एड़ी तक सात रंग का डोरा नाप कर उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए उसमें ३१ गाँठें लगायें। फिर उसे रोगी के गले में बाँध दे। इस गण्डे को पहनने से भूत-प्रेत का दोष दूर हो जाता है।

पीर का मन्त्र

"ओम नमो हाकान्त जुगराज फाटंत काय जिस कारण जुगराज में तोकों ध्याया, हंकारत जुगराज आया धारत आया सिर के फूल बखेरत आया और की चौकी उठावन्त आया, अपनी चौकी बैठावंत आया और का मिवाड़ तोड़ता आया, आपना किवाड़ भेड़ता आया, बांधि बाँधिकिसको बांधि, भूत को बाँधि प्रेत को बाँधि, देव-दानव को बाँधि, उड़न्त गड़न्त योगिनी को बाँधि, चीर-चिरणागार को बाँधि, तिरसठ कलुवा को बाँधि, चौसठ जोगिनी को बाँधि, बावन वीर को बाँधि, आकाश की परियों को बाँधि, डाकिनी-शाकिनी को बाँधि, चेटक को बाँधि, छल को बाँधि, विद्र को बाँधि, द्वार को बाँधि, हाट को बाँधि,

गली को बाँधि, गिरारे को बाँधि, किया को बाँधि, कराये को बाँधि, अपनी को बाँधि, पराई को बाँधि, लीली को बाँधि, पीली को बाँधि, स्याह को बाँधि, सफेद को बाँधि, लाली को बाँधि, बाँधि-बाँधि रे गढ़ गजनी के मुहम्मदापीर चलै तेरे संग सत्तर सौ बीर, जो बिसरि जाय तो सौ राजा हलाल जाय, उल्टी मार, पछाड़ मार, धाड़ मार, कजा चढ़ाय, सुड़िया हलाय, शीश खिलाय, शब्द साँचा पिंड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।''

उपरोक्त मन्त्र को पहले सिद्ध कर लें। भूत-प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति को सामने बिठाकर १०८ बार झाड़े। भोग में कच्चा मांस, कच्ची मदिरा, हिना का इत्र, गुलाब के फूल और मीठा रखें। इस प्रयोग से भूत-प्रेत बाधा शान्त होती है। इस भोग को चौराहे पर रख दें।

बला दूर करने का मन्त्र

''याहि सार सार जिन्न देय परी जबर कुफार एक खाई दूसरी गिर्द पसार बगिव मलायक असचार दायें दस्त रखे जिब्राईल, बायें दस्त रखे मीकाईल, पीठ रखे इस्त्राफील, पेट रखे इज्राईल, दस्त चपटसन दस्त रास्त हुसैन पेशवा मुहम्मद गिर्द बगिर्द अली ला इलाह कोट इल्लिल्लाह की खाई हजरत अली की चौकी बैठी मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।''

उपरोक्त मन्त्र को ३१ बार पढ़कर चारों ओर हाथ फिराकर ताली बजाने से दिशा बन्धन होता है। मसान आदि का प्रकोप होने पर इस मन्त्र से झाड़ा करने पर रोगी तुरन्त स्वस्थ होता है।

भूत-प्रेत बाधा हेतु

निम्न यन्त्र को किसी कागज के ऊपर लिखकर भूत-प्रेत, जिन्न से परेशान व्यक्ति के पास रखवा दें वह इन आफतों से बचा रहेगा। यन्त्र नक्श चहल काफ का है। नक्श निम्न हैं—

३९०११	३९०४	३९०३
३९०१	३९०८	३९०१२
३९०७	३९०१२	३००५

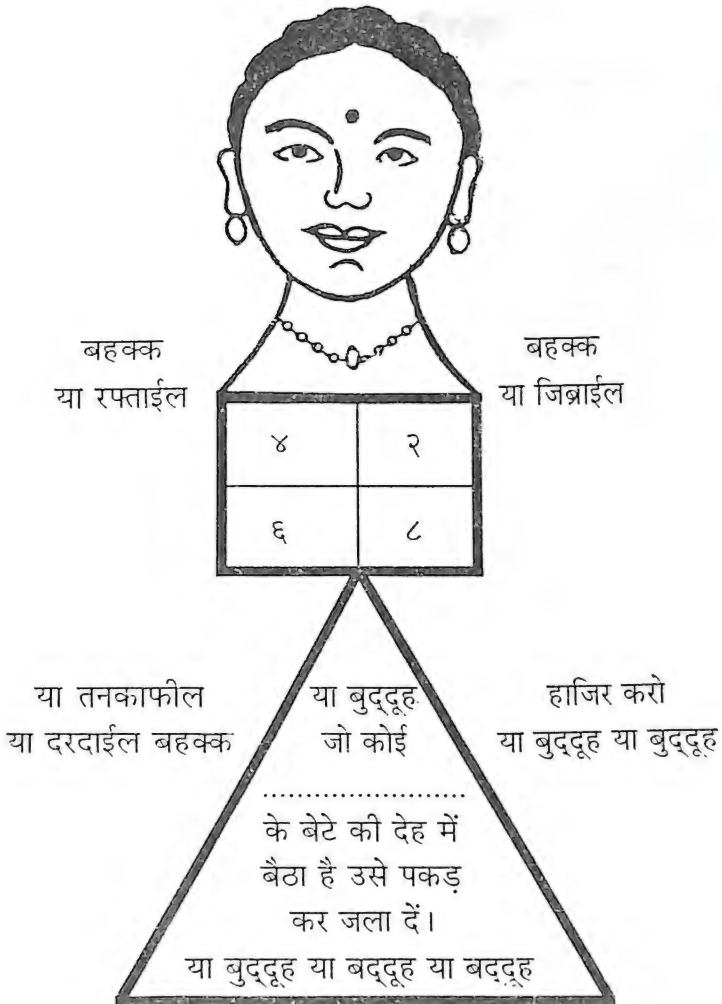
भूत-प्रेत बाधा हेतु प्रयोग

६	७	२
१	५	९
८	३	४

उपरोक्त बताये गए नक्श को भूत-प्रेत बाधा हेतु फलीता बनाकर रुई लपेटकर फिर सकोरे में लपेटकर कड़वे तेल में डाल जलायें और शिरनी पर हजरत की फातिहा देवे। भूत-प्रेत बाधा दूर होगी।

भूत निवारक फलीता

नीचे प्रदर्शित यन्त्र का फलीता बनाकर भूतादि ग्रस्त रोगी की नाक में धूनी देने से जिन्न भाग जाते हैं।


बहक्क
या रफ्ताईल
बहक्क
या जिब्राईल
४
२
६
८
या तनकाफील
या दरदाईल बहक्क
या बुद्दूह
जो कोई
हाजिर करो
या बुद्दूह या बुद्दूह
....
के बेटे की देह में
बैठा है उसे पकड़
कर जला दें।
या बुद्दूह या बद्दूह या बद्दूह

भूतप्रेत बाधा हेतु

निम्न नक्श को पास रखने से भूत-प्रेत बाधा नहीं होती है।

बहक्क जिबराईल या बदूह

१	२	०	०
२१	३	२	६
१८	१५	१८	५
१४	२	२३	३२

या बदूह

ऊपरी बाधा से बचाव हेतु

निम्न मन्त्र को लिखकर दीवार पर चिपकावें।

११	८	१	४
८	१३	१२	७
१६	३	१६	८
६	१०	१५	११

७८६

जादू-टोने का प्रभाव दूर करने के लिए

अमावस की सुबह कब्रिस्तान में जाकर, वहाँ से कौए को पकड़ लावें फिर उसे पिंजड़े में बन्द करके उसके माथे पर केसर का तिलक लगायें तथा उसके गर्दन के चारों ओर केसर से वृत बना दें। फिर उड़द के आटे का हलुआ तैयार करें। उसी में थोड़ा लोबान मिला दें। फिर वह हलुआ कौए को खाने के लिए दें। दिन के समय उसे नीले रंग का पानी दें। शनिवार को हलुवा तेल और मुड़ से तैयार करें। यही कौए को खिलायें उस बर्तत में ताँबे का एक छोटा टुकड़ा भी डाल देना चाहिए। कौआ हलुए को खा लेगा लेकिन वह ताँबे का टुकड़ा छोड़ देगा। जब उस टुकड़े को बर्तन में से निकालकर अपने पास रख लें। इसके बाद कौए को उड़ा दें। फिर उस ताँबे के टुकड़े से मूरत तैयार कर दे। उस मूरत के एक ओर कौए का तथा दूसरी ओर एक तराजू का चित्र खुदवा दें। अब यन्त्र तैयार है अगर कभी जादू टोने का असर मालूम हो तो बनाई गई मूरत को काले धागे में बाँधकर गले में पहना दें। जादू टोने का प्रभाव तुरन्त दूर हो जायेगा।

बच्चों के लिए गंडा देने का मन्त्र

''बंध तो बंध मौला मुर्तजा अली का बंध, कीड़े और मकोड़े का बंध, ताप और तिजोरी का बंध, जूड़ी और बुखार का बंध, नजर और गुजर का बंध, दीठ और मूठ का बंध, कीये और कराये का बंध, भेजे और भिजाये का बंध, नावत पर हाथन का बंध न बंध तो बांध मौला मुर्तजा अली का बंध, राह और बाट का बंध, जमीन और आसमान का बंध, घर और बाहर का बंध,

पवन और पानी का बंध, कुआँ और पनिहारी का बंध, लोह और कलम का बंध, बंध तो बंध मौला मुर्तजा अली का बंध।"

रोगी की एड़ी से खिखा तक काला डोरा नापकर, इस मन्त्र द्वारा उसमें २१ गाँठ लगायें तथा सवा पाव मिठाई मँगाकर मुर्तजा के नाम से बालकों को बाँट दें। फिर गंडे को लोबान की धूनी देकर बालक के गले में बाँध दें।

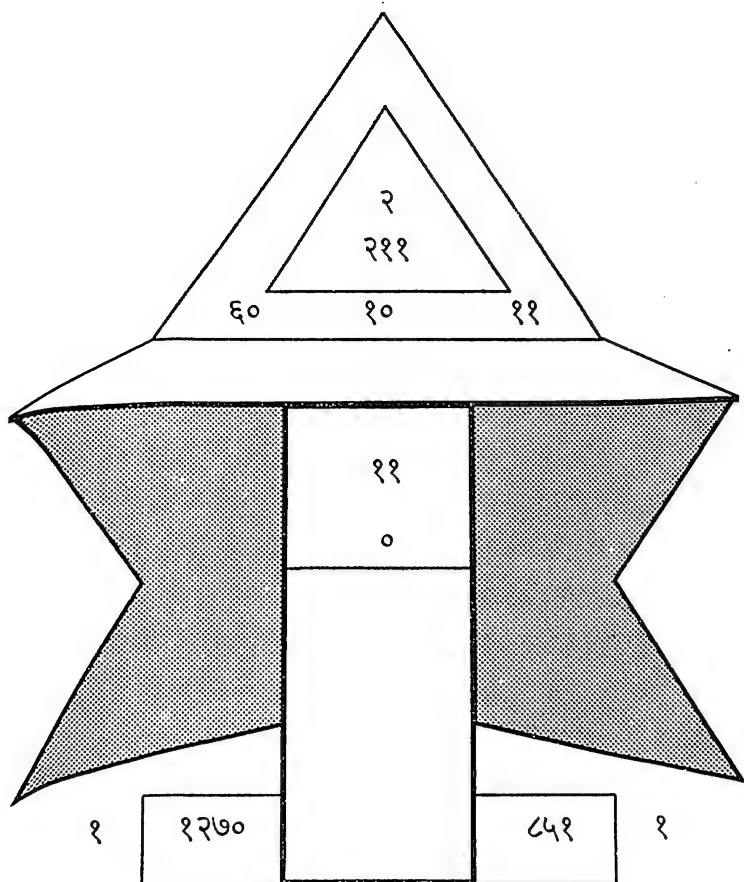
भूतादि दोष-निवारण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को काली स्याही से सरकंडे की कलम से कागज पर लिखकर तथा लोबान की धूप देकर बालक के गले में बाँध देने से भूत-प्रेत आदि के दोष दूर हो जाते हैं।

या करमाईल	२	या जिब्राईल
३	१०	७
या दरदाईल	८	या तिनको फाईल

भूत-प्रेत निवारण यन्त्र

निम्न यन्त्र को कागज के ऊपर जाफरान के द्वारा लिखकर फलीता बना लें, फिर उसे दीपक में डालकर रोगी के सामने जलायें तो प्रेत भाग जाता है।


२
२११
६०
१०
११
११
०
१
१२७०
८५१
१

मुस्लिम तन्त्र (अमल) की शक्ति

यह सत्य है मन और आत्मा को आज तक कोई नहीं देख सका है। फिर भी सबका इनके अस्तित्व में विश्वास है। इतना ही नहीं आत्मा की शक्ति का सभी का सदैव अनुभव होता रहता है।

मन शब्द का शरीर में शक्तिशाली स्थिति का संज्ञा वाचक नाम है। मन की शक्ति से कोई अपरिचित नहीं है। यह भौतिक शरीर को क्रियाशील बनाये रखनेवाली शक्ति है। 'ऊधौ मन न भये दस बीस' अर्थात् हमारा मन अकेला है। इसकी कोई शाखा नहीं है।

मन की शक्ति असीम है इसकी गति को आज तक विज्ञान नहीं नाप पाया है। यह पूर्ण स्वेच्छाचारी है। मन के ऊपर न तो बुद्धि का अंकुश है और न शरीर का ही है।

गतिशील और चंचल मनुष्यों का मन सृष्टि में सभी जीवों से अधिक विकसित माना जाता है। लेकिन विज्ञान और मनोविज्ञान इसका पूरा-पूरा स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं हो पाये हैं।

मनुष्य का मन बड़ा शक्तिशाली है। इसकी ग्रहण क्षमता और संवेदनशीलता अत्यन्त तीव्र है। यह असाध्य कार्य कर सकता है। साहस भरे कारनामे कर सकता है और भयभीत होकर कायर भी हो सकता है। मन हमारे शरीर का स्वामी है। शरीर पर ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों सहित इसका अधिपत्य है। यह भयभीत होकर हमें डरपोक

बना देता है और साहसी बनकर असाध्य कार्य करवा देता है। कहा भी गया है कि भ्रम से भय उत्पन्न होता है। आदमी रस्सी को साँप समझ कर डर जाता है लेकिन भय का निवारण होते ही वह अपने साहस को पुनः प्राप्त कर लेता है।

हमारे शास्त्र कहते हैं—'**मनः एवं मनुष्याणाम् कारणम् बोध मोक्षये।**' कहने का तात्पर्य यह है कि संसार के समस्त सुखों और दुखों का कारण मनुष्य का मन ही है।

तांत्रिक इसी मन की शक्ति का विस्तार करके अनेकों चमत्कारी कार्य कर दिखलाते हैं। तांत्रिकों ने अपनी इसी शक्ति का विस्तार कर असाधारण इच्छा शक्ति और संकल्प शक्ति अर्जित कर अनेकों चमत्कारी कार्य किये हैं।

साधारण मनुष्य भी चाहे तो साधना द्वारा अनेक शक्तियों को प्राप्त कर सकता है। मन की शक्ति के द्वारा सम्भव को असम्भव और असम्भव को सम्भव बनाया जा सकता है। जिसे हम शाप और वरदान देने की शक्ति कहते हैं, वह मन की ही अपार शक्ति है।

मन की दो शक्तियाँ हैं। कल्पना शक्ति और इच्छा शक्ति इनके विस्तार की संभावनाएँ और उपलब्धियाँ भी अलग-अलग हैं। इन शक्तियों के द्वारा महर्षि विश्वामित्र ने तो इतनी शक्ति अर्जित कर ली थी कि स्वर्ग का अधिकारी न होने पर भी त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने का प्रयास किया था तथा वे नई सृष्टि रचना को भी पूर्ण करने जा रहे थे। इन्हीं सब स्थितियों के आधार पर कहा जाता है कि प्रयास द्वारा नर नारायण को प्राप्त कर सकता है। वास्तव में मनुष्य में भी वही सब शक्तियाँ हैं जो कि ईश्वर में हैं लेकिन इनको जाग्रत करने के लिए साधना की आवश्यकता है।

शास्त्रों में भी कहा गया है—'अवश्यमेव भुक्तव्य कर्मस्य शुभा शुभम्।' अर्थात् अपने किए कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। रामायण में भी भगवान राम का कथन है—

'कोई न काहू सुख दुख कर दाता

मित्रकृत कर्म भोग सुन भ्राता।'

प्रिय पाठकों! मैं मन की शक्ति के विषय को लेकर और अधिक विस्तार में नहीं जाऊँगा। हमारे इस धर्म और शास्त्र ने मन की शक्ति को खुले दिल से स्वीकार किया है। 'मुस्लिम तन्त्र' में भी इसका महत्व दृष्टिगोचर होता है। साधना काल में एकान्त (हुजरे) में जाकर अमल करना इसका ही एक प्रमाण है।

सबसे पहले यह समझ लें कि दुआ में एक असर होता है। अगर उस चीज को सही तरीके से प्रयोग किा जाए तो वह यकीनी तौर पर अपना प्रभाव दिखलायेगी। लेकिन गलती करने से मेहनत बेकार हो जाती है और नुकसान उठाना पड़ता है। अमलियात के विषय में हिदायत पर अमल करना जरूरी है। आमिल इन कायदों का लिहाज रखेगा तो वह कभी भी नुकसान न उठायेगा।

अब मैं पाठकों के लाभ हेतु कुछ विशेष मुस्लिम अमल प्रस्तुत करूँगा। आशा है जिज्ञासु पाठक अमल के समय में मन पर नियन्त्रण रखेंगे और हिदायत के अनुसार ही प्रयोग करेंगे।

रोजी मिलने का तन्त्र

''या इश्राफील बहक्क या अल्ला हो।''

सवा पाव उर्द के आटे में खमीर उठाकर रोटी बनावे। एक तरफ दो तह करके सफेद रूमाल को रखें, उस पर रोटी को रख दें।

चौथाई रोटी की बेर के बराबर १० गोलियाँ बनावे। प्रत्येक गोली को उक्त मन्त्र द्वारा २१-२१ बार अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात गोलियों को तथा शेष बची हुई रोटी को नदी में डाल दें।

दरिद्रता नाशक मन्त्र

"या कबीयो या गनियो या मलीयो या बकीयो।"

प्रात:काल हाथ-मुँह धोकर एक बार 'बिस्मिल्लाह' कहकर एक हजार तीन सौ बार इस मन्त्र का पाठ करे। इक्कीस बार 'दरूद' भी पढ़नी चाहिए।

मन्त्र इस प्रकार है—

"अल्ला हम्मासल्ले अला मुहम्मदीन व अला आले मुहम्मदीन व वारिक वसल्लम्।"

वशीकरण हेतु

"अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार उसका नाम मोहनी मोहे जग संसार मुझे करे मार मार उसे मेरे बाँये कदम तेरे डार जो न माने मुहम्मद की आन उस पर पड़े वज्र का बाण बहक्क लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद रसूलिल्लाह।"

किसी भी शनिवार से आरम्भ करके घी के दीपक के सामने मिठाई रखकर लोबान की धूप दे तथा ९१ बार मन्त्र का जाप करे। इस प्रकार सात दिन तक करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर जिस स्त्री को वश में करना हो, उसके बायें पाँव के नीचे की मिट्टी को लाकर उक्त मन्त्र से ३१ बार अभिमंत्रित करके, स्त्री पर डाले तो वह वश में होती है।

वशीकरण हेतु

"कालूँ मुख धोये करूँ सलाम मेरी आँखों में सुरमा बसे जो देखे सो पायन पड़े दुहाई गौसुल आदम दस्तगीर की छूः छूः छूः।"

उपरोक्त मन्त्र से आटे को अभिमन्त्रित करें, फिर उस आटे को रोटी पकाकर जिसे भी खिला दोगे वह वश में होगा।

वशीकरण मन्त्र

एक बार 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर, नीचे लिखे मन्त्र को ३१ बार अपने दोनों हाथों की हथेली पर पढ़कर, उन हाथों को अपने मुँह पर फेरकर जाय तो इच्छा पूरी होती है।

मन्त्र—

"सलामुन कौलुनमिनरविर्रहीम तनजीलुल अजीजुरहीम।"

मोहनी मन्त्र

"तेल से यह तेल राजा प्रजा पाऊँ मेल पोखरी पानी मसको आ लगाया योनि मेरे पाय लगाय हाथ खड्ग बिराजे गले फलों की माला खानि बिजाने गोरखनाथ जाने मेरी गति को कहे न कोय हाथ पछानों मुख धोऊँ सुमिरो निरंजन कर देव हनुमन्त यती हमारी पति राखे मोहिनी दोहनी दोनों बहिनी आवी मोहिनी रावल चलै मुख बोले तो जीभ मोहूं आश मोहूं पास सब संसारे मोहूं निसरूं देह ललाट शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

दीपावली की रात्रि को सफेद तिलों का तेल निकलवाये। उस

तेल को ३१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। इस अभिमन्त्रित तेल का जो भी व्यक्ति तिलक करता है, वह सभी को मोहित कर लेता है।

नारी वशीकरण

"तेल तेल महा तेल
देखूं मोहनी माई तेरा खेल
राजा घर बकरी घर बलाय न की ककरी
गए अपने के मारी शम को प्यार
जै गुरु गोरखनाथ चढ़े तो चढ़े
जै उतारें तो उतर
नहीं मचावीं धुन्धुकार
राम लखन मोही सीता सौदानी
मोहें तख्त बैठी रानी
मोहे पीढ़े बैठी खतरानी
जब तक हमारा कार न करे
तुमको गुरु अपने ही आन फिरे
मन्त्र श्री महादेव का वाचा गुरु गोरखनाथ
का शब्द साँचा।"

इक्तालीस दिन तक प्रतिदिन १५ माला फेरे, सिद्धि होगी प्रेयसी का स्मरण भी करें। यह मन्त्र परीक्षा किया हुआ है।

कुश्ती जीतें

अगर कभी अखाड़े में उतरना हो या कुश्ती करनी हो और इसमें जीत पाने की आशा कम हो अथवा आशा ही न हो तब किसी

कौवे को मार करके उसकी चर्बी निकाल लें और उसे अपनी दोनों हथेलियों तथा दोनों पाँव के तलुओं में मल लें। इसके बाद अखाड़े में 'ओं गुरु गोरखनाथ नमः' कहते-कहते जायें तब अवश्य जीत होगी।

रक्षा हेतु

"आगे राखे राम जी, पीछे राखण हार।
बाम दाहिने राखिले, कर गृह करतार॥
जम डंक लागे नहीं विघन काल ते दूर।
राम रक्षा जन की करे, बाजे अनहद तूर॥
कलेजो राखे केसवो, जिभ्या कूं जगदीश।
आतम कूं अलख राखे, जीव को जोतिश॥
राख-राख सरनागति, जीव कू ऐके बार।
संतों की रक्षा करे, श्री शिव गोरख सत गुरु सृजनहार।"

इस मन्त्र को प्रतिदिन २१ बार पाठ करने से रक्षा होती है।

टोना टोटका दूर करने का मन्त्र

"ॐ नमो वज्र में कोठा, वज्र में ताला वज्र में वन्ध्या दस्तें-द्वारा तहां वज्र का लगया किवाड़, वज्र में चौखट वज्र में कील जहाँ सू आय तहाँ की जाय, जाने भेजा जाकू खाय, हम कू फेर न सूरत दिखाय। इसके बाल-बाल रूप-रूप को जो जोखो पहुँचावे तो श्री गोरखनाथ की आज्ञा फुरै। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

इस मन्त्र को इक्कीस दिन तक प्रतिदिन १०८ जप करके सिद्ध करे।

सात कुओं का जल लाकर उसको इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर रोगी को स्नान करा दे तो टोने टोटके का प्रभाव दूर हो जायें।

भूत-प्रेत बाधा निवारक मन्त्र

"ओं नमो आदेश गुरु का। सोचा कंठ कंचा, दुहाई हनुमान वीर की जाने लंका जारी, पलका मंझारी आन लक्ष्मण वीर की, आने माने जाके तीर की, दुहाई मैमना पीर की, बादशाह जादा काम में रहे आमादा, दुहाई कालिका माई की, धैलाँ गिरिवार चढ़े, सिंह की सवारी जाके लाँगुर है अगारी, प्याली पीवे रक्त की, चंडिका भवानी, वेदबानी में बखानी, भूत नाचे बैताल लज्जा रखे, अपने भक्त की काली महरकाली आरी कलकत्ते वारी, हाथ कंगन की थारी, लिये ठाड़ी, भक्त बालिका दुष्ट न प्रहारी सदा सन्तन हितकारी कतर भूत राजा जल्दी, नहि भखै तोय कालिका माई की दुहाई करे, करै भक्तन की सहाई, आ तू सपने में माई, तेरी जाति रही जाग के, पकड़ के, छह मात कर मत अबार, तेरे हाथ में कृपाण भक्षण कर ले, जल्दी आय के जाय, नाही भूत पकड़ मारे जाय, भूत उतर-उतर-उतर तोय राम की दुहाई, गुरु गोरखनाथ का फंदा करेगा तोय अन्धा, फुरो-फुरो मन्त्र स्वाहा।"

इस मन्त्र को इक्कीस दिन तक प्रतिदिन १०८ जाप कर सिद्ध करे। इस मन्त्र को पढ़ते हुए ११ बार नीम की डाली से रोगी के सिर से पैर तक झाड़ो।

वशीकरण हेतु

इसको सिद्ध करने के लिए इसे किसी भी बृहस्पतिवार से

आरम्भ करे। एक शीशी में हिना का इतर लेकर नित्य एक माला का जप करना चाहिए। प्रत्येक मन्त्र के पश्चात उस शीशी पर फूँक मारते रहना चाहिए। ग्यारह दिन में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

''अलहम्दो गवानी वो मेरे पर हो दिवानी, जो नहीं दिवानी तो सय्यद कादर अब्दुल जीलानी चुट्टा पकड़कर करो दिवानी।''

यह इतर जो कोई सूँघेगा या जिसके कपड़ों पर लगा दिया जायेगा वह आकर्षित होगा।

शत्रु कष्ट कारण यन्त्र

७	१३	१९	२५	१
२०	२१	३	८	१३
३	९	१५	१६	२२
११	७	ईश्वर २३	३	१०
१४ अदाब	५ तफला	९	१२	१८

इस यन्त्र को मंगल के दिन जुहल की साइत में ताँबे की तख्ती पर खोदकर चूल्हे में दबा दें। इसके प्रभाव से शत्रु मुसीबत में फँस जाता है।

कैद से छुड़ाने का यन्त्र

७८६

या हाफिज	३३२	३३८	२२१०
या हाफिज ९९	३३२ ३३७	३३४ ३३०	२३६ ३३५
कैदी का नाम कैदी के पिता का नाम	या हाफिज	या हाफिज	या हाफिज

इस यन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर, रविवार के दिन कबूतर को पकड़कर, उसके गले में बाँध दें। फिर कबूतर को उड़ा दें। इस प्रयोग से कैद में पड़े हुए व्यक्ति को शीघ्र छुटकारा मिल जाता है।

सर्व कार्य सिद्धि हेतु

इस बीसा यन्त्र को पीपल के पत्ते पर रात के समय लिखते रहने से किसी दिन मुवक्कल हाजिर होकर साधक की मनोकामना पूरी करते हैं।

३	२	७	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

यन्त्र को लिखते समय बिस्मिल्लाह पढ़नी चाहिए, जो निम्न है—

''या जिब्राईल या दर दाईल या रफताईल या तन्काफील बहक्का या बुद्ह।''

सर्वकार्य हेतु

नीचे बनाये यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर यन्त्र के ऊपर 'बिस्मिल्लाह' लिखें। फिर एक बार बिस्मिल्लाह पढ़ें। फिर १००१ बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें—

''या अल्लाहो या रहमानो या रहीमो या हैयो या कैयूमो।''

१९८	२०२	२०५	१९१
२०४	१९२	१९७	२०३
१९३	२०७	२००	१९६
२०१	१९५	२९४	२०६

आयतुलकुर्सी यन्त्र

१०५४५	१०५४०	१०५४३
१०५४०	१०५२३	१०५४४
१०५५	१०५५१	१०५३५

यह यन्त्र लिखकर बीमार के गले में डाल दीजिए। यह उसको आराम देता है। यन्त्र बीमार को हिम्मत और शांति प्रदान करता है।

बीमार को राहत पहुँचाने के लिए यन्त्र

२	५	७
३	७	४
९	२	३

इस यन्त्र से बीमार आराम की नींद सो जाता है। उसका घबराना और छटपटाना समाप्त हो जाता है।

आफत से बचने के हेतु

जब पहली रात का चाँद देखें तो बाद '**अलहम्मद के दुआरा हिलाली**' को पढ़े। महीना भर हरेक आफत से महफूज रहेगा।

पानी बरसने के लिए

पानी बरसने के लिए चालीस बार अक्षर '**बे**' कागज पर या किसी तख्ती पर लिखें और दरख्त से लटकाये ताकि हवा उसको हिलाती रहे। भगवान ने चाहा तो पानी बरसेगा।

पानी बरसने से रोकना

अगर पानी बहुत बरसे और नुकसान हो तो ४१ बार हर्फ '**काफ**'

को कागज पर लिखे और पेड़ पर लटकाये पानी बरसना तुरन्त रुक जायेगा।

बाँधने का मन्त्र

साधक शुक्रवार की रात तीन बजे धूप, हिना का इत्र तथा फूल लेकर श्मशान में जाये और आसन पर बैठकर निम्न मन्त्र का जाप करे। जाप संख्या ग्यारह हजार है। ऐसा इक्तीस दिन तक करे।

अंतिम दिन जिन्न साधक के सामने आता है और उसके कार्यों को पूरा करता है। इस मन्त्र का प्रयोग मारण एवं उच्चाटन जैसे कार्यों के लिए भी किया जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—

''बिस्मिल्लाहिर्रमानिरहीम
लाइल्लालिल्लाह मुहम्मद रसूसलिल्ला
मुसलमानी अबादानी भरी न खाज
परी न छोड़ वे मुसलमान बहिस्त को जाये
हुआ ईद का रोज असल कर सैयद नहाया
बाजा तोप नगाड़ा बख्तर तोप मंगाय दिया
प्याले सहायता सब चल खाये
चौकी चौकी पै चौकी चली
अम्बर हुआ सेत संयदों से शरि हुई
तरवर तारा गढ़ के खेत
खिगाना घोड़ा नहीं मीना-सा मर्द नहीं
जिसने सरदार तारा गढ़ तोरा
अजय पाल सा देव नहीं जिसने चक्कर चलाया
मीरा पढ़ी नमाज वहाँ का वही ठहराया

आतिल कुर्सी बन्द कुरात घाटे बाढ़े तुमि समान
आकाश बाँध पाताल बाँध बाँधे नदी तलाब
देह बाँध धड़ को भी बाँधे कहा हुए जाये मरघटिया मसान
हहिया मसान जहिहिया मसान
मिर मिया मसान फलकिया समान
कालका ब्रह्मराक्षस की चुड़ैल
पृथ्वी को देवी देवताओं को बाँधकर वश में न करे
तो सुअर काट सुअर की बोटी दाँत तरे दबायेगा
सत्तर नाड़ी बहत्तर कोठा से बाँध बाँधकर लायेगा
तो चमार के छीले और धोबी की नाद में पड़े
चल तो मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा छु।''

मोहम्मदा पीर साधना

यह विश्वास किया जाता है कि मोहम्मदा पीर स्थानीय देवता है और कई स्थानों पर इसकी पूजा की जाती है। पीर का मन्त्र इस प्रकार है—

''मुहम्मदा पीर मुहम्मदा धीर
हाथ पैर की खोवे फीर-सूखी नदी बहावे नीर
नीला घोड़ा नीली जीन
ता पर चढ़े मुहम्मदा वीर
सवा सेर का तोसा खाय
अस्सी की खबर लगाय
जो कोई जीते मुझको घाट

उसको खाये मुहम्मद वीर।''

यह साधना घर रहकर भी हो सकती है। साधना का समय रात्रि का निश्चित है। अगर मुहम्मदा पीर को सामने लाकर उससे वचन लिए जाते हैं तो इस साधना को ४१ दिन तक करना होता है। प्रतिदिन तीन हजार मन्त्रों का जाप आवश्यक होता है।

साधक किसी स्थान में बैठकर अपने सामने धूप एवं तेल का दीपक जलाये और अंगारे रखे। फिर मन्त्र जाप करते हुए एक मन्त्र पर लोबान की एक आहुति दे। इस प्रकार इक्कीस आहुतियाँ दे। इस प्रकार यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जिन्न साधना

जिन्न को जिन्नात जैसे नामों से भी पुकारा गया है। इस्लामी अमलियात के अनुसार जिन्न एक शक्तिशाली प्रेत होता है। उसे वश में करके उससे बहुत से कार्य पूरे कराये जाते हैं। जिन्न को वश में करना सरल कार्य नहीं होता और बिरले लोग ही ऐसा कर पाते हैं। यहाँ मैं जिन्न के विषय में एक मन्त्र दे रहा हूँ। मन्त्र अनुभव सिद्ध है।

''माँ बादशाह सब बादशाहों के
सफेद घोड़ा सफेद पखार
तिल पर चढ़े जिन्नों के बादशाह
बारह कोस अगारे-बारह कोस पिछारे
जो कुछ काम की कहूं वह बजा लावे
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

सर्वप्रथम स्थान के विषय में सोच लें। जिन्न की साधना घर के

भीतर कभी न करे। कोई जीर्ण शीर्ण पुरानी मस्जिद-खंडहर ही चुनें।

समय है—मध्य रात्रि से पूर्व।

सामग्री—लोबान, धूप।

इस साधना में स्त्रियों से दूर रहे। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व सफेद वस्त्र धारण करें। फिर लकड़ी के कोयले जलायें तथा धूप जलायें।

इसके बाद एक हजार मन्त्रों का जाप करते हुए लोबान की धूनी दें। जाप के समय आँखें बन्द रखनी चाहिए।

कहा जाता है कि इस प्रकार निरन्तर ४१ दिन तक जाप करने से जिन्न सफेद घोड़े पर सवार होकर साधक के सामने आता है।

नेत्र बाधा निवारण मन्त्र

''ॐ अगाली गगाली अताल पवास गर्द मर्द अदार कार फट उत्कन हूठ।''

इतवार को नीम के पत्तों से झाड़ा दे तथा २१ बार मन्त्र जपो तो नेत्र की समस्त बाधा दूर हो जाएगी।

आधासीसी का मन्त्र

''बन में जाई बंदरी जो आधा फल खाई।
खड़े मुहम्मद हाँकवें आधासीसी जाई।''

ग्रहण के दिन इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। जिस रोगी के आधे सिर में दर्द होता हो, उसके सिर पर २१ बार यह मन्त्र पढ़कर फूँक माने से आधासीसी का दर्द दूर हो जाता है।

आँख की फूली का मन्त्र

"उत्तर कूल काछ सुन जोगी को बाछ इस्माईल जोगी के दो बेटी एक पाए चूहा एक काटे फलो का काछ फुली का काछ, फुलो का काछ।"

इस मन्त्र को ग्रहण के समय ११००० की संख्या में जपकर सिद्ध कर लें, फिर छुरी से पृथ्वी पर ३१ बार काटने के चिह्न बनाए, ऐसा ३ दिनों तक करते रहने से आँख की फुली समाप्त हो जाती है।

ठण्ड दूर करने का मन्त्र

"ॐ नमो कामरू देस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी इस्माईल जोगी के तीन पुत्री एक तोड़े एक निछोड़े एक तो तिजारी तोड़े।"

रोगी को खड़ा करके जहाँ ठण्ड लगती हो उस स्थान को हाथ से पकड़कर ३१ बार मन्त्र को पढ़कर फूँक मारने से ठण्ड का रोग दूर हो जाता है।

बवासीर का मन्त्र

"ईसा ईसा ईसा काँच कपूर के सीसा, यह अधर जाने नहीं काय, खूनी बाद एक न होय, दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।"

इस मन्त्र को ५१ बार पढ़कर पानी को अभिमन्त्रित करें और उसी पानी से आबदस्त लें। तो कुछ ही दिनों में बवासीर दूर हो जाती है।

बवासीर का मन्त्र

"खुरासान की टीना साई, खूनी बादी दोनों जाँई।"

उक्त मन्त्र से पानी को ३१ बार अभिमन्त्रित कर, उस अभिमन्त्रित पानी द्वारा आबदस्त लें। प्रतिदिन ऐसा करते रहने से खूनी-बादी बवासीर दूर हो जाती है।

अन्न पचाने का मन्त्र

"अन्न हाथ वज्र हाथ भस्म करे सब पेट का भात, दुहाई हजरत शाह कुतुब आलम की।"

इस मन्त्र को हाथ पर ३१ बार पढ़कर उसे पेट पर फेरे तो अन्न शीघ्र पच जाता है।

बाय का मन्त्र

"कामरू से कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी
इसमाइल जोगी के तीन पुत्र
एक तोड़े, एक पिछोड़े, एक करेखन वाय को तोड़े
शब्द साँचा पिंड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ा देने पर बाय में लाभ होता है।

शरीर रक्षा का मन्त्र

"छोटी मोटी मन्त्र बार को बार पार को पार बांधे मेरा घमासाण बांधे जादू वीर बाँधे टोना टंवर बाँधे दीठ मूठ बाँधे चोरी छार बाँधे चिड़िया और बाघ बाँधे लाइलाह का काँटे

इल्लिल्लाह की खाई मुहम्मद रसूल्लिाह की चौकी हजरत अली की दुहाई।''

साधना के समय इस मन्त्र को ३१ बार पढ़कर अपने दोनों पाँवों पर हाथ मारे तथा घेरा बाँध दे तो किसी प्रकार का भय नहीं होता एवं शरीर की रक्षा होती है।

शरीर रक्षा के मन्त्र

मन्त्र तन्त्र साधना को करने से पूर्व अगर शरीर रक्षा मन्त्र का जाप कर लिया जाये तो फिर कोई किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकता है।

''ॐ सीस राखै साइयां, श्रवण सिरजन हार।
नैन राखै नरहरि, नासा अपरग पार।
मुख रखा माधवे, कण्ठ रखा करतार।
हृदै हरि रक्षा करे, नाभि त्रिभुवन सार।
जंघा रखा जगदीश, करे पिण्डी पालन हार।
गिर रखा गोविन्द की, पगतली परम उदार।
दोऊ भाई ज्वर सुना महावीर नाम।
दिन राति कटि मरे महादेव के ठाम।
फूर छुदसे छत्तीस रूप मुहूर्तमों धराय।
नाराज नामूक के घर दुआर फिराय।
ज्वाला ज्वरपाला ज्वरकाला ज्वरविशा की।
दोह ज्वर उभा ज्वर भूमा ज्वर झूमकि।
घोड़ा ज्वर भूता तिजारी ओ चौथाई।
सबन को भंग घोटन शिव ने बुझाई।

यह ज्वर ज्वर सुरा तू कौन और तकाव।
शीघ्र अमुक अंग छोड़ तुम जाव।
यदि अंगन में तू भूलि भटकाय।
तो गुरु गोरखनाथ के लागा तू खाय।
आदेश कामरू कामाक्षा माई।
आदेश हाड़ि दासी चंडी की दोहाई।"

रोगी का मुख उत्तर की ओर करके ३१ बार मन्त्र का उच्चारण करके रोगी को झाड़ें। हर प्रकार के ज्वर की निवृत्ति होती है।

कण्ठबेल का मन्त्र

"ॐ नमो कण्ठबेल तू द्रुम द्रुमारी। सिर पर जकड़ी वज्र की ालो। गोरखनाथ गाजता आया। बढ़ती बेलि को तुरन्त घटाया। ो कुछ बचो ताहि मुरझाया। घटि गई बेल बढ़ें नहिं पावे। बैठी ाहाँ उठन नहिं पावे पके फटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की ुहाई फिरै। शब्द साँचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

इस मन्त्र को ३१ दिन तक प्रतिदिन ११०८ मन्त्र जप धूप दीप वेद्य सहित एकाग्र मन व श्रद्धा भाव से करें। इस मन्त्र का ३१ बार च्चारण करते हुए रोगी को मोर पंख से झाड़ना चाहिए।

समस्त शरीर में पीड़ा होने पर

"उस पार से आती बुढ़िया छुतारी तिसके काँधें पै सरके ारी वह पेटारी कौन-कौन शर बाण सु-शर, कु-पारा शर ान। अमुक के अंक को व्यथा तन पीर। लवटि गिरे उसके लेजे तीर आज्ञा पिता ईश्वर महादेव की दुहाई फुरो मन्त्र

गोरखनाथ वाचा।''

'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम लेकर अनामिका अंगुली से नमक को ३१ बार अभिमंत्रित करके फूँक मारें और रोगी को खिलावें तो दर्द शान्त हो जाएगा।

कटोरी चलाने का मन्त्र

''ॐ नमो, सत्तर सौ पीर, चौसठ सौ योगिनी, बावन सौ बहत्तर भैरव, तेरह सौ तन्त्र, चौदह सौ मन्त्र, अठारह सौ पर्वत, नौ सौ नदी, निन्यानवें सौ नाला, हनुमान यति गोरखनाथ रखवाला, काँसे की कटोरी अंगुल साठ चौड़ी कहो वीर कहाँ ते चलाई गिरनार पर्वत से चलाई १८ भार वनस्पति चले लोना चमारी को वाचा फुरो कानो कुम्हारी चाक ज्यों फिरे कहाँ-कहाँ जाय चोर के चाय चांडाल के ले आये गड़ो धन बताय चाल चालरे हनुमन्त वीर जहाँ चले तहां रहे न चले तो गंगा यमुना उलटी बहे।''

प्रतिदिन ११०८ बार पढ़ें तो सिद्ध गो। कांसे की कटोरी का दीपावली की रात्रि को पूजन कर चौक में स्थापन कर मन्त्र पढ़ें तो कटोरी चले। जहाँ चोरी का माल गड़ा होगा कटोरी वहाँ चली जायेगी।

सर्प भय से रक्षा के हेतु

''गोरख चले परदेश कुत्तक मन में भावे बांध बाँधू बधाइन बांध आंध के सातो बच्चा बाँधू सोंपा चोरा बाँधू दांत बंधाऊ बाट बांधि दऊ दुहाई गुरु गोरखनाथ की।''

प्रयोग से पूर्व इसकी सिद्धि आवश्यक है जो १०८ मन्त्र के जप से मंगलवार को होती है। फिर मार्ग में जहाँ भी सर्प या व्याघ्र मिले,

उपरोक्त मन्त्र का ७ बार उच्चारण करके फूँक मारें। हिंसक पशु अपना मार्ग बदल देंगे।

वशीकरण मन्त्र

"ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ का जल बाँधू शहर बाँधू अग्नि बाँधू बार-बार बाँधू शिव पुत्र प्रचंड बाँधू राजा काई करनी आसन छोड़ मुझे वैपण देसी आसनों चन्द उलाट टीको काढ़ि सिंह वर्ण कहाउ और करूँ सेई चलात मैं बन्धवान गौरा पार्वती संध्या गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

धूप दीप नैवेद्य लेकर ध्यान करे शनिवार को ३१ दिन ११२ बार जप करे, मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। पश्चात कुम्कुम चन्दन गोरोचन मिलाकर गौ के दूध में पीस माथे पर तिलक करें तो वश में होगा।

ततैया के काटने पर

"आन ततैया मान ततैया कोदन की दुहाई ततैया हनुमान ने कही मेरी आन मेरे गुरु ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।"

लोहे की कील से ३१ बार झाड़ा देवें तो ठीक होय।

सर्प विष हरण मन्त्र

"धर पकड़ धसनि धसनि सार, ऊपर धसनि विष नीचे जाय, काहे विष तू इतना रिसाय, क्रोध तो तोर होय पानी हमारे थप्पर तोर नहीं ठिकाना आज्ञा मनसा माई ही दुहाई मारूँ हाँक गुरु गोरखनाथ की हाँक ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।"

उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए, एक थप्पड़ मारे तो सर्प काटे व्यक्ति के

विष की शान्ति हो जाती है।

विष शमन मन्त्र

"ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ को।
केला अफूली गाछ खाली झूर-झूर झुकाय।
देवी की ज्योति से विष डंक मुँहे दिखलाय।
तू कहाँ रे विष माया मनसा की दुहाई।
शिव की आज्ञ हम कही जे गाई।
कि कंपन से करे विष शीघ्र नीचूं आय।
शिव भोला बुलावें और मनसा माय।
आदेश विष हरि राई।"

यह मन्त्र २१ बार पढ़के डंक के स्थान में फूँके तो विष शान्त हो जाता है।

दाढ़ दर्द निवारक मन्त्र

"ॐ नमो आदेश गुरु को। नौलख ओढ़े कामरी जहाँ बैठा गोपाल जमुना गंगा सरस्वती तहाँ ग्वाल अरु बाल, आये गोरख जति जी गौतम ऋषि के पास, डाढ़ दाँत के दर्द को आवत होय विनाश आधो दियो धेनु को आधो संतन माही रोग दोष सबही तरै श्री हनुमन्त सहाहि मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

इस मन्त्र को २१ दिन तक एक सौ आठ बार प्रतिदिन जप रके सिद्ध करें। डाढ़ दर्द रोगी को सामने बिठाकर एक चाकू से जमीन पर आड़ी तिरछी रेखायें खींचते जाये व मन्त्र बोलते जायें। यह मंगलवार

या रविवार से शुरू कर ७ दिन तक करे, प्रतिदिन २१ बार झाड़े। ७ दिनों में दन्त पीड़ा दूर हो जायेगी।

भंडार वृद्धि कारक मन्त्र

"ॐ नमो अन्नपूर्णा अन्नपूरे, घृत पूरे गणेश, जो पाती पूरे ब्रह्मा विष्णु महेश। तीनों देवतन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

इस मन्त्र का चालीस दिन तक प्रतिदिन १०८ जाप करे सिद्ध करे। फिर भोज समारोह का जो भी सामान बना हो वे सब खाद्य वस्तुएँ एक स्थान पर भंडारगृह में थोड़ी सी अछूती निकालकर सुरक्षित रखे। तथा माता अन्नपूर्णा व भगवान गोरखनाथ को भोग लगाकर उस सामग्री में से सभी थोड़ी-थोड़ी वस्तुएँ, लोटा, डोरी यह सब लेकर कुएँ पर जायें। मन्त्र को बराबर पढ़ता रहे। पूर्व दिशा की ओर मुँह करके थोड़ी सामग्री कुएँ में अर्पित कर दें। फिर लोटे को डोरी के सहारे कुएँ में पहुँचाकर एक हाथ से ही एक लोटा पानी भरकर बाहर निकालें, डोरी को खोलकर लोटे की सामग्री को लेकर घर लौट आये। अब लोटे को भण्डार घर में रख दें व बची थोड़ी सी सामग्री भोज प्रारम्भ होने से पूर्व की जानेवाले पूजन में चढ़ा कर अपना पारम्परिक कृत्य पूरा कर अखण्ड दीपक जलावें फिर इस मन्त्र का १०८ जप करें।

इसके बाद लोगों को भोजन करायें। इस प्रयोग से भंडार घर में कोई कमी नहीं होगी।



अंत में···

वैसे तो यह सम्पूर्ण मुस्लिम तन्त्र रहस्यों और चमत्कारों से ओत-प्रोत है, अलौकिकता से भरा है। स्वयं विज्ञान भी तन्त्र की शक्ति को देखकर चकित है। वास्तव में इस आश्चर्य भरे संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य मन्त्र है। अपने उद्भव और विकास से लेकर अब तक मनुष्य निरन्तर संघर्षरत है। एक ओर जहाँ वह मन्त्र शक्ति के रहस्यों का उद्घाटन करने में प्रयत्नशील है, वहीं वह दूसरी ओर अपनी शक्तियों के रहस्यों को समझने में प्रयत्नशील है। मनुष्य ईश्वर के रहस्य और स्वरूप को भी समझने के लिए प्राणपन से जुटा है। यह सम्भव नहीं है कि मनुष्य चमत्कारी स्थितियों का रहस्य भेद एक ही समय में जानकर आत्मसात कर ले। हर्मन वेल के शब्दों में—हमें विज्ञान के आगे के विकास की प्रतीक्षा करनी होगी प्राणपन से जुटा रहना होगा, सम्भवत: हजारों वर्ष तक, तब जाकर हम द्रव्य, जीव तथा आत्मा के जटिल ताने-बाने का एक चित्र प्रस्तुत कर सकेंगे और मानव अपनी इस महान उपलब्धि को तथा साहसपूर्ण कार्य को किस प्रकार झेल सकेगा, इस विषय में अभी से कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। सम्भवत: जीवात्मा और परमात्मा के मध्य स्थापित परस्पर पूरकता की आस्था ही इसका आधार बन सकेगी।

स्वयं विज्ञान, दर्शन और संसार के समस्त धर्मों में तन्त्र की

शक्ति के बारे में मान्यता अलग है। सारांश यह कि सभी धर्म तन्त्र विज्ञान की शक्ति का समर्थन करते हैं। हमारी विकास गति को निरन्तर गतिशील बनाये रखने से तन्त्र-मन्त्र की एक मात्र शक्ति और स्रोत है। शरीर तो केवल साधन मात्र है। रूसी वैज्ञानिक इलैक्ट्रोनिक विशेषज्ञ सेमयोन किलियान और उनकी पत्नी वेलेन्टीना ने मिलकर एक ऐसे कैमरे का निर्माण किया है जिसके द्वारा मनुष्य के रहस्यमय शरीर के भीतर आत्मा का चित्र खींचा जा सकता है।

मानव शरीर के चारों ओर व्याप्त आभा मण्डल की कल्पना सदियों पुरानी है। लेकिन यह कल्पना न होकर वास्तविकता है। यूनान, रोम, मिश्र और भारत में बने प्राचीन चित्रों से लेकर आधुनिक चित्रों तक देवी देवताओं सूफी संतों के चित्रों में आज भी आभा मण्डल की साकार कल्पना को मुख मंडल के चारों ओर ज्योर्तिमय आभा मण्डल के रूप में आज भी देखा जा सकता है। यह कल्पना नहीं है बल्कि अदृश्य सत्य का साक्ष्य है।

आभा मण्डल की रहस्यमय स्थिति को वैज्ञानिक दृष्टि से भली-भाँति समझने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधानों का क्रम जारी है।

आभा मंडल की उपस्थिति के प्रश्न को लेकर संसार के अनेकों देशों के परा वैज्ञानिकों ने भी शोध और अनुसंधान किये हैं। यह आभा मण्डल सतत साधना और तपस्या से विकसित होता है। साधना, उपासना की अनेक विधियाँ अब धर्मों में वर्णित हैं। 'मुस्लिम तन्त्र' नामक इस पुस्तक में मैंने रूहानी उन्नति की साधना के साथ-साथ दैनिक जीवन में उपयोगी मन्त्र भी बतलाये हैं।

वास्तव में इन्द्रियों की शक्ति की सीमा है जिसका वे अतिक्रमण नहीं कर सकती हैं परन्तु अतीन्द्रिय शक्ति की कोई सीमा नहीं है।

इसके विस्तार की सम्भावनाएँ असीम हैं। तन्त्र साधना अतीन्द्रिय शक्ति के विस्तार का सबसे सशक्त एवं बड़ा साधन है। संत-सूफी इसी अतीन्द्रिय शक्ति के द्वारा आकाश-गमन और अदृश्य होने के चमत्कार करते थे। इन चमत्कारों को दिखा सकने की शक्ति केवल भारतीय योगियों में ही नहीं बल्कि मुस्लिम सूफियों में भी है। परकाया प्रवेश का चमत्कार योग साधना के माध्यम से प्राप्त इस विद्या के चरम अतीन्द्रिय उत्कर्ष का रूप है। अतीन्द्रिय शक्ति के द्वारा सभी प्रकार के मनचाहे कार्य सम्भव हैं। इनके लिए कोई बाधा या सीमा नहीं है।

मनुष्य का सूक्ष्म शरीर कभी-कभी कोई चमत्कारी कार्य कर गुजरता है। जिनका तर्क और सम्भावना से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

प्रिय पाठकों! सिद्धि तो कठिन साधना से ही प्राप्त होती है। यह कोई जादू टोना नहीं हैं। केवल तप द्वारा अर्जित स्थिति है।

विश्व के बड़े धर्म—हिन्दू, ईसाई और इस्लाम धर्म तन्त्र-मन्त्र को समान रूप से मानते हैं इन धर्मों के लोग अपनी आस्था व्यक्त करते हैं ऐसा होने का कारण है तन्त्र-मन्त्र की अधिकाधिक मान्यता देनेवाली घटनाओं का घटित होना। इस्लाम धर्म में सूफी सम्प्रदाय की शाखा के अनुयायी तन्त्र-मन्त्र को पूर्ण मान्यता देते हैं।

यह सत्य है कि पराविज्ञान मानव जाति की सेवा में प्राणपन से जुटा हुआ है। समस्त प्रकार के अतीन्द्रिय बोध, परा मानसिक शक्तियाँ एवं दैवी शक्तियाँ आज इस विषय के अध्ययन और विश्लेषण का अंग बन चुके हैं। परा विज्ञान के समस्त परीक्षणों की वैज्ञानिक समीक्षा कर वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पराविज्ञान के आधीन इस प्रकार के समस्त विषयों का वैज्ञानिक परीक्षण तथा

विश्लेषण किया जा सकता है। दूर सन्देश सम्प्रेषण, दूर बोध, आत्माओं का रहस्य, आत्माओं का आह्वान, प्रेतों से सम्पर्क और वार्तालाप इत्यादि समस्त विषयों का अब व्यापक वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा सकता है।

अन्त में मुझे केवल इतना ही कहना है—'मुस्लिम तन्त्र' पुस्तक आपके हाथ में है। इसे आप ध्यान पूर्वक पढ़ें, कुछ शब्द अपरिचित से अनुभव होंगे, क्लिष्ट भी लगेंगे, घबरायें नहीं, कई बार पढ़ें, उच्चारण करें, बोलने की असुविधा धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगी। एक मन्त्र को कई बार पढ़ें ताकि आपका उच्चारण शुद्ध हो सके। इसके बाद प्रयोग करना शुरू करें।

एक बात और है वैदिक मन्त्रों एवं कुछ तांत्रिक मन्त्रों की तरह मुस्लिम मन्त्रों के उत्कीलन की कोई आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि यह शापित अथवा कीलित नहीं है। किसी प्रकार की असुविधा अथवा जिज्ञासा होने पर तुरन्त पत्र लिखें। विश्वास रखें उत्तर अवश्य प्राप्त होगा।

धन्यवाद

—तांत्रिक बहल



सुगम तान्त्रिक क्रियायें

लेखक : **तान्त्रिक बहल**

दुकानदारी के तन्त्र-मन्त्र से साधारण जनता का विश्वास उठ गया है और प्रबुद्ध वर्ग भी इससे कतराने लगा है। यह सब कुछ पाखण्ड की श्रेणी में इसलिए आ गया है कि लोग आधी-अधूरी जानकारी, आधी सामग्री तथा बिना श्रद्धा और विश्वास के अपवित्रता से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना चाहते हैं। वास्तविकता तो यह है कि मंत्र-तंत्र का सही रूप ही पाठकों के सम्मुख नहीं रखा जा रहा है।

लेकिन प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठों में जीवन के प्रत्येक पहलू को तान्त्रिक क्रियाओं के अन्तर्गत देखा समझा गया है और प्रत्येक कार्य सुगमता से सम्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रयोग पूर्ण विधि-विधान से करने पर सफल होते हैं।

पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ

लेखक : **तान्त्रिक बहल**

भूत-प्रेत का अस्तित्व, विवाद और व्यापक चर्चा का विषय है। यह न केवल मनोवैज्ञानिक रूप से होते हैं वरन् अनेकों घटनायें इनके अस्तित्व का प्रमाण हैं। इनका एक आकार (स्वरूप) भी होता है जिनसे सम्पर्क का विधान पराविज्ञान में प्रचुरता से पाया जाता है। इनके उत्पातों को शान्त कर, इनको वशीभूत करके भरपूर लाभ भी उठाया जा सकता है और ये मानसिक साधना द्वारा होता है जिसकी साधना और सिद्धियों के उपाय इस पुस्तक में दिए गए हैं।

पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें?

लेखक : तान्त्रिक बहल

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र विज्ञान अलौकिक शक्तियों का स्वामी है। तन्त्र विज्ञान में वह शक्तियाँ छिपी हैं, जिन से आप हजारों मील की घटनाओं को स्पष्ट देख सकते हैं, किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं, धरती के भीतर दबे हुए धन का पता लगा सकते हैं, उसे साधना द्वारा प्राप्त कर सकते हैं, आत्माओं को बुलाकर उनसे बातचीत कर सकते हैं? तन्त्र द्वारा आप अपने परिजन की आत्मा को बुलाकर उनसे दबाए हुए धन के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उपरोक्त सभी बातों का वैज्ञानिक विवेचन इस पुस्तक में किया गया है और यह भी बतलाया गया है कि थोड़ी-सी साधना से आप किस प्रकार इच्छित वस्तु प्राप्त कर सकते हैं? इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में ऐसी अलौकिक, गोपनीय और अद्‌भुत साधनाओं का वर्णन है, जिन्हें पढ़कर आप चकित रह जायेंगे।

तन्त्र-मन्त्र द्वारा रोग निवारण

लेखक : तान्त्रिक बहल

जिस प्रकार एलोपेथिक, यूनानी, प्राकृतिक होम्योपेथिक इत्यादि पद्धतियाँ हैं उसी प्रकार मंत्रोच्चारण, स्वरविज्ञान और कुछ विशिष्ट आकृतियों के आधार पर भी रोग निवारण की व्यवस्था है। इस विधि के भी अपने सिद्धान्त हैं जिनका उचित प्रयोग करके विभिन्न रोगों से पीड़ित व्यक्ति इस विद्या से लाभ उठा सकता है।

सुप्रसिद्ध तांत्रिक बहल ने इस प्रकार के साहित्य का अध्ययन करके और तरह-तरह के मनस्वियों से भेंट करके जो सामग्री कड़ी मेहनत से एकत्र की वह उन्होंने 'तन्त्र सबके लिए' लक्ष्य के अन्तर्गत बड़े पावन हृदय से प्रस्तुत की है।

नाग और नागमणि

लेखक : तान्त्रिक बहल

भारतीय धर्म के अनुसार यह पृथ्वी शेषनाग (सर्प की एक विशेष जाति) पर ही टिकी है। सृष्टि के पालक भगवान् विष्णु सर्प शैय्या पर क्षीर सागर में सोते हैं। सर्प को भगवान् शिव का प्रिय आभूषण माना गया है। सर्प एक देवता के रूप में हमारे धर्म में स्थापित है। नाग पंचमी के रूप में सर्प पूजा का एक उत्सव भी मनाया जाता है। संसार के लगभग सभी धर्मों में सर्प का उल्लेख है। भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक भगवान् महाकालेश्वर का मन्दिर भी है। इस ज्योतिर्लिंग के शीर्ष पर नाग चन्द्रेश्वर का मन्दिर भी है, जो वर्ष में केवल एक दिन खुलता है।

सर्पों की दुनिया चमत्कार से पूर्ण है। तन्त्र में भी इनका एक विशिष्ट स्थान है। सर्पों की रहस्यमय दुनिया पर आज के जाने माने व्यावहारिक तांत्रिक एवं सिद्ध हस्त लेखक तांत्रिक बहल की एक सारगर्भित रचना जो आप सबके लिये है।

वनस्पति तन्त्र

लेखक : तान्त्रिक बहल

वनस्पतियाँ जीवनदायिनी हैं, यदि वनस्पतियाँ न हों तो जीवन भी न होगा। अब यह प्रमाणित है कि वन, पहाड़, नदियाँ, जड़ी-बूटियाँ सब पर्यावरण में समानान्तर सन्तुलन बनाए रखती हैं। प्राणों को सतत सुख प्रदान करने वाली इन वनस्पतियों में कुछ चमत्कारी विचित्र शक्तियाँ भी हैं। **वनस्पति तन्त्र** में इनकी ऊर्जा, उपयोगिता और अद्‌भुत शक्तियों का प्रयोग करके लाभ उठाने के उपाय बतलाए गए हैं।

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ

लेखक : तान्त्रिक बहल

तन्त्र क्षेत्र में की जा रही व्यापक खोजों से हम आश्चर्यचकित अवश्य हो जाते हैं लेकिन वह अभूतपूर्व नहीं हैं। ज्योतिषीय और विज्ञान के ज्ञान से आकाश को नापा जाता है तो पदार्थ व तत्त्व की सूक्ष्म अवस्था और प्रकृति के अध्यात्म ने, तन्त्र ने अन्तश्चेतना को जगाकर, साधनाएँ करके अनेकों उपलब्धियाँ पाईं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में लुप्त हो चुकी कुछ ऐसी ही शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाली साधनाएँ खोजकर लाये हैं जाने-माने 'तान्त्रिक बहल'।

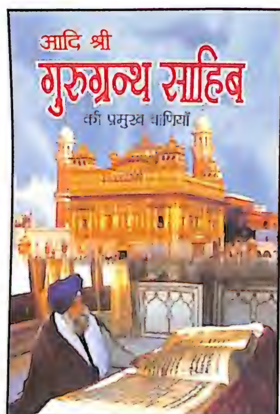
आप इस पुस्तक में एकत्रित सामग्री को और लेखक के अनुभव को पढ़कर समझ सकेंगे कि उन्होंने इस विषय में कितने गहरे पैठकर यह सब कुछ पाया है और कितनी लगन से संजोकर आपके लिए प्रस्तुत किया है।

चमत्कारी मन्त्र साधना

लेखक : तान्त्रिक बहल

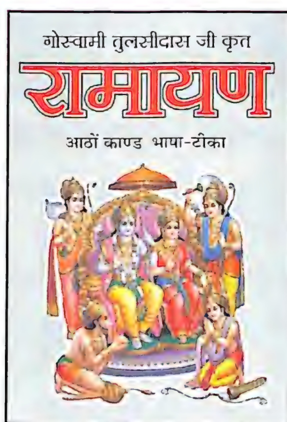
मन्त्रों का अपना एक अलग विज्ञान है, जिसके सम्पूर्ण रहस्यों को समझ पाना सरल नहीं है। तान्त्रिक बहल ने अपने एक विशेष अनुभव कि मन्त्र न केवल ध्वनि विज्ञान है वरन् उच्चारण के समय होने वाली शारीरिक क्रियाओं से जो लघु व्यायाम होता है, वह भी एक अलौकिक क्रिया है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस पुस्तक की रचना की है। इसके अतिरिक्त अन्य कई चमत्कारी साधनायें भी इस पुस्तक में दी गई हैं। कौआ तन्त्र, मन्त्र तथा उलूक तन्त्र-मन्त्र इस संस्करण की एक विशेष उपलब्धि है।

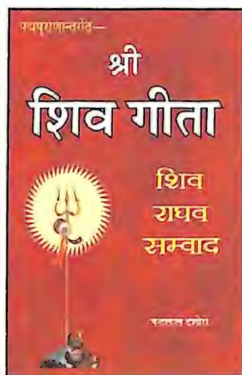
धार्मिक ग्रन्थ और नयी पुस्तकें

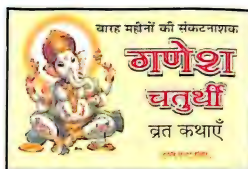






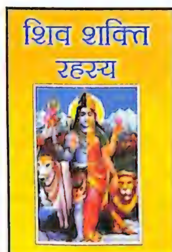




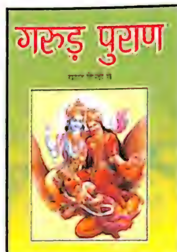


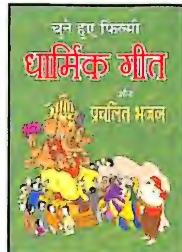












रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकों का अनूठा संग्रह

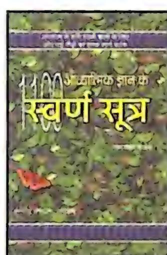




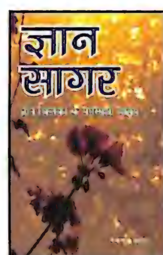


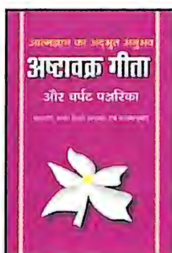




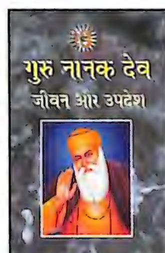


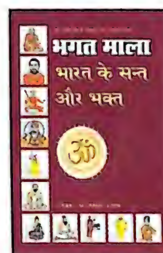




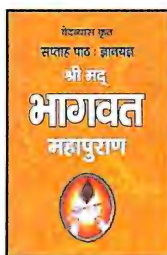


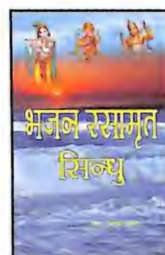








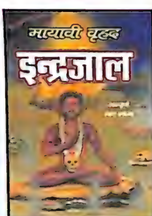






मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र व रत्न सम्बन्धी पुस्तकें





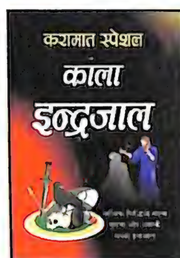






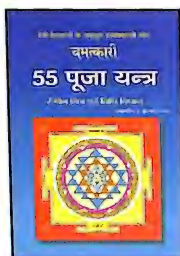








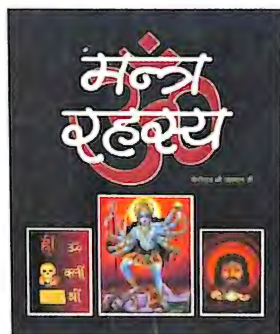












रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन